



# शरत्-साहित्य

शुभदा



धनुनादयर्ता—  
रूपनारायण पाण्डेय

सोछ एजेण्ट—

---

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड, मुम्बई

प्रकाशक—

नाथूराम मेनी, मेनेजिय डायरेक्टर  
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड,  
हीराबाग, बम्बई ४

पहली बार

दिसम्बर, १९५६

मूल्य डेढ़ रुपया

मुद्रक—

रघुनाथ बिपाजी बेसार्,ि,  
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,  
६, के.के.बाड़ी, गिरगाँव, बम्बई ४

## निवेदन

'शुमदा' शब्दशास्त्रका प्राथमिक उपन्नास है। यह लिखा तो गया था सन् १८९८ में, परन्तु प्रकाशित हुआ सन् १९३८ के दशक में, कोई ४० वर्ष बाद, जब कि उनका स्वर्गवास हो चुका था। स्वयं उनके हाथकी लिखी हुई प्रतिके मुद्रणके संकेतोंके अनुसार २० दशकसे लेकर २६ सितम्बर सन् १८९८ तकके बीचमें इतनी रचना हुई थी। उस समय उनकी अवस्था ५२ वर्षकी थी।

उस समय बासा, अमिमान, और ब्रह्मदेव नामके तीन उपन्नास और भी लिखे गये थे किन्तु अब तक कहीं पता नहीं लगा कि वे उनके मित्रोंने कहीं लो दिये। 'पापाज' नामकी एक कहानी भी उनका मामा सुरेन्द्रनाथ पाण्डेयने लो है।

भी नरेन्द्रदेव लिखित धीकरीके अनुसार बोसा, काशीनाथ, अशुभनाथ, येम, ठकि, बड़ी बहिन, चन्द्रनाथ, हरिचरण, देवदास और वास्यस्मृतिके बाद शुमदाका लिखना शुरू किया गया था।

शब्दशास्त्रके पाठकोंने उक्त सब रचनायें पढ़ी हैं। उनका बादकी लिखी हुई होनेके कारण यह नहीं कहा जा सकता कि 'शुमदा' निम्नलिखित

● शुमदाके पहले संस्करणमें उक्तके प्रकाशकोंने उक्त मुद्रणका दोष प्रकाशित किया है, जिसमें वे तारीखें दी हुई हैं।

कच्चे हाथोंसे रचना है और उठमें शब्द-काम्यकी विशेषता नहीं है। फिर भी जान पड़ता है कि अपने मन्व नाटी-परिचोके समान वे हमदाके मन्व-कम्पना आदिके परिचोको अधिक समीप बनानेके लिए इसमें संशोधन-परिवर्तन करना चाहते थे और इसलिये उम्में इसे प्रकाशित नहीं होने दिया। परन्तु फिर समय नहीं मिल्य और दूरी नई नई रचनाओंमें जो खर्चके कारण यह काम न हो सका।

यद्यपि हमदाके लक्ष्यमें अब हमें और कुछ नहीं कहना है। यह पाठकोके हाथमें है। अनुवादके लक्ष्यमें इतना ही स्पष्ट है कि इसे वं-रूपनारायणजी पाण्डेयमें दिया है।

—प्रकाशक

# शुभदा

१

रीगाके भीतर गर्दन तक पानीमें लंबी कृष्णप्रिया महराजिनसे आँसू-कान मूँदकर तीन बुबकी आगनेक बाद पीतलकी कछ्ठीमें बक भरते-भरते कहा—  
भागमें जब आग लगाती है तब इसी तरह आती है।

पाटपर और मी तीन-चार औरतें नहा रही थीं, वे तब आश्चर्यसे महराजिनके मुँहकी ओर ताकने लगीं। जगन्नाथ और सदाका स्वभाषकी महराजिनसे साहस करके कोई बात पूछने या उसकी किसी बातको फाटने या उसका प्रतिवाद करनेकी हिम्मत कई स्त्री नहीं करती थी। और फिर उस समय जो किर्यो पाटपर थीं, वे तब महराजिनसे उन्नममें छोटी थीं।

महराजिनन फिर कहा—बही करती हूँ किन्दा, आदमीके भागमें जब आग लगाती है तब इसी तरह आती है।

जिस माय्कर्ताका स्वय करके यह बात कही गई, उसका नाम किन्ध्य बाकिमी है। किन्दी बड़े आदमीकी लक्ष्मी है, बड़े परकी बहू है। इस समय अस्से बापक पर आई है।

किन्दीने देखा, बात उसीसे कही गई है, इसलिये साहस पर मज्जा करके उठने हुआ—क्या है बुभाबी ?

महपत्निने कहा—इसी हाराक मुलर्जीकी बात बाद का गई। भगवान् जैसे उन लोगोंको पैर रलकर बुधा रहे हैं।

किष्किवासिनी समझी कि हाराक मुलर्जीके दुर्भाग्यकी बात हो रही है। वह भी मुनकर दुःखित हुई। अगमग एक महीना हुआ, हाराक मुलर्जीका पौष-ठः साहका अफका मर चुका है। उसी घटनाका ल्यास करके बिन्दोने कहा—भगवान् छीन लें तो उसमें मनुष्यका क्या बच ! फिर अम्म और मूयु कितक परमें नहीं होसे बुभाबी !

बिन्दोकी बातका मठम्म कृष्णप्रिया अफ्फी तरह समझ नहीं पाई। कुछ बेर बाद वह उठी—माह, महीना ल्या-महीना परके एक अफका अरर गुबर गया है, लेकिन वह बात नहीं है बिन्दो, वह बात नहीं है। मरना-जीना भगवान्के ही हाथमें है, वह वेर कहना ठीक है, मगर वह—शापर तुने कुछ मुना नहीं बेटी !

बिन्दो कुछ नहीं कह; केवल उनके मुँहकी ओर ताकती रही।

कृष्णप्रियाने फिर कहा—हाराक मुलर्जीके बारेमें तुने शाबर अभी कुछ नहीं मुना !

बिन्दो—उनके बारेमें और क्या सुननेकी बात हुई !

महपत्नि बोली—माह ! वही तो कह रही हूँ बेटी कि भगवान् अब मारते हैं, तब हरी तरह मारते हैं। किन्तु उर कम्मुरे मर्के सिध तो कह नहीं होता कब होता है उर लोनेकी प्रतिमा पड़की बात बाद करक, अमागिनेने इर बुकेके परसे पड़कर एक दिनके सिध भी मुन नहीं पाया।

बिन्दो महपत्निका मुँह बैस ताक रही थी, जैसे ही ताकती रही। उरकी समझमें कुछ नहीं आया। बिल मठम्मसे कृष्णप्रिया मूस बात टिपाय रलकर उपरके डाल-पसे पैना रही थी, वह मठम्म पूरा हा गया। पाटपर बिलनी मुननेबासी थी, उनमेंसे किसीक भी बिस्मय और कुतूहलकी सीमा नहीं रही। हर एक अपने मनमें यह ताकने लगी कि हाराक मुलर्जीकी ऐसी क्या बात हो सकती है जिसे वे नहीं जानती, और गौषक सभी लोग जानते हैं !

बहुत बेर उर ताक-बिचारकर बिन्दोने कहा—बुभाबी, वह बात क्या मैं मुन नहीं सकती !

महाराजिन—क्यों नहीं सुन सकती बेटी ! लेकिन वह तो कोई सुलकी बात नहीं—इसीसे कहनेको भी नहीं चाहता । जब समाज आता है, तभी कलेजा कटने लगता है । बाद, मगवान्ने ऐसी छीके माम्मे मी इतना कष्ट सिखा है ।

“ काहेका कष्ट हुआगी ! ”

“ कष्ट क्या एक तरहका है ! कितने तरहके कष्ट, कितनी तरहकी बिया ( ब्यथा ) हैं, जो तुम सोचोसे कहीं तक नहीं ! ”

“ तो मी कुछ सुनूँ न हुआगी ! ”

“ ना, अभी रहने दो । कुछ भी छिपा नहीं रहेगा, सभी सुन पायागी—और तुना मी है बेगोनि । कुछ परहे और कुछ पीछे—तुम मी सब सुन पायागी । ”

“ तुम्ही कहो न ! ”

“ ना ना, अब न कहूँगी । मैंने सोच लिया है कि अब किसीकी किसी ब तमें न रहूँगी । ”

बिन्देने हँसकर कहा—हुआगी, हम क्या तुम्हारी घेर हैं ! और फिर क्या तुमसे कुछ छूट बोझनको करती हैं !

“ पर कैसे कहूँ ! अभी जो गंगाजसके भीतर लड़ी होकर कह चुकी हूँ कि अब किसीकी किसी बातमें नहीं रहूँगी । ”

कसरप्रिया कृष्णप्रिया महाराजिनके पहले जानेपर सभी भीरतें एक-दूसरेका मुँह टाकती रह गईं । कोई कुछ नहीं समझा । विशेष बात यह थी कि किसीने आज तक महाराजिनका कमी कोई बात दबा बाते नहीं देना—परपंच उन्हें बहुत प्रिय था । स्नान समाप्त होनेपर सभी अपने अपने परको चप दी । बिंदो घर आकर गीम्ही पीती बरलकर अपनी माक पाठ गईं ।

माने कहा—बिंदा, इतनी देर तक पानीमें रहना ठीक नहीं । बीनार पक गईं तो फिर क्या होगा, तू ही बता !

‘ और क्या होगा, सा दिन भाग लूँगी । ’

बिंदाकी माले हँसकर कहा—बड़ी छीकी बात है, इतक तियर फिस्ता क्या है ।

“ मा, हासन मुलबकी यहाँ भीर क्या हुआ है ! ”



“और क्या होगा ?”

“आज पाठ्यरूप कृष्णा कुमाकी बातोंके संगसे मात्स्य कुमा कि उन लोगोंके वहाँ कोई भई दुर्घटना हुई है। तुमने कुछ नहीं सुना ?”

“नहीं। तुमाने क्या कहा ?”

“उन्होंने कहा कि हाथन मुसलमानीके परबालोंको मगवान् जैसे सिरपर पेर रखकर बुझाये दे रहे हैं। लेकिन उक्त कल्पसे मरनेके लिए तो कर नहीं होता, कष्ट होता है सोनेकी प्रतिमा बहूके लिए। इतना ही कहा, और कुछ नहीं बताया। कहती हैं, अब प्यारे परंपरमें नहीं पहुँचेंगी।”

“महापतिनको इतने दिन बाद कर्मका फल पैदा हुआ है।”

“मा, तुम क्या कल्पमुच कुछ नहीं जानती ?”

“नहीं।”

“तो आज मैं दोपहरको उनके घर जाऊँगी।”

“क्यों जायगी ? क्या दुर्घटना हुई है, यह जानने के लिए ?”

“हाँ—”

“तू क्या पागल हुई है ? जो बात उन्होंने नहीं कहनी चाही, वही बात पूछने तू जायगी ?”

“वह कौन ?”

माने कुछ इधर उधर करके कहा—पत्नी कृष्णा महापतिन।

“कृष्णा महापतिन क्या कोई आदर्श ही हैं कि वह जो नहीं करेगी, वह किसीको नहीं करना चाहिए ?”

“इन सब मामलोंमें तो वह एक तरहसे आदर्श ही हैं।”

‘या होगी, मगर मैं जाऊँगी।’

“प्यारों बातोंमें न पड़ोमी तो क्या कोई हर्ज है ?”

“अच्छा मा, एक आत्मी अगर डूब रहा हो तो यह कहकर कि ‘प्यारों बातों क्या मतलब, उस क्या बचाना न चाहिए ?’

“तू तो उन्हें बचाने नहीं जा रही है बिंदो ?”

“बिंदो डूब रहा है, यह मात्स्य ही तो अवश्य बचाने चाहेंगी।”

विन्दोकी मा कुछ बेर चुप रहकर बोली—विन्दो, तुम्हें उनके घर जानेकी जरूरत नहीं है। हारन मुलर्जी आदमी अच्छा नहीं है। तुम्हारे बापसे उठकी शत्रुता भी है। तुम्हारा क्या उन लोगोंके घर जाना देखनेमें अच्छा लगता है।

“हारन मुलर्जी अच्छे आदमी नहीं हैं, यह मैं जानती हूँ, लेकिन मैं तो उनके पास नहीं जा रही हूँ। उनकी बीके पास जानेमें क्या श्रेय है। मुझे निश्चय जान पड़ रहा है कि उनपर कोई मुसीबत आ पड़ी है। हम पास-पड़ोसक हाकर अगर इत समय उनकी ओरसे ऑल फरे रहें तो मेरी सकुलमें कोई मेरा मुँह नहीं देखेगा।”

“अपोरनाथ (विन्दोका पति) ने क्या यह कह दिया है कि तू माइस्के-मोइस्के यह देखती घूमे कि किसपर क्या मुसीबत पड़ी है, जो मुलर्जीके घरकी खबर न लेने पर यह तेरा मुँह न देखेगा। और मैं जा तेरी मा हाकर तुझे मना कर रही हूँ, यह क्या तेरे मुँहसे बा माननेके बोम्प नहीं है।”

“मा मुझे जाना ही होगा।”

“जाकर क्या सुनेगी। हारन मुलर्जीका क्या दुमा है, यह बात परका कोई आदमी नहीं जानता।”

“फिर तुमने कैसे जाना।”

“तेरे बापसे सुना है।”

“तो फिर बचामो, क्या बात है।”

“नन्दी बापूकी तरहीस्से रुपए खर्च कर डाले हैं, इसीसे उन्होंने हारनको पकड़ा दिया है।”

“नन्दी बापू कौन।”

“बागहनराहाक जमींदार। इन्दीकी कचहरीमें हारन मुलर्जी नोकर य।”

“कितना रुपये सुराब है।”

“छयभग दो सौ रुपए।”

“किसीने जमानत नहीं दी।”

“कौन देता क्या। गौबमें तुम्हारे बापूकीको ही सब जानते-मानते हैं और केवल बही जमानतदार हो सकते हैं, लेकिन उन्हें जो उत मासखर्चने

भयना शत्रु बना रखा है। उम्मे एक बार-उनसे जमानत देनेके लिए कहा भी पर उन्होंने मंजूर नहीं किया।

किन्दोने बहुत बेर तक चुप रहकर कुछ सोचा, फिर कहा—दोपहरको एक बार मैं उन लोगोंके वहाँ जाऊँगी। अबसे मार्द हैं, तबसे एक बार भी वहाँको देखने नहीं गई।

किन्दोकी भा विरिमत हुई और कुपित होकर बोली—यह तब जान-सुनकर भी बायगी !

किन्दोने जैसे सहज और स्वाभाविक भावसे यार्न बिसफर 'हाँ' कहा, उससे माता फिर कुछ कह नहीं सकी। कुछ बेर चुप रहकर किन्दोने फिर कहा—मरे उनके वहाँ जानेसे किसीकी कोई हानि नहीं है। मैं करती हूँ मा कि मर्दोंका झगड़ा औरतों तक न पहुँचना ही अच्छा है।

दिन लक्ष आया देखकर मा घरका काम करने उठ गई। आते समय बोली—बह सुनेगे तो बहुत लज्ज होगे।

“ मैं ऐसे जाऊँगी कि बह न सुन पावे। ”

“ निश्चय सुन पावेंगे। ”

“ तुम सुनाभोगी तभी सुनेगे। ”

“ लेकिन सुनकर बहुत माराज होगे। ”

किन्दोने अस्पष्टभास भावसे कहा—बाप-मा सन्तानपर लता होते हैं और फिर भूक भी आते हैं। इसके लिए तुम चिन्ता न करो मा।

## २

इस स्थानका नाम हम्पूरपुर है। यह गोंड ब्रित ब्रिटेनमें है, उसका नाम लेकर किंगीका भी क्लेश मही देना चाहता। कारण इस स्थानमें किंगीकी कमी जाना नहीं पड़ेगा। मर्दों देखने-सुनने अथवा कुछ भी मही है। मगर जो बहुत ही जाननेका कौतूहल हुआ तो मेरा सिखा विवरण पढ़कर ब्रिटेन समस्त सबके उतना समस्त है।

सुना है, इस गाँवमें पहले अनेक बनी बोन्य रहते थे और यह सम्भव भी है। कारण, एक छो यह गंगाघाट ऊपर बसा है; उठपर बहुत दिनोंके दो-चार पुराने टूट-फूटे शिव-मन्दिर बेल-बन और अंगसी साक्षियोंके बीच आब छिपे हुए मौनकृतपारी बोगीकी मूर्तिथी तरह दिखाई देते हैं। एकके पाठ्याले अपने पात्करके बीच उगे हुए कृष्णको धरते विचरते हुए दो-एक गाय-बछड़े भी बेल पड़ते हैं। यह सब देखकर यह अनुमान होता है कि इस गाँवकी यह दृशा हमेशा नहीं रही। किन्तु इस समय केवल दस-बीस पर ब्राह्मणों और कामरूपों हैं पचास साठ भोगके पिछानों और छोटी ब्राह्मणोंके हैं चारों ओर अंगस है और उसीके बीच कदाचित् दो-चार आदिमियोंके आने-जानेकी एक पगईकी है।

इसी गाँवमें हस्तानन्म्र मुन्वर्मीका घर है। पर दासस्था और पुरानी ईंटोंका बना है। ऊपरके तल्लेमें दो खीर मीथे चार-पाँच कोठरी हैं। चारों ओर बाँसका साड़, दो-चार फसोंके पीने, दो-एक बेछके बूझ और दो-तीन आमके पेड़ हैं। एक केकेका बूझ भी है। यही मुन्वोनाम्नाय महाशयका पुस्तैनी घर और पार्षिक सम्पत्ति है।

इसदुपुरसे एक मील दूर बागुनपाड़ा गाँव है। बहोफ अमीदार नन्दी बाबूकी अमीदारी कचहरीमें मुराबती नौकरी करते हैं। बीस रुपए मरीना कनलाह मिलती है। इसीसे उनकी गिरिस्ता मजेमें खलती थी। लेकिन अब उससे पूरा नहीं पड़ता—हमेशा तंगी, सदा अभाव बना रहता है।

उनके घरमें पोष्यबर्ग भी अनेक हैं। स्त्री है, दो बच्चे हैं, दो सड़कियों हैं, एक बिपवा बड़ी बहन है। अर्थात् बंगालियोंके घरमें साधारणता बैसा रहता है, बैसा ही उनके यहाँ भी है। अब वह मरीना पूरा होनेपर बीस रुपए साबर स्त्रीके हाथमें देते थे, अब उनका परिवारमें आठकल्पि तरह नित्य गरीबी, नित्य अभाव किलीने नहीं देर पाया, कम से-कम इतकी खबर किलीको नहीं हुए। स्त्री और बहन, दोनों मिलकर कामदेसे, मुन्वोनाम्नासे गिरिस्ताका एक सप्ता लेती थी। अब वह भी करती नहीं है और घरकी तंगी और अभाव भी कि तरह दूर नहीं होता। आज आया नहीं है, आज थाक-दास नहीं है, आ ईबन न हमेशे रसोई नहीं बन सधी। नित्य यह नहीं है, बर नहीं

घंटाटमें पककर मुलर्जानि एक बसत् उपाय निकाल्य; अर्थात् मासिककी तहबीलपर थोड़ा थोड़ा हाथ टाक करने लगे। बिस्वाली इतान बाबूपर पहले किसीने सन्देह तक नहीं किया। किन्तु वह उपाय अधिक दिनों तक नहीं चला। क्रमशः जमींदार बाबूको सन्देह होने लगा। सन्देह अब गहरा हो उठा, जब जमींदारने एक दिन लाठा, रोकड़-बही कौरह देखना चाहा। लष्ठा देखनेपर उसमें अनेक गम्पतिवौं, बहुत गोप्यमाक निकल्य। ठाब ही खोरी भी पकड़ी गई। इतान बाबू अबतक बहुत-से रूप उका चुके थे। जमींदार मगवान मन्थे दबाक और जमास्मा आदमी थे। उन्होंने इतान बाबूको हुकूमत पूछा—कितने रूप तुमने सुराये हैं ?

“ सो नहीं जानता । ”

“ जानते नहीं ? लाठा-पत्र देखनेसे जान पड़ता है तीन हजारसे ऊपर सुराये हैं। इतने रूपे क्या किये ? ”

‘ लर्च हो गये । ’

‘ लर्च ता हो गये, लेकिन तुमने खारी क्यों की ? ’

“ बीस रूपमें लर्च पूरा नहीं पकता, इसीसे खारी करनी पड़ी । ”

बीस रूपमें अबतक, इतन दिन, तुम्हारा काम चलता रहा; अब न चलनेका कोई कारण मेरी समझमें नहीं आता। तब वह चाहे जो हो, तुमने मुझसे यह क्यों नहीं कहा कि अब बीस रूपमें तुम्हारा निर्बाह नहीं रहता ? ”

“ करनेसे क्या आप मुझे अधिक तनएवाह देत ? ”

“ घायब दे देता लेकिन इसे जान बा। तुमन कितने रूपे सिपर है, उनमेंसे आबके ध्यामग रूप भी अगर तुम लौरा दो तो मैं तुमको छोड़ दे लकता हूँ ।

“ कित तरद हूँगा ? मेरे पास तो कुछ भी नहीं है । ”

‘ तुम्हारे कोई जमीन, बाग बगीच हो तो बेच बाका । ’

“ केवल एक एकका बर है, बही बिचपा लीबिए। और कुछ नहीं है । ”

“ तुम्हारी ली और लकके-बाले कहीं रहेंगे ? ”

“ बेइके तले । ”

मगवान बाबू बहुत बेर सोचते रहे । इसके बाद हारान मुलर्जीके मुँहकी ओर गौरसे देखकर बोले—गुगहारी अँलै इतनी बस क्यों है ?

“ यह मैं कैसे जानूँ ! ”

तब हारान मुलर्जीको निदा करके सरिबतेके भीर एक आइमीका बुझकर नन्दी बाबूने कहा—गुम हारान मुलर्जीके परकी लबर का सकते हा ?

“ क्या लबर खानी होगी ! ”

“ यह कि उनके परकी हाबत कैसी है, खमीन जाबदाए कुछ है कि नहीं, किसी तरहका कर्म है कि नहीं—यही सब । ”

यह आदमी हारान बाबूकी बहुत-सी बातें जानता था । बाला—जहाँ तक मैं जानता हूँ, मुलर्जी महाशयके परकी दया अच्छी नहीं है । सम्पति भी जान पकता है, कुछ नहीं है । देना या कर्म है कि नहीं इस बारेमें मैं कुछ नहीं कह सकता । ”

“ अच्छा, अच्छी तरह पता लगाकर मुझे बताना ।

दो दिन बाद उठने आकर बताया कि पर-गिरिस्तीफ्री इस्सत जहाँतक खराब हो सकती है उससे भी यह तर पर-गिरिस्ती हा चुकी है । और सब बातें जो यह बता चुका है, सब सच है ।

नन्दी बाबूने पूछा—मुलर्जी किसी तरहका नया-बया करता है क्या ?

“ जी हाँ गोंबा पीत है । ”

“ इसीसे उनकी अँलै इतनी बस थी । नराबाजीके लखका और भी कोई दाए है क्या ? ”

अमरने किर टुकाये हुए कहा—सुनता था हूँ कि हे ।

“ हाँ फिर एक काम करो । कल कोर्में जाकर हारान मुलर्जीके नाम पोरीक अन्तपडा मुकदमा दाएर कर दो और पुक्तिमें भी रिगान कर दो । ”

अन्तका मतीजा यह हुआ कि मुलर्जी महाशयको पुक्तिके हाथो गिरस्तार होकर हाबतमें जाना पडा ।

निकट होने पर भी हल्दपुरका प्रायः कोई भी आदमी यह समाचार नहीं जान पाया। हाँ, बिम्बोके बाप भक्तारन गांगुली इस बातको जान गये थे। जान पड़ता है, मन्दी बाबूने ही उन्हें इस घटनाकी खबर दी थी। वह प्रतिष्ठित और बनी-मानी व्यक्ति थे। इच्छा करने पर अमानत देकर हासन मुन्सिफको अनायास हवाभावसे धुड़ा सकते थे। किन्तु उन्होंने कुछ भी नहीं किया। सहाय-संबन्धीन मुन्सिफों हवाअवतमें ही छड़ने लगे। और एक बात है—कब्ज-पिबा कृष्णा महराजिनने यह बात कैसे सुन पाई, वह केवल बही बता सकती है।

बैठालकी पुपही फाले बादसे डफ आई और धीरे धीरे खन्बहार हो आया। इस समय हासन बाबूके घरमें, रसोईपरक बरामदेमें उनकी स्त्री और बही बेटी सम्मना आमने-सामने बैठी हैं। दोनोंका मुँह खूब खुला है। आज एकादशी है—छम्ना बाबू-विषया है वह एक बूँद पानी भी आज नहीं पी सकती। और उसकी माँ—उन्होंने भी अभी तक कुछ नहीं खाया-पिया है।

सम्मनाने कहा—मा, जान पड़ता है, आज गी बन्धा नहीं आयेगी। बादक फिर आवे है। अगर पानी बरस पड़ा तो रतोईपरमें लड़े होमेथि भी अगर नहीं रहेगी। तुम कुछ ला क्यों न ओ।

छम्नाकी माने कहा—और तनिक देल र्वे। तीन दिनसे नहीं आवे—आज अगर आवे !

“मा, बन्धाने तो ऐसा कमी नहीं किया। तीन दिन नहीं आवे—अगर आज भी न आवे !”

“कैसे कहूँ ? बही मगवान् है।”

एकादशीक दिन रातमधि ( हासन बाबूकी बही बहन ) अठ बेरसे स्नान पूजा करती थी। अभी अभी नित्यकर्म समाप्त करके माता करती-करती पाठ आकर बिलारर बोली—बहू, ऐसे अभी तक नहीं आया !

बहूने उदास भावसे कहा—और भी तनिक राह देल रही हूँ।

रातमधि—देखती नहीं, मरा लगव कर रही है। और तनिक देलमसे क्या होगा ? यह बूझ आज हत्नी देख्ये क्या आवेगा ? बाहर देल, गँजा पीकर नामें पुत फिती लदी औरतके परमें पका होगा।

उपवासके कारण रासमयिका सिवाज उष दिन कुछ खिनखिना हो उठा था। कोई कुछ नहीं बोला, यह देखकर वह और भी कुछ कुपित हो उठी। बोली—मुँहसौंठा कब मरेगा, अब हम लोगोंके हाड बुझायेगे !

अब सख्नासे छटा नहीं गया। उसने दुःखित भावसे कहा—सुभा, एकादशीके दिन कोस क्यों रही हो !

‘एकादशीके दिन कोस क्यों रही हो !’ यह बात रासमयिके हृदय पर पोट कर गई। उन्हीं भीतर मय्या हुई और वह इस बात पर स्वयं अग्नित हुई। लेकिन उनसे छोटी जरा-सी छोफरी सख्नाने जो वह कहकर उन्हीं अग्नित किया, इससे दूना जल उठी। बोली—तू ममी कसकी छोफरी मुत बुझीका एकादशी-द्वादशीके शीत बेने न आ। वह क्या तेरा ही बाप है, मरा कोई नहीं होता !

कहते कहते रासमयिकी औंलें गीली हो आईं। बोली—बच्चा मेरा तीन दिनसे पर नहीं आया। मरे कलत्रेक भीतर कैसा-कैसा हो रहा है, इसे मरे हृदये ही जान सकते हैं।

औंलसे औंल पोटते हुए फिर कहा—मैं बूढ़ी ठहरी। अगर कोई ऐसी-बैठी बात मुँहसे निकल जाय तो तुम लोग औंलोमें ठँगली डालकर मेरी भूल दिलाकर पार बाते सुना दा।—काई अन्तरत नहीं है बेटी, मैं अब तुम्हारी किसी पक्षमें दखल नहीं हूँगी। वह देखकर कि खाना-पीना छोड़कर बहु दुःख-दुःखकर मरी जा रही है, दा बाते बोले बिना नहीं खा जाता।

सख्ना बहुत दुःखित हुई। वह खुद ही वह नहीं जानती थी कि उसकी एक बातका इतना गहरा मतलब निकल सकता है और वह रोने-बोनेका कारण बन सकता है। वह बोली—सुभाजी, मुससे कसूर हुआ। अब मैं कमी ऐसी बात नहीं कहूँगी।

सन्मुख इस तरह कहना उचित नहीं था। उसकी माने भी कहा—बेटी, तुम अब सपानी हा गई हो—तब बाते समझ बूझकर मुँहसे नहीं निकाल सकती !

इसके बाद उसके बहुत करने-सुनने और दबाव डालन पर सख्नाकी मान कुछ आहार किया। इसी समय निन्नेने अपनी पाँच बयकी क्य्या प्रमिनाका हाप पकड़े हुए हासन बाबूक परमें प्रवेश किया।

सामने ही रासमयि राही थी। वह उसे देखकर बोली—बिन्दा, अब इस तरह माती ही नहीं।



किन्तु अप्रतिभ होनेवाली व्यष्टि नहीं। उसने भी हैलकर कहा—तुम ही सीपी, हमारे उभर कर जाती हो!

रासमणिने कहा—मुझे करीब जानका मीका करीब मिळता है करना। छोटे बच्चेकी बीमारीके कारण एक पग भी करीब हिम्मेका उपाय नहीं है।

“उसे क्या हुआ है? क्या बीमारी है?”

“एक हो तो बताई। बुलार, तिहा, पेटका दर्द—कुछ भी तो बाकी नहीं है।”

“बहु करीब है?”

“अभी इतनी देरको, दो कीर साकर उठ कोठरीमें सड़केके पास जाकर बैठी है।”

“इतनी देर क्यों हुई?”

“हारानकी राह देखनेमें। वह तो तीन दिनसे घर ही नहीं आया। अगर आज आवे, और मय देखे—यही करत करते इतनी देर हो गई।”

किन्तु बहोसे पककर उठ कोठरीमें पहुँची जहाँ बहु शुभदा अपने बीमार छोटे सड़के मापबके सिखामे बैठी उसे कहानी सुना रही थी। मापब हारान मुलबाँका छात्र सड़का है। अथवा केवल माप बर्षकी है। आज एक बर्ष हुआ वह मछेरिका और निखरीक रोगसे पीड़ित होकर चारपाईपर पड़ा है। रोग उठका कुछ ऐसा कठिन नहीं है। अगर बंगसे बगकर बंगसे इत्मत्र हो सकता तो अबतक आराम हो जाता। किन्तु बनक अभावमें किसी तरह अच्छी चिकित्सा नहीं हो पा रही है। साधारण परेल् दबाएँ, डाँटका, पूरम-यावन और कुनैनक ऊपर मरगा करके वह किसी तरह उठकर बैठ नहीं पा रहा है। बानों शास्त्र, सिग्ब उम्कक अँगसे माफ मुगरी ओम ताककर मापबने कहा—मा बाबूजी आज तीन-चार दिनसे मुझ देखने क्यों नहीं आवे? बर परी नहीं है।”

“करीब गप है मा?”

मामे कुछ इधर उधर करके कहा—गुम्हारी दवा सेन गये हैं बेय। बातकने मरुत होकर कहा—चीटी दवा लवें, कड़वी दवा भव और मुलस

लाई नहीं जाती। देखो मा, आराम होकर फिर पहलेकी तरह बूमने-फिरनेको मेरा भी चारता है।

कुछ बेर चुप रहकर बच्चा फिर आग्रहक साथ पूछ बैठा—मा, मैं अच्छा तो हो जाऊँगा न ?

माताकी आँखें भिँसी आ रहे थे। वह मन-ही-मन कह रही थी—जगदीश्वरके मनमें क्या है, वही जानते हैं। प्रकृतमें वह कुछ करने आ रही थी कि बिन्दोने बरपट पास आकर कहा—क्यों न अच्छे होगे बेटा ? मैं पास रहकर जस्टीसे तुमको आराम कर दूँगी।

मापक या ठरकी मा, किसीने बिन्दोको आँसे नहीं देला या। तइला होनेकी ही चौक उठे।

बिन्दोने चारपाईपर बैठत हुए पूछा—शुमदा, तू भोजन तो कर चुकी है न ?

हारान बाबूकी स्त्रीका नाम शुमदा है। बिन्दो अचरघामें उससे कुछ छोटी होनेकर भी नाम लेकर ही पुकारली थी। शुमदाने गर्दन घिसाकर कहा—हाँ।

“तेरी बड़ी लम्बी कर्तों है ?”

“जान पड़ता है, ऊपर है।”

“ता उस जरा बुना।”

इतना कहकर माय ही पुकारने लगी—सम्ना, ओ सम्ना !

सम्नाने ऊपरसे कहा—क्यों ? क्या है ?

बिन्दोने कहा—जरा नीचे तो आ बेटे।

सम्नाक आनेपर उससे हायमें अपनी कप्याका लेकर बिन्दोने कहा—प्रमीताको लेकर जरा बेर अपने भारीके पास बैठ तो बेटे। बहुत दिनोंक बाद भेट हुई है, तेरी मौँके साथ उस घरमें दा-बार बातें कर आऊँ।

प्रमीताको सम्नाक हायमें लौटकर, शुमदाका हाय पकड़कर, बिन्दो एक दम ऊपरकी कोठरीमें आकर बैगी। कोठरीका द्वार बन्द करके उसने कहा—बेटे, हायन दादा आज के दिनसे पर नहीं आवे।

“तीन दिनसे।”

“तू कुछ जानती है कि क्यों नहीं आवे ?”

“मा, कुछ नहीं।”

विन्दोकी बातक इंगसे उठे उर बग रहा बा कि पीछे कही कुछ अग्रम बात न मुनावे । विन्दो मौन रहकर छोकने लगी । शुम्भाक भी शरीरसे बगार पसीना बहने लगा । बहुत देर बाद विन्दोने कहा—शुम्भा, जानती तो हो, बहुत बातें एही होती हैं कि इच्छा रहनपर मौ विन्दो मौमी छग्नेवाली बनाकर नहीं कहा जा सकता ।

शुम्भाने एके हुए मुलसे कहा—जानती हूँ, क्यों ? क्या बात है ?

विन्दोने कहा—हायन दस्ता आज तीन-चार दिनसे घर नहीं आये । मान जा उन्हीक सम्बन्धमें कोई बुरी खबर देना हो ।

शुम्भाके सारे शरीरमें बिजलीकी छहर-ली दौक गई । शुम्भाने कहा—जान पड़ता है, वह अब जीवित नहीं है !

विन्दोने कहा—यह क्या, ऐसी क्यों है ? किसने कहा कि वह जीवित नहीं है ?

वह जीवित है ? ”

‘ छिः, जीवित क्यों न रहेंगे ? जीवित हैं, शरीरसे सुख है । ’

एतिके सुख शरीरसे जीवित रहनेकी खबर सुनकर भी शुम्भा कुछ शोक न सकी । बहुत देर बाद मकिन मुलसे धीरे-धीरे उठने पूछा—छिः क्या है ।

‘ बही बात करने आई हूँ । छिःकिन तू जो ऐसा करेगी तो केसे फूँगी ? ’

‘ शुम्भाने समी लॉथ छोड़कर कहा—अब मैं ऐसा नहीं करूँगी । क्या हुआ है, बताओ ?

उन्हेने खारी की है, यह कहकर मन्नी बाबूने उनको हवालातमें बन्द करा दिया है । ’

शुम्भाने पचयकर कहा—हवालातमें बन्द करा दिया है ?

शुम्भाका बहय पीला पड़ गया । पुनः बोली—तब क्या होगा ?

विन्दोने स्वामानिक स्वामे ही कहा—‘जग और क्या ? उन्हें बहसि सुझा खाना होगा ।

“ यह क्या हो सकता है ? ”

“ होगा नहीं ता क्या हवालात दानेसे ही जेल हा जाती है !

बहुत देर धुप खरकर छुमदाने कहा—बिन्दो, मैं तुम्हारे बापक पास एक बार जाऊँगी।

बिन्दो न गर्जन बिछाई। वह जानती थी कि छुमदाका मुँह देखकर पत्थर पसीब उठेगा, लेकिन मन्थारन यांगुली (बिन्दोका बाप) नहीं पसीबेगे। इसीसे सहमत न होकर उसने कहा—बापक क्या होगा ?

‘हमारे कोई नहीं है। यह अगर क्या करके कोई उपाय कर दें।’

‘‘अधिके कोई नहीं है, उसक मगवान् तो है। इतान दादा और मरे पितामें सबसे शत्रुता पसी आ रही है। इसीसे उनके पास आगेसे कोई फल न होगा।’’

‘‘फिर क्या उपाय है ?’’

‘‘उपाय मैं करूँगी। नहीं तो क्या केवल यह सबर मुनानेक निय ही आई हूँ। लेकिन मैं जो करूँगी वह कर लक्ष्मी ?’’

‘‘कर लक्ष्मी ?’’

‘‘पारि कितना कठिन हो ?’’

छुमदाने हड़ खरने कहा—हाँ।

‘‘ता मुना। नन्दी बाबूने दो सौ या तीन सौ रुपय तहसीलसे पुरानेकी नासिध उनके नाम की है।’’

हा-तीन सौ रुपय ! छुमदाको प्रम हुआ कि इतने रुपये मसा क्या एक साथ आसमी बुरा सफ़ता है ! और बुरायेगा भी तो रयेगा करों !

छुमदाने कहा—इतने रुपये उन्हेने कमी नहीं बुराये किन्ना।

‘‘न बुराये हो तो लपटा ही है। लेकिन इत बातसे हमें काम नहीं है। मैं समझती हूँ कि नन्दी बाबूको यह रुपया देकर लूब अनुनय-बिनय करनम वह छान दे लखत है।’’

‘‘मगर यह कैसे होगा ! इतने रुपय बेनेका मैं करों पाऊँगी !’’

‘‘वह मैं बताती हूँ। वह, यह कम्पनाका समब नहीं है। तुम मरे व दोना हापके कडे सेकर मात्र रातको मात्र ही मगवान बाबूके पास आओ। उमक-बाद जो लपटा समसा, वह करो।’’

सुमदा ने विस्मित होकर कहा—तुम्हारे दोनों कन्धे ?

“हाँ, मरे दोनों कन्धे। इनके हाम तीन-चार सौ रुपये होये। वे कन्धे देकर लाप्य-साधना विरोधी-विनती करनेसे बह दया करके हाउस दाराको छोड़ भी दे सकते हैं।”

“लेकिन किन्दी—”

“इसमें लेकिन क्या है ? पहले स्वामीको बचाओ, उसके बाद किन्दी-सन्तु करना। यह क्या संकोच करनेका समय है बह ! और रुपये चुका देनेकी ही क्या किन्ता है बह ! तेरा बड़का क्या होकर मरना कर देगा।”

“तो भाज ही जाऊँ ?”

“हाँ, भाज ही।”

“किन्दीके साथ जाऊँ ?”

“बेता कोई विश्वासी भादमी है क्या ?”

“कोई नहीं।”

तो अन्धरी ही जाओ। बस्कि अकेली जाना ही अच्छा है; क्योंकि पार आदमी मुन पावेंगे तो बह तरहकी बातें मड़ के सकते हैं।”

“तो भाज जाऊँ ?”

“हाँ, भाज ही जाओ। लम्प्याके बाद एक मैसी धोती पहनकर गैर टककर जाना। कुछ इसी समय में फिर एक बार जाऊँगी।”

किन्दीके जाते समय सुमदाकी आँसुसि बौट मिलने लगे। किन्दीने स्नेह पूर्वक जम्हे पीठ दिया, कहा—ईश्वर करे, सब मर्या ही हो। अगर इतने काम नहीं बना तो अन्य उपाय भी है। तू कुछ किन्ता न करना।

इसके बाद आँसुसि पीप रुपये खोलकर सुमदाके हाथमें समाते हुए किन्दीने कहा—बह, मैं तेरी माक पेयकी लगी बहन ही हूँ। मुझसे कोई लम्प्या नहीं है। सभी के पीप रुपये ले—बड़काको कुछ लरीए देना।

पीप भाकर प्रमीत्यका हाथ पकड़कर किन्दीने कहा—दिन अब कुछ नहीं है—बस बेटी, पर बसे। इसके बाद निपवा लम्प्याके ऊपर एक श्वेदशिक कदम दृष्टि टाककर बह अपने पर गई।

## ३

पहले दोपहरको वो सब बारस बापुके उपद्रवमे छिन्न-भिन्न होकर भाग गये थे, वे सन्ध्याके बाद ही एकके बाद एक बड़ी भूमसे गामे-बाजेके साथ फिर आकाशमें चमा होने लगे। समीने निश्चय कर सिमा कि आज रातको क्या हुए बिना नहीं रहेगी। यमी कम होगी—प्रात बचेंगे। वह क्या सबके मयलन स्थिर होगी; केवल सुमदाने समझा कि उसीके दुर्भागसे इस दुर्योगका सूत्रगत हुआ है। एक तो हवलपुर गौरी राह साइ संन्याइके बीच होकर है, उसके चोर घनपथ फिर आह है। तो भी सुमदा रुकी नहीं। वह अर्धचन्द्र के होना कड़े बाँपकर, पोतीको बचपी तरह पहनकर, एक तिछौनेकी सादरम सारे शरीरको बचपी तरह ढककर अपने घरमे निकली। वह पहले कमी कमनपाड़ा पौष नहीं गई थी। केवल वह सुना था कि उत्तरकी ओर मुँह करके पश्चिमेस आप कोतपर पक्षी सड़क मिच्छी है और वहाँसे और थोड़ा आगे बढ़न ही कमनपाड़ा गौष मिच्छता है। वहाँ पहुँच जानेपर कमीदारका घर पहचान लेमेमें कुछ भी बेर न लगेगी। करक, नन्ही बाहुओंका बड़ा मारी महक गौषमें प्रवेश करते ही देख पाता है, ऐसा उसने सुन रखा था। किन्तु हवलपुरकी भैंसेरी राह पछर पक्षी सड़क घना ही उसके स्थिर बठिन हा गता। प्रथम अन्धकार घना ही गया—एक-दो दूर मी गिरने लगी। पहले एक-दो दूर, अन्तमें मूलकपार पानीकी बर्षा शुरू हो गई। वह देखकर सुमदाने एक वृक्षके तले आश्रय ग्रहण किया। राह बचना अशक्य था। अंधकार इतना गहरा था कि हाथ भरके छतलेकी बीच मी नहीं चल पाती थी। प्रकृत बर्षा और उसके साथ बिजलीकी चमक और कड़क, सुमदा मीतर तक झँसे लगी। उसके देख, पारी आरसे बांगली बीच-बन्धु रौड़ते हुए उसी वृक्षके नीच आश्रय लेने आ रहे हैं। पाठ आकर मनुष्यकी मूर्ति वहाँ लड़ी दिगने ही प्रथम विन्मोहर दुःख भाम लड़े होने हैं। सुमदाको तहसा यह स्वभाव आया कि अगर कोई चोर वा डाह इवी बगल पानीसे बचनेके स्थिर आ पड़े तो क्या होगा ? उसे अत्यंत प्राचीन मर नहीं हुआ किन्तु प्रायमे मी अधिक मृन्मदान हो कड़ोकी बोड़ी उसके पल मी, उसके स्थिर भव हुआ। स्वामीके पुत्रधारका उपाय और अन्ना तब आषा-भोगेग यही कड़ोकी बोड़ी थी

शुम्हरा वृद्धके लठसे भाव लाड़ी हुई। लाय शरीर उल्लस श्रीबर्मे लज गवा साइ-  
 संलाइकी करीबसे और उनके कौटुंबसे उठके लव भंग छत-बिछत हो गये—कटफर  
 मये। तो मी सुम्हरा बड़ी नहीं—पसली ही रही। एक लवके सिद्ध मी क्या  
 नहीं कम्ती थी। बड़ी मरके सिद्ध मी बाइबोके गारबना वा विप्रकी कइकना  
 कर न था। वह किस तरह, कहीं था रही है, इल्लर कुछ ठीक न था।  
 तथापि बंगलके साइ-सलाइके हाथसे इयती हुई वह आगे बढ़ने लगी।  
 बहुत देर बाद उठे खान पड़ा, जैसे अपेक्षाकृत शीघ्र लला समने दिखारै  
 पड़ रहा है। बूने उलाइसे आगे बढ़कर सुम्हराने देखा, लवमुच ही पछी लड़क  
 वह पा गई है।

लेकिन अब और एक चिन्ता हुई। अब तक यह नहीं मिसी थी ललक  
 उठे केवल यह पम्पेकी चिन्ता रही, अब किस कामके सिद्ध आई थी, उल्लकी  
 विश्वासमें पड़ गई। इतनी रातकी कैसे सुम्हरात होयी? सुम्हरात हीने पर मी  
 क्या कर्म सिद्ध होगा? काम बने या न बने, इस दुर्योगमें वह बर कैसे  
 कौनकर बापयी? वह सब सोचते-सोचते उठने बीरे बरि गौबके मीतर प्रवेश  
 किया। कुछ दूर आगे आकर ही मारी मजब और उठके बातों ओर उल्लसे  
 लगा हुआ ठीकथोसे पिरा बला देकर उल्ले लजब किया कि पही मन्दी-  
 पदानेकर पर है। लेकिन उल्लके मीतर कैसे प्रवेश किया था? और प्रवेश  
 करने पर मी इतनी लजकी वह कमीहार बापुसे कैसे मिक पसेवी? सुम्हराके  
 कसई आ गई। अब क्या होया? वह कैसे पर बापयी? परिश्रम, बनाहार  
 और बुद्धिवासे वह मृतप्राय हो गई। मन्दी बापुकी कोठीके सामने एक  
 ठिक-मन्दिर था। उलीके कम्परेमें बहकर बह लेट गई। लज लजप बर्ग  
 बिबकुल कर नहीं हुई थी ही, कम होती वा रही थी।

बैठालके बादक केम पही मर्मे देकते देकते आकाशको दक लेते हैं जैसे ही  
 बम मनें आकाश छोड़ गावब हो जाते हैं। उल्ल दिनके कल रहे मप मी  
 देकते देकते आकाशके छोरमें दूर जाने लगे। आकाश लपल हो गया।  
 बरम्पकी बौरनीसे कसई बापमगा उठा। सुम्हराने मनमें लपवा, अब और  
 जानना समय हुआ है। वह अपनी मीगी छोटी और बाइरको कम्पने लगी।

इतनेमें उठे देल पड़ा, एक बूद पुरुष नौकरके लव, थो बौदक हावमें  
 सिद्ध है, कमीहारके बरध ललक श्रीबर्मे मन्दिरी और आ रहे हैं। इन बूदसे

अगर कुछ पता था था, ऐसी एक मीठी आवाजके सहारे शुभदा प्रस्थान न करके एक किनारे लड़ी रही। बुढ़ने मन्दिरके द्वारके सामने आकर देखा, एक झी पूँचके हुँह डके लड़ी है। बुढ़ कुछ न बूझकर मन्दिरके मंदिर चले गये। बहुत देर बाद बाहर निकले तो देखा, वह झी अब मी जैसे ही लड़ी है। बुढ़ने झूट देलकर पहले अनुमान किया था कि किसी मछे परकी कोई झी पानीसे बननेके लिए वहाँ आ लड़ी हुई थी, अब पत्नी चायसी। किन्तु अब मी उस उसी तरह लड़ी देखकर बुढ़का उसके बारेमें जाननेका कौतूहल हुआ। बुढ़ने पूछ—तुम कौन हो? झीने कुछ उत्तर नहीं दिया।

“कहाँ बाबूकी बन्नी?”

शुभदाके बोलनेमें खन्ना था रही थी किन्तु अब उसके धीरेसे कहा, “बमीदार बाबूके पर।”

“बमीदार पर तो वह लामने ही है। फिर वहाँ न बाबर वहाँ क्यों लड़ी हो?”

शुभदा कोई उत्तर न दे लड़ी।

बुढ़ने फिर पूछ—बमीदारके परमें किसके पान बाबूकी?

“बाबूके पत।”

‘किन बाबूके पत?’

“ममदान बाबूके पत।”

बुढ़ने विस्मित होकर कहा—ममदान बाबूके पत।

“है।”

“तो मरे ताव बाबूकी।”

बुढ़ आगे आगे चलने लगे। शुभदा बाँदनीके अवालेमें बुढ़के रवेत केरा और लीप मूर्ति देखकर निःसंशय भावसे पीछे पीछे चलने लगी। ममदान बाबूके पत होकर, काम पार होकर, एक कमरेका द्वार खोलकर बुढ़ने पुकार—एन बैठके आओ।

शुभदान कमरेमें प्रवेश करके देखा, लूह सजा हुआ कमरा है। वारे पर्यार कीमती नर्सिया बिठा है। लामने मकनह लकिया ख्या है। बुढ़ने उसमें बैठकर सुनराओ बीचके मसालेमें लिसे पैर लक, कुछ लुके हुए पूँचके मीठके मिन्ना देखा था लक्या था, गौरसे देखा। शुभदा एक समय लमली थी।



और दुम्ह-कहसे परलेखी बह ब्योति अब महीं है, तथापि कुछ री ब्यवस्था  
 को कुछ बंध बना है, उसीसे बह मोहित हो गये। बही देर तक देकर  
 उन्होंने कहा—बन्धी, तुमसे गच्छी हुई। जान पड़ता है, तुम विनीत बनूसे  
 मिथ्या चाहती हो।

“ विनीत बनू कौन है ! ”

“ विनीत बनू मगधान बनूके छोटे भाई है । ”

“ मैं उनसे नहीं मिथ्या चाहती । ”

“ तो क्या मगधान बनूसे तुम्हारा कुछ प्रयोजन है ? ”

“ जी हाँ । ”

“ मगधान नन्दी मेरा ही नाम है। लेकिन मैंने तुमको कमी देखा हो, बह  
 नहीं पड़ता । ”

“ जी हाँ, आपने मुझे कमी नहीं देखा । ”

मगधान बनूने कहा—तो फिर मुझसे तुम्हारा क्या प्रयोजन हो सकता है !

तुम्हारा कुछ नहीं बौद्धि। मगधान बनूने फिर कहा—मैंने छोटा भा, उसको  
 किसी भीप्रकार प्रयोजन विनीतके पास हो सकता है। इतनी उलझे मरे निष्प्र  
 तुम्हारा क्या प्रयोजन हो सकता है—मेरी कमसमें नहीं जाता।

तुम्हारे फिर भी कुछ उत्तर नहीं दिया।

“ तुम्हारा घर कहाँ है ? ”

“ इन्द्रपुरमें । ”

“ इन्द्रपुरमें ? तुमसे प्रयोजन ? तुम क्या हासनशीली हो ? ”

तुम्हारे ईश्वरके भीतरसे गर्दन दिखकर कहा—जी हाँ।

“ कहो, क्या प्रयोजन है ? ”

तुम्हारे भीतरसे बह कड़ोकी छोड़ी लौकर बीरे बीरे मगधान बनूके  
 पैरके फल तक ही और गन्धर कण्ठसे कहा—उनको छोड़ बीषिय।

बह लव मत्ता गये। दोनों कड़े हाथमें लेकर अपनी तरह भीतर अपनाको  
 बोले—तो भी मुझे सुखी हुई कि उलझे तुमको इतना भी दिया था।

इसके बाद दोनों कड़े नीचे गन्धर बोले—तुम इन्हें छोड़ के चलो। मैं  
 कामकाजी नन्दीके हाथके कड़े महीं उतराना चाहता। छड़ना रीगा तो धो ही  
 टोड़ूँगा। विनीतके उलझे मर विनीतके रूपके किये हैं, वे इन कड़ोने मर  
 महीं हो सकते। इन्हें लेकर लौकर भीतरके कड़ोने मर

सुमराने अपने भीतू पोंडकर कहा—उम्हें छोड़ तो दीबिएगा न !

“इच्छा तो न थी । वह बेया बरबख्त है, उससे उसे हज्ज मिथना ही उचित था । फिर भी तुम्हारे लपलपे छोड़ दूँगा ।”

सुमराकी भीलपे सावन-मसरोधी सड़ी जमा गई । खेतके पड़कने वह मासप कम्पा होकर भी मुँह चोड़कर व्यापारीबाद देनेका ताहल नहीं कर सकी । मन ही मन उसकी सैकड़ों पन्नावार देकर, ईश्वरके बरभामि उन्नय हवासों तरहका मंगल मनाकर वह बातेके लिए उठ लड़ी हुई ।

मगवान बाबूने फिर उठाकर कहा - भाव ही पर चामोगी ?

सुमराने गदन दिखकर कनावा कि भाव ही चामगी ।

मगवान बाबूने पूछ - तुम्हारे साथ और कोई आदमी है ?

“कोई नहीं ।”

“बाई नहीं ! ये इतनी एतने अकेली न चामो । एक आदमी साथ ले चामा ।”

सुमरा वह भी अस्वीकार करके अकेली ही उठ बंगलके भीतरसे परको लौड़ी ।

वह उठने परमें प्रवेश किया, उठ लम्प मोर हो गया था । लम्पना पहले ही उठकर परके कमराघर करनेकी चेष्टा कर रही थी । पीछे बच्चोंमें माको देखकर अपने कहा—मा, इतन तकके नहा आइ !

सुमरा 'हाँ' कहकर भीतर चली गई ।

४

रासमामि और बुगामामि नाम न रखकर सुमराने जो दोनों बेस्टियोके नाम लम्पना और छम्पना रखे थे, इतने नन्द रासमामिके मनको बड़ा खतार था ।

राशक वेस्वामीकि-मि लम्पना और छम्पना ये दोनों नाम आठां पहर उनका जानोमें सरलनी जमा । लम्पना नाम तो फिर भी कुछ ठठना कुछ नहीं है; किन्ति मि.—छम्पना भी बाई नाम है ! छम्पामि छम्पनाको जो नहीं देख सकी थी, उन्नय भावमें अधिक काव उन्नय वह नाम था । खेय कड़के-कड़किबोद्य नाम देव-देविबाँध मामस रखते हैं क्योंकि उन्हें पुकारनेमें भी मगवान्ना; देवी-देवनाभीय नाम मुहसे निकलता है; किन्तु इन दोनों कड़किबोद्ये पुञ्जलैते बन पड़ता है, जैसे पारब्य बोस्य योदा योदा करके कह जा है ।

सन्नामयी, सन्नामयी दोनों हाथ बाधकी कथा है। एक बड़ी है, एक छोटी। एक तरह सखी है, दूसरी तरह बर्बाद है। एक विषय है, दूसरी कुँभार है।

यह दो हुई परिवर्तनीय बात। अब रही कम-गुणकी बात, उसे मैं कैसे बखाल हूँ। हाँ, पंगाके पायोंपर सन्ना जान करने वाली छो बड़ी-बड़ी भाषणमें करने-सुनने लगती, "मन्नाको विषय करना या, इसीसे छोकीको इतना रूप दिया।" सन्ना और तरह मुँह फेरकर गोते लगती रहती। हमकीकी औरतोंमें करना-पूरी होने लगती। क्या करती थी, यह बे ही जाने; मगर उनके मजस बान पढ़ा है, वे ठकरी विषय बर्बाद नहीं करती थी। सन्नाएव इतने कुछ आता-जाता नहीं। वह अधिक बोझी थी न थी और खेतीकी कठोर विषय ध्यान भी नहीं देती थी। दो-चार बातें करती, नहती, कठोरमें एक मती और सीढ़ियों पढ़कर बर पसी जाती। किन्तु सन्नाकी बात और थी। वह अधिक बात करना फन्दा करती, खेतीकी बातोंमें पढ़ना उसे अच्छा लगता। परत आठ बजे घाट पर स्नान करने वाली और प्यार बनेसे पहले पर बोटकर न जाती। उन पर गहने न होनेके स्थिति मुँह फुलती। मोटे बालकोक मज काया नहीं जाता—कहकर लपटा जाती। वालीमें मजकी क्यों नहीं है—कहकर भार वाली ठेक देती। दिनमें ठेकड़ों-बहारों इती तरहके काम किया जाती। वह भी परम सुन्दरी थी—ठके शरीरमें भी कम लगाता न था। तपे कुँभारका-सा रंग था। गुन्यके फूलकी तरह मुक्त था। मुक्त-मन्नामें दोनों भी हैं बने किन्ती नितरेमें तुम्हारा (कृष्ण) से पिहित कर ही हों। दोनों फल फलके हीठोके पान खाकर बरके रूप हाथमें देकर सन्नामयी निबनमें अपना रूप देखती और यौरव तथा गर्भसे उठना हलक मर जाता। वह मन-ही-मन करती कि इस अवस्थामें जब इतना कम है तो अथवा पाकर—कथनीमें—न जाने क्या होगा। सभी बर्गमें इतने गहने रहेंगे—यहाँ अनन्त, नहीं शायद, नहीं हाथ, बिच, कंठी, मातृ—लकड़ी, इलकड़ी, बीलकड़ी, और भी न जाने क्या क्या किटना यदना—आह, तब क्या होगा।

इतने सारे आनन्दके सन्ना बनेके किन्तु—न पत्नी, बीड़कर अपनी हीरीक पल का देती। सन्ना पूछनी—क्या है? बीड़की-क्यों है।

सन्ना—हीरी, मग रंग क्या बरकेसे काय हो गया है कुछ।

छम्ना—क्या कबो होगा पताही ?

“नहीं हुआ ? क्या हीरी, हमारे गौधमें कोई हाथ देना जानता है क्या ?”

“—कबो ?”

“मैं अपना हाथ दिखाऊँगी ।”

“कबो, मध्य ?”

“वह हाथ देकर बड़ा बेव्य कि मरे रहने होंगे कि मही ।”

छम्नाकी आँसुमें आँसु आ जाते । वह कहती—होगे बहन, होंगे । तुम एवजानी होगी ।

छम्ना सबा जाती । सूर सस्र करके दीवार भस्मच माग जाती । रहने होंगे कि नहीं, वही वह पूछ रही थी । एवजानी होनेकी बात फिलने करी ।

कमी आकर छम्ना पूछती—हीरी, हम खेयोंके कुछ कबो नहीं है ?

सम्ना कहती—हम गरीब बुलिबा हैं, इतकिय ।

“गरीब बुली कबो है हीरी ? गौधमें कौन हम खेयोंकी तरह येमे रहता है—येस कठ पाता है ?”

“इपरने बिते केडा बनाया है—बितक माम्यमें केडा बिल दिया है, उसे उठी तरह रहना पड़ता है ।”

छम्ना रोक करती—इपरने और फिरीके येला नहीं बनाया, केवल हम खेयोंकी ही येला बनाया है ?

“हमारे पूर्वजन्मके पापच फल है ।”

“कौन-आ पाप ?”

“पाप क्या एक तरहका है बहन ? धापर ऐस बहुत-से कम किये हैं बा न करमे बाहिए प । धास-माकी भकि नहीं की भडा नहीं की अनुचित रूपमें खेयोंका जी दुलाया—कट्टा दिया । और भी न जाने क्या क्या किया होगा ।

छम्नाका मुख मुगध गया । खेयी—छे क्या एही तरह छा हमारे दि जाँतेगे ? क्या कभी तुम न मिसेगा ?

“येला कबो खेकी हो बहन ? कुरे दिन बीत जानेपर फिर आठ दि आबेंगे ।” -

इसके बाद लौहपूर्वक छज्जाके दोनों हाथ अपने हाथोंमें लेकर वह खड़ी—  
बैस लेना, छप्पे कितना मुक्त होगा। कितना ऐश्वर्य, कितने गहने, कितने दात-  
वासी तरे होंगे—तू राबराणी होगी।

छज्जा बह-ठप वह बात करती थी। एक दिन छज्जाके पों कहनेपर छज्जा  
बिना छोपे-छमसे वह खू बैठी—और बीबी, तुम ?

वह जानती थी कि उत्तमी बीबी विपवा है, तो भी बालिका सुखम बाबूताके  
कारण उसके मुँहसे आफ-ही-बाप बनाबात वह बात निकल गई। रतीसे छज्जा  
तिर छपकर चुप हो रही।

छज्जाने मुक्तपकर कहा—मैं भी तुझमें रहूँगी बहन।—वह मुझे मा  
पुकार रही हैं।

छज्जा बची गई। तनमुच ही उसे मा पुकार रही थी। पाठ भाकर  
छज्जाने कहा—स्वों मा ?

शुभदामे कहा—तुम्हारे बाबू आपे हैं उठ सरक है—  
बात पूरी होनेके पहले ही छज्जा बच ही थी।

हायन बच खाना खाने बैठे तब उनकी बहन राधमिभि पूछा—इतने दिन  
कहीं रहे ?

मुँहमें और बालकर हायनबहने गम्भीर भावसे कहा—वह बड़ा कितना है।  
राधमिभिने आश्चर्यसे मुँह फैलाकर कहा—बड़ा कितना क्या है रे ?

उठ बीरबो गलेके नीचे उठाकर पहले ही बी तरह गम्भीर मुँहसे हायन-  
बाबूने कहा—बड़ा कितना वह है कि तिरके ऊपरसे प्रलयका तूटन निकल  
गया है !

राधमिभिके किताबकी सीमा मसी, जितनाका अन्त नहीं। श्रवः ईंचे हुए  
गलेसे खू उठी—सुखला करके बग हायन।

हायनबन्ध गम्भीर मुँहमें हस्मि-सी हँसी लज्जाकर बीठे—नष्टबन्ध \* के

\* बायें-मुठी बीबध करवा बहकर बहजना है। दैव प्रसिद्ध है कि उल पानरी  
से बीर करवाये देखा है, उसे मिच्छ-कर्ण लला है। बीहण सब तथेय बाँगरी  
बाँरी बहकरये केनेके कारण बनी थी। लबाएय कोय रिन बरा-बीब बने है।

कर्मकायी कत जानती हा ! मेरा बही हलक हुआ था । बोरी त्याकर नन्दी बाबूने मुझको—नहीं, मेरे नाम नासिध की थी ।

“ नासिध की थी ? ”

“ हाँ, नासिध की थी, लेकिन बहुत बात फितनी देर एक लकड़ी है ! कुछ भी लाकित नहीं हो सका—आज बही सुकदमा जौतकर घर आया हूँ । ”

हूँपटके मीकर सुमदाने भीलें पोछीं । सुतमदिने नन्दी-बरानेकी बहुत मंगल कामनाकी, उनकी छत पीछिबोको सुकि देनेके स्थिर हुगा महाशयनीके घरलामे प्रायना की । इसके बाद कहा—किन्तु वे क्या तुमसे नौकरीमें फिर रखेंगे ?

हायनचन्द्रने भीलें खल करके कहा, नौकरीमें रखेंगे ? मैं जब नौकरी करूँगा तभी तो रखेंगे ? इसबादे मंगलान नन्दीकर हुए मैं इस काममें नहीं देखूँगा । अगर बीठा रहा तो इसका करव्य क्या—मेरा बैठा अपमान किया है उलका करव्य बकर चुकाऊँगा ।

रात्मणि कुछ देर मील-विधिनि दृष्टिसे अपने बर मारकी ओर लाकती रही । फिर धीरे धीरे बोधी — ता फिर बरकर खरव-बरव—

हायनने हमके ठाव कहा—उलकी चिन्हा न करो बीदी । मैं मर्द-बन्धा उदरा—तुमसे चिन्हा क्या है ? एक ही किटी और बगद नौकरी हुय क्या ।

हायनचन्द्रकी इस बतपर रात्मनिने समूण विरक्त कर लिया हो, यह बात न थी, तथापि यह कुछ आलस्य हुई—उन्हें कुछ बीरव हुआ । समूणे बाविरालन करनेकी अपेक्षा इस हाकर दुबिन्हाके हायसे सुदधाय पानेके स्थिर ऐस काम्य तमीकी रूप्य होती है । रात्मनिने भी बही किया । उन्होंने अपने मनको समसाया कि यह जो करता है बही पाबद करेगा । हमसे कम मन्तकी इस विपथिके काम्य तो भीलें जुलेंगी ।

कुछ देर पुन रहकर रात्मनिन कहा—जा अपप्र हो बही काना—नहीं तो हाती-बीमारोमें, बाक-बन्ध सेकर संकट और कदकी बोरे सीमा नहीं रहेगी ।

एक लम्घ-बोहा उतर देकर हायनचन्द्रने मीकन सम्यक्त किया और उठ लगे हुए । अब मापरसे मेट हुई । उलन हुना या कि फिा आये है, इसीसे अगतक उन्तुर होकर अपनी पारप्रांस बैठा था । हायनचन्द्रने पास आकर उठकी देहपर हाव फेरकर कहा—“ कमे हो माचव ? ”

“ आज बन्धा हूँ बाबू । दम रहने दिन आये क्यों नहीं ? ”

छमदाने मुक्तामे हुए चेहरेसे कहा—अब और तो कुछ नहीं है ।

हायनचन्द्रने हँसते हुए कहा—बह कहीं ही सकता है ! तुम्हारा कर्माक्ष  
महार कमी नहीं चुकता ।

छमदाने मन ही मन कर्माक्षके महारकी बात स्मरण की । प्रकटमें कहा—  
कर्ममुक्त कुछ नहीं है ।

“क्यों न होगा ! कस तो मैंने देखा था कि बहुत-से पैसे और एक  
बपवा भी था ।”

छमदा चुप हो रही । हायनचन्द्रने फिर कहा—छि ! तुझे दो पैसे देनेमें  
तुम्हारे विश्वास नहीं होता ! ठगवा बपवा देनेमें विश्वास न हो तो बार आगे  
पैतोंछ तो विश्वास करना चाहिए ।

छमदाने और कोई आपत्ति नहीं की । हाथ खेकर स्वामीके हाथमें बह  
बपवा भी खेकर रख दिया ।

## ५

बनका कदम्बबहार इतीथे तो कहते हैं । हायनचन्द्र हस्तरपुर गाँव पर होकर  
कामुनबाइमें आये । इसके बाद एक गम्बिबारेकी यह बज्जर एक स्टूडरसे घिर  
हुए शोपेमें चुप गये । वहाँ अनेक आरमी कम्प होकर एक कोमेमें बैठे थे ।  
वह एक मरक पीनेवालोंके बहबा था । हायनचन्द्रके देखते ही वे आरमी  
कुशीके मारे उठत पड़े—महाम्बरण कर उठे । अनेक प्रीति-संभाषण हुए—  
किसीने हायनचन्द्रकी सेवा कहकर पुछाय, किसीने दावा कहकर पुछाय, किसीने  
माया, किसीने मौता इत्यादि कहकर ज्योने बहुतसं मान्य ठगन्य बोड़े ।  
हायनचन्द्र मुस्कीकी तरह उन लोगोंके बीच विचकमान हुए । तरह-तरहकी अनेक  
बतोंके सिधिसिध बतने लगा । अनेक यथा-महात्तावा मधी आदिना मुह-पाल  
क्रिया गवा, कानों बपये खन कर डाल गये । वह मरककी बूकान भी ठहरी ।  
संसारके एक धारमें मजान है और दूसरे धारमें मरककी बूकान । मजानमें  
महात्तावा भी मिश्रकके बपण हो जान हैं और वहा भी मिश्रक महात्तावाके  
कम्पन अपनेको कप्त लेता है । अन्धीमके किनामसे बनी मरककम्प मुभी नरोच  
बोके मगामें कम्प होकर किना नरोच बोर बदाने लगा, उठना ही एक एक  
करके इरपक्य महात्, शरता-वीणा, बैब, गमीर्म, पाञ्चित्य इत्यादि सरगुन

पूज्यर कैज्यर बनव्य अपार होमे लगे । किटना दान, किटना प्रसिदान होने लगा । मधि, मुत्त, इति, सोना-चाँदी—किठने ही रण्य, किठनी ही रण्यवा मरुङ्के हर 'छीटे' का बुझी लीचनेपर दिना किठी बाघाके उस मंडलीमि भासे-बाते नबर बाने लगे । एकदम इतने रन, बगत्की समी धामनाकी बसुएँ उस भाषं अण्यकार और भाषं उबाजेर्म, उस इहर पारमें, समीनपर सुखम हो रही थी । उस इन्ड-सम्यका बर्षन में न कर पावैय्य ।

अमघा: संप्या हो रही है, वह देखकर अनेक काश्चिदास, अनेक विद्वीके बादघाह अनेक नवान् किराबुहोस्य, अनेक मिवाँ तानसेन एक एक दरबाजेका दूर कसकर अगेक बाहर आने लग । बगत्की नीच अंगोंके साथ मिळ-बुल नहीं सफ्ते; उनसे आस्यध-परिचर वा बलचौत करना इम्हें धामा नहीं देता । अतएव ये लोग राहके किनारे-किनारे पुपचाप अपने-अपने मरुङ्को बरु दिये ।

हायनचन्द्र भी उन लगेकी तरह बाहर निकले; किन्तु बाहर भाकर कुछ मइबड़ीमें पड़ गये । न जाने क्यों उस अमागे रोगी माप्यका बहय पार भा गया । साथ ही साथ बदाने अनारकी छठ भी पार आ गई । और सब नरोबा-बाँकी तरह अवरु बह कोई विशेष ऊँचा पर पाकर बाहर नहीं निकले वे, किन्तु मुँहबले उस छोकरेके मुक्ने उस मौत्रके रण्यमें दिय्य विचुंकाय्य ल्य ही-छल्ल-मुण्य कर दिवा । दिह्वीके बादघाह ( हायन ) ने जेकमें हाप डालकर देखा, राङ्-काप प्राण: घुल्य हो गया वा । इतने बड़े कस्यके पास पार पैसे और एक गौत्रकी चिसमके सिवा और कुछ न था । बहुत अण्य । उहीम्य तहाय सकर वह पात्रकी एक गौत्रकी बुझानमें पुत गये ।

ठेकेदारो मित्र संभारतसे फुल करके बोले—धाना, पार पैसकी पुदिया लो देना ।

ठेकेदारने बड उस आशाका पाल्य किया ।

हायनचन्द्रनं तब मनके माकिड एक वृष्टके नीच रण्यन लौत्रकर यौत्रके हमधी तहायनास विदुंकाय रण्यका सिर मुदुंकायसे डीक कर लिवा । गौत्रकी मन्त्रा, चिसममें भरना और भाग रण्यकर हम मारना आदि ल्य काम बिधि पूर्यक तनत्र हा जानेपर रन बहुत होत देखकर हायन धावू वृष्टन लण्य आत्रव छोडकर उठ लगे हुण । बहुत दूर बाहर एक तराँके मधमके अण्यके द्वारको रण्ययार उगाने पुघरा—बत्पावनी ।



किसीने उत्तर नहीं दिया।

फिर पुकार—मैं कहा हूँ क्या, परमें हो क्या ?

तो भी उत्तर नहीं।

खीसकर हायनचन्द्रने खीसकर पुकारा—अरे परमें हो तो बर भाकर  
बरबाबा लटके बाभो ना !

एक बार बहुत धीरे कण्ठसे बगम आवा—कौन है ?

“ मैं हूँ - मैं । ”

“ मेरी खिन्नत ठीक नहीं है - उठ नहीं लूँगी । ”

“ बह न होगा । उठकर खीस दो । ”

अन्धी एक पथीत लकड़े कागम्य अन्धत्वाकी कन्धी-कन्धी मोटी-माटी लारे  
अंममें गोरना गोरपाये, बकनसही नाक-नकरोखी खीने कन्धरात्क आर  
उर करते हुए भाकर लटके बरबाबा लोस दिया ।

“ ओह, देखके बहसे मर रही हूँ ! इतना खीसही तरह निन्न  
कमो रहे हो ! ”

“ क्या लुणीसे चित्तपटा हूँ ! बर बरबाबा मरीं सुस्ता तमी खीसना  
पड़ता है । ”

पुखी खीसकर बोली—ना बाबू, इतना उपास मुहसे नहीं लहा बगम ।  
आना हो तो बर बस्वी भाभो । एत नहीं, हो पार नहीं, बर बस्वी तर इत  
तर चित्तपटो, बह न होगा । इतना कम्म मुसे अन्धा नहीं लगता ।

हायनचन्द्रने भीतर प्रवेष्टा करके खीसना लगा थी । इतक बर बस्वायनीकी  
आर बेलकर कहा—आह ! तुम्हारे पैरमें बर्द हो रहा है, पर लो मैं  
बानना नहीं बा ।

“ तुम कैसे बानोग ? बानते हैं मोहलेके खेम । कम्म इव पड़ी लक पैरने  
एक डूब भी पानी नहीं गया ।—अन्धा बानाओ, इतनी एतक कैसे आये । ”

“ कुछ काम है । ”

“ काम ? क्या काम है ? ”

“ अमी बानाया हूँ । तुम बर एक चित्त तो तब लक मर खो । ”

कल्याणनीने उसका कुछ होकर हाथसे पल्का एक बोना दिखाते हुए कहा—उस बोनेमें सब सम्पन्न है। तमाकू पीना हो तो अपने हाथमें भर लो। मुझ और परेष्ठान न करो—मैं सब क्या खोजूँगी।

हारानबन्धने सँपते हुए कहा—ना, ना, तुमसे नहीं कहा—मुझे लजाल ही नहीं रहा; तुम बाहर से रहो—मैं भाग मरे लेता हूँ।

तब तमाकू खाकर दुस्का हाथमें लेकर हाणनबन्ध कल्याणनीके पाठ चारपाई पर आकर बैठे। बहुत देर तमाकू पीते रहनेके बाद धीरे धीरे—बहुत धीरे, बहुत बोझिल स्वरमें—कहीं गलतकी धारातक कर्कश न सुनाई दे—हारानबन्धने कहा—अपू, आब मुझे दो रुपये देने होग।

कल्याणनी कुछ नहीं बोली।

“मुना तुमन ! लो गई क्या, आब मुझे दो रुपये देने ही होंगे।”

कल्याणनीने बरबट लो बरसी, पर बोली नहीं। हाणनबन्धने कल्याणनीके धीरेपर हाथ रखकर कहा—बोली लो !

कल्याणनी आन्धी बोली—बेकर भिन-भिन क्यों करते हो ! कहींस हूँगी !

“क्यों ! तुम्हारे पास नहीं है क्या !”

“नहीं।”

“हैं क्यों नहीं ! बड़ी बस्तत है। आब यह इतनी दया मुझपर करनी ही होगी।”

“पास होंगे लमी लो दया करेगी।”

‘दो रुपये लो तुम्हारे पास बकर ही हैं। मैं जानता हूँ कि हैं। रुपया न होनेसे घरके लाग लानेकी नहीं पाठे, अपने रींगी लड़केके मुँहका लाना लीनकर मैं लू लया हूँ। लम्बा और पुयास मरी लकी फरी बा रही है। अपू, आब मुझ बचाओ।’

कल्याणनीने फिर कहा—हो तब लो बचाऊँ ! मेरे पास एक पैसा भी नहीं है। अपनी हाणनबन्धकी श्रेय यह भाया। बोले—क्यों न होग ! इतने रुपये मैंन तुमका दिये हैं, और आब किन्तु-कलमें दो रुपये भी तुमसे मरी निकलने ! अण्डा लामी लओ, लकू लोकर देलूँ, रुपये हैं कि नहीं !

कल्याणनीकी आँसुमें पैस किठने लुरी लीक ली। एक लकू लओकर लण करके लर लठ लठी। श्रेय और रुपये मरे नेलने हाणनके मुँहके लकर लीः हरि लिआकर ली—क्यों, तुम लीन हो, लो तुमके लकू लकी लानी दे लूँगी

वह छोटी बातिकी है—नीच बात कहनेमें उलझी बचान नहीं सकती।  
उठने बनावात हो नीचकार करके कहा—बच मुझे तुमने रखा था तब रुपये  
दिये थे इतकिए क्या तुम्हारे हुरे समयमें वे फर हूंगी ?

हायनबन्ध मुँह एकदम खुली-सा हो गया। कल्पाननीके मुँहके सामने  
वह कमी लगे नहीं हो सकते; भाव भी नहीं हो सके। निहायत नरम होकर  
बोले—तो भी प्यारके लबाबमें तबही कुछ ठपकर करना होता है ?

कल्पाननी हनकर बोली—क्या प्यार है। ऐसे प्यारके मुँहमें क्या !  
वीन महीनेसे क्या तुमने एक भी पैसा दिया है जो तुम्हें प्यार करेंगी ?

“ छिः ! ऐसी बात न कहो क्यूँ—तुम्हें क्या मुझसे प्यार नहीं है ? ”

“ रची मर भी नहीं। हम ल्येमाँच बहों पैठ मरता है, बहों प्यार होखा  
है। हम क्या तुम भोगोंकी धरकी बोरु है कि गलेपर कुटी फेरने पर भी  
प्यार करेंगी ? तुम्हारे सिवा क्या मेरी और गति नहीं है ? जिससे अपना मिळता  
है, उरीक्य हम आहार करती हैं—प्यार करती हैं। बाल्यो, पर बाल्यो—इतनी  
उलझे रिक्त न करो।

“ क्यूँ, तब क्या समाप्त हो गया ? ”

“ समाप्त हुए बहुत दिन हो गये। इतने दिन बँसोंके वीक्य मैंने कामने  
कुछ नहीं कहा। अब जब तुमने बात छोड़ी है तो तब लख ही कहती हूँ।  
तुम्हारा सम्भाव-बलिहारा कारण है—मेरे बहों अब न आना। क्यूँ भोगोला  
रुपया खुणकर जेस का रहे ब—नौकरी-बाकरी मही है, किसी दिन मरे ऊपर  
भी हाथ सपा कर बैठोग। उक्त यही अन्वय है कि परहेते ही अपनी राह  
देते। अब बहों न मुकना। ”

हायनबन्ध बहुत देर तक उठी आहार उठी दृष्टमें मौन होकर बैठे रहे।  
इतके बाद नीचे नीचे फिर उठाकर कहम लग—अप्य बही होगा; मैं बहों  
अब न आऊँगा। तुम्हारे ही घरमें मेरा तब गया—मरी तब दृष्टाएँ हुरे।  
तुम्हारे ही कारण मैं बोर बना; तुम्हारे ही कारण मैं सप्यत करसया; तुम्हारे  
ही कारण मैं अपनी ली और पुबको मृत्यु हुआ हूँ। अन्वय तुम्हें—

हायनबन्ध कुछ देर ठहरकर फिर बोले—भाव मेरी बँसों खुल गई—  
उपकी कल्पाननी भी नरम पड़ी। प्योत्रा मिलकर हायनक कुछ पल  
बैठकर बोली—मगवान् तुम्हारी बँसों ल्येक है। हम छोटी बातिकी भीरते हैं,

छोटी बालिका है; लेकिन यह समझती है कि पहले श्री-पुत्र पर-भार, उसके बाद हम—पहले पेटकी रोटी, पहननेके कपड़े, उसके बाद सब चौक और नया-पानी। मैं तुम्हारा भुग नहीं चाहती। तुम्हारे मलेके सिर्फ ही करती हूँ कि सब वहाँ न आया करो, गीना-मदकके अंशमें अब न आओ। पर आओ, बाहर अपनी स्त्री और पुत्रको देखो, पर सैम्यम्मे, नीकरी-बाकरी करो, लड़का-बन्वोंको दो और आनेका अब भुगओ। उसके बाद भी पारि तो नहीं आओ।

आत्यामनीने पैसेसे उठकर बस लोकर दस रुपये बाहर निकलके और हायनचन्द्रके समन रलकर कहा—ये छे जानत।

हायनचन्द्र वेर तक तिर छत्रमे भुग बैठे रहे। इसके बाद तिर दिककाल बोसे—भुग नहीं चाहिए।

कालाबनी भग हैती। हायमे हायनचन्द्रअ मुँह ऊपर उठाकर बोली—देखा, वो कुछ जानता न हो उसके कठो—अभिमान करो। ये रुपये न छे बायोग का कम तुम लकको ठपाठ ( ठपगत ) करना होग, यह जानते हो ?

“ क्यों ? ठपगत क्यों करना होग ? ”

“ तुम्हारे वहाँ कुछ भी नहीं है—भूमी मँग भी नहीं। ”

“ तुमने कैसे जाना ? ”

“ अभी तुमने आप कहा था कि लड़केके मुँहका और छीनकर लपका है। ”

“ ओ— ”

“ देखल यही नहीं। तुम इतनी बातें न भी करते तो भी मैं सब हाज जानती थी। मैं आप तुम्हारे घर बाहर सब देख आई हूँ। ”

“ यह क्यों ? ”

“ परस बाग्य तो यह है कि औरत बालिका समझ ही यह सोचा है—पर सब आप ही देखनेकी इच्छा होगी है। सलकर हमारी गिरादरी की। सर्वदेव भुगकर बाद-बाद बीपकर पठे किना हमारा धर्म नहीं आया। तुम मद किन्ने भी हो, हम भीमत होकर भी उतनी नादान नहीं हैं। तुम लोगोंके स्त्री है, लड़के हैं, लगे-सबक है, हर-मिन नादान है—एक बार ठग जानेका फिर एक बार ठग लक हो—सकल लक हो। लेकिन हम—हमार आई नहीं है। हम एक बार अगर भोगा गा गई तो फिर उबर मरी सद्यी। हम लक

मर जायेंगी तो किसीको हमपर इया न आयेगी। खेप करते हैं कि किसीको कोई नहीं, उसके मरना ही है। हमें यह मरना भी नहीं है। इसीसे लव बीबल का खानाभानीसे भाव देख-कुनकर पाल बिना करी हमारा निवाह हो लकटा है। समझे ?

खान पकटा है, अत्यापनीको बनेय हो रहा था। वे लव शर्ते करते करते उठकर, अचानकसे खिच ही लगी, इतरपमें कुछ व्यपका अमुमक करना निरन्तर अस्वामानिक नहीं है। किन्तु गुण ही उठने उठपर परा डाल दिया। हाउन-बनरके मुक्तकी बरा शिष्यकर करा - मैंने जो करा, लव समझ गये म ? ये बपये अयगी स्त्रीके हावमें देना—तो कुछ दिन मरसे कर जायेंगे। अपने पाल न गमना। कुना ?

हाउनबनरने अन्वमनलक मरसे गर्दन शिष्यकर करा, "हैं।"

"एत आरा हो गई है। भाव अच करी न जाओ। परी लो रही।"

## ६

लवानन्द बालकृष्णके यौवके आये खेप 'लदा दारा' और आये खेप 'लदा पगल' करते थे। एत इष्टपुर गौर्में ही उलक पर है। उसके पिता कहर हिन्दू म। बीगरेबी श्लेषको मांग है, बीगरेबी फूनेसे कर्म नख हो लकटा है, इन अर्थकासे उन्होंने पुनको सिक्ता-फूना नहीं लिजाया। और फूनेकी बकल हो क्या ? जो एत-यौव बीब अमीन है, उससे पराई नौकरी म करनी पड़ेगी। फिर बेकार जाति नख करनेसे क्या अम ? कोई कहता था कि लवानन्द संस्कृत जानता है, कोई कहता था कि नहीं जानता। पाहे जो हो, एत बिरपमें मरभेद है। किन्तु वह पगल है, इतमें कुछ भी मरभद नहीं है। पगल-बुद्धे-औरते, लमी लीअर करते हैं कि लवानन्दमें कुछ बोझी-ली अक है। वह बनीनधी रेलमरक करता है, रामप्रसादी० गाने करता है, मुँरे अयना है, एत पर—एत पर बूझता-खिरता है और इती तरह मन्धी मीअमें उतक दिन बीतते रहते हैं। बुरके नाठकी एक हुआके तिया मगरमें अयना करनेको उतके और कोई नहीं। इसीसे गौब मरके बोझोको उतके

राजपतर बंगलबदि प्रसिद्ध बापीव करि हैं। उनके आये बंगलबदे बगुन प्रसिद्ध और बोझिय है।—अनुसारक।

अम्ना बना दिया है। उसके सभी आत्मीय हैं, सभीके साथ उसने एक न एक नागा बोड़ सिना है, सभी परोंमें बे-रोकटोक उसका खाना-माना है। पहले ही यह चुके हैं कि संसारमें उसका अपना कार्य नहीं है। बचपनमें ही सदानन्दके दिग्गजे बहुत-से रुपये पत्र-पत्र लेकर उसका व्याह कर दिया था किन्तु माम्बके दोस्ते सास मरक मीतर ही बहू मर गई। तस्से आब उ सास हुय, सदानन्द अनेक्य ही है। बाहे उतने रुपये कमान कर पानेके धरम हो, और बाहे रक्या न रहनेके कारण हा, उतने फिर व्याह नहीं किया। इन सोगोको कार्य रुपये मूख्य देकर व्याह करना पड़ता था। कोई फिर व्याह करनेकी बात बसप्रा तो वह इतना उठस करके कहता—इतने रुपये कहाँ पाऊँ या व्याह करूँ !

आब ठोकरे पहर आकाशमें सूर्य बादल घिरे थे। सारी प्रकृति निधस, निलम्ब हो रही थी। प्रकृति ऐसा मूच धारत किये थी, जैसे पाहे तो धमी नूकडपार पानी बसा दे और न बाहे तो शापद धमी और तीन-चार घण्टे पानी बगाना रोके रहे।

×                    ×                    ×                    ×

हुभा राममबिने मदीनीको बुसकर कहा—ओ सन्ना, परमें एक बूँद भी पौनस्य पानी नहीं है। बटपर बाउसे एक कम्पी पानी तो ले आ बेई।

सन्ना कम्पी बालमें दाककर गग-बाउपर भाई। बस भरकर हो पग आगे चूते न चूते दाहसोने बड़े पड़े बूँद गिरने लग। सन्ना तेजीसे पैर बढ़ाकर बलन छोड़ी। उसी घरमें सदानन्दका घर था। राहके किनारे ही छत्राछाये परामदमें बैठा हुभा सदानन्द उठ समय समदसादी सुनमें कासीजीका पद गा गग था। सन्नाको आते देखकर गाना रोकर उतने कहा—सन्ना, भीग क्यों रही हा !

सन्नाने तनिक हँसकर कहा—तुमने गाना क्यों बन्द कर दिया !

सदानन्द भी हँस दिया। हँसी और गाना आठों पहर उसके मुर लग ही रहत य। मुर बगै बन्ध—गाना धन गया।

† बंगालमें कुनैन ब्राह्मणोंके तो रिवाजमें धन मित्र्य है, किन्तु एही बेगीक ब्राह्मणोंके बरत बन्धुत्वके रूपमें देना है। बन्धुत्व बरतहोके जो धन देना है उसे बीजुक का धरम बने है। बरत न धन बन्धुत्वके देना है, बर धन ( नूत ) बरतना है।—बन्धुत्वक

फिर स्वामासिक स्वामी कहा—इत बातको छोड़ो । बेघर न भीजो । यहाँ बर  
 डेर ठहर जाओ ।

छात्रा बचपदेमें आकर लड़ी हो गई ।

स्वामानन्दने उसके मुँहकी ओर कुछ डेर ताककर कहा लड़ी मत रहो,  
 पर जाओ ।

छात्राने कहा — यह क्या ?

“ बुआजी यही नहीं है । क्याता बीरसे बरतने क्या तो जाओगी कैने ? ”

छात्राने मनमें सोचा, यह भी ठीक है । यह हो पय आगे बड़ी, किन्तु फिर  
 जैद भारी ।

स्वामानन्दने कहा—सीट क्यों भारी ?

“ कब यह मुझे दुखार आ गया था । स्वामी भौमनेसे तकसीफ क  
 सखी है । ”

“ तो फिर न जाओ, यहाँ लड़ी रहो । ”

तब स्वामानन्द-भयनी मौझमें गाने लगा—

“ कभू तारे पाके ना भूमि, भिडे हस्त चाहाये दौजाये आठि ।

कन कणकव जवडे धरि, तूई की धनधि पायापी मा ।

आमार खेनार तरी ब्रह्म ए बार—”

[ अर्थ — मैं लमल्ला हूँ कि उसे कभी नहीं पाऊँगा । ( उसे पानेके सिर )  
 व्यर्थ ही हाथ बढ़ाये लड़ा हूँ । किन्तु क्याअन कब मर रहा हूँ—यह तू  
 पायापी मर क्या धानेगा । अकधी मेरी खनेकी माव ब्रह्मेगी— ]

छात्रा कसमी नीचे-रखकर गाना-सुन रही थी । सीट गडवा मीठा गन  
 उम बढ़ा बचपदेमें खा रहा था । एकाएक बीचहीमें एक धामने छात्रा कह  
 उठी—यह क्या, एक क्यों गये ?

“ अर नहीं गाऊँगा । ”

“ क्यों ? ”

“ भाग यह नहीं आया । ”

छात्राने मुसकरकर कहा—तो फिर माथा ही क्यों ?

“ मैं या ही गाय रहा हूँ । ”

इतने बाद कुछ देर आकाशगद्दी और टाककर बोस्य—मेपके ऊपर कमल सिखा है, हुमने देख है ।

सुमदाने हँसकर कहा—क्यों, मैंने तो नहीं देख्य, हुमने देख है ।

“हाँ, देख है ।”

“कब देखा ?”

“प्रायः ही देख्य हूँ । जब आकाशमें बादल होत है, तमी देख पठा हूँ ।”

सदानन्दके मुसक्री समीर मुठा देखकर सुमदाने हँसी आ गई । मुहमें कपड़ा देखर उसने कहा—बह मी कही होना है ।

“क्यों न होय ? कमल तो बसमें ही फूट्य है । बादलमें मी बस्य अय्यर नहीं है । फिर वहाँ क्यों न कियेगा ?”

“मिछी न रहनेपर क्या लाबी बसमें कमल फूट्य है ?”

सदानन्द सुमदानेके मुसक्री ओर बहुत देर तक टाकते रहनेके बाद बोस्य—परी ठीक है । इसीसे सुमना बा र्या है ।

सुमदाने फिर कुछ मही कहा । तमी ध्यान व कि तया पगस्य दिनमें ऐसी बनेके अशक्य और असंभव बातें क्यता रहल्य है ।

कुछ देर मौन रहकर सदानन्दने फिर कहा—अच्छ सुमना, धारदा अब हुम सोपेके बर नहीं बाल्य ।

सुमदाने हँसती ओर मुँह फर मिया । ध्यान पड्या है, उठ समयक अपने मुसक्री बह दिखाना नहीं चाहती थी । सदानन्दने फिर पूछ —नहीं बाल्य ।

“नहीं ।”

“क्यों ?”

“तो मैं नहीं बह मच्छी ।”

सदानन्दने फिर मना चुन कर दिया ।

सुमना थम गया किन्तु क्या किन्ती तरह धमना नहीं चाहती । बसि आकाशमें बादल और दहरे होने लग । सुमदान बलक्री बलक्री उठकर कमर रकनी । देखकर सदानन्दने कहा—बह क्या, बानी कहीं हो ।

“पर बाँकेगी ।”

“इतन पानीमें बानेके बुझार कद न बापय ?”



फिर स्वाभाविक स्वयं कहा—इस बातको छोड़ो। बेकार न मींगो। वहीं बरत  
देर ठहर बाओ।

कहना कानसेमें बगकर लड़ी हो गई।

उदानन्दने उल्लेखें हुरकी ओर कुछ देर ताककर कहा लड़ी मत रो,  
पर बाओ।

कहनाने कहा—यह क्या ?

“कुआओ परमे नहीं हैं। क्याओ खेरसे बरसने म्मा लो बाओगी कैसे ?”

कहनाने मनमें खेबा, यह भी ठीक है। यह हो प्मा भागे लड़ी, किन्तु फिर  
कोट भाई।

उदानन्दने कहा—कोट क्यों भाई ?

“कस रात मुझे सुखार ब्य गया मा। कसमें मींगनसे लक्ष्मीक बड़  
लफटी है।”

“तो फिर न बाओ, वहीं लड़ी रो।”

तब उदानन्द-अपनी मौजमें घने बना—

“कभू तार पावे ना बूति, मिछे हात बाड़ाये दौड़ाये भावति।

कन क्वासाय ज्जडे मरि, दुई कर्म बावधि पागामी मा।

आमार खेनार तरी बूबवे ए कर—”

[ धर्य - मैं समझता हूँ कि ठसे कमी नहीं पाऊँगा। ( उसे पानेके छिप )  
अब ही हाथ बड़ाये लड़ा हूँ। किन्तु क्वासायसे बरत मर प्मा हूँ—यह ए  
पागामी मा क्या जानेगी। अन्धरी मेरी खेनेकी नार बूबगी—]

कहना कलसी मीच-नककर गनना-मुन रही थी। मीठ गलेख मीठा मान  
उसे बड़ा अक्ख'का प्मा वा। एक्ख'क बीचहीमें एक बानेग कहना कह  
उठी—यह क्या, एक क्यों गय ?

“अब नहीं गाऊँगा।”

“क्या ?”

“आगे पाह नहीं बाओ।”

कहनाने मुनककर कहा—तो फिर गावा ही क्यों ?

“मैं जो ही गाय रहता हूँ।”

इसके बाद कुछ देर आत्मघाती ओर ताककर बोला—मेरे ऊपर कस्त  
लिया है, तुमने देखा है ?

सम्माने ईतदर कहा—कहाँ, मैंने तो नहीं देखा, तुमने देखा है ?

“हाँ, देखा है।”

“कब देखा ?”

“प्रायः ही देखा हूँ। जब आत्मघातमें बादल होते हैं, तभी देख पाया हूँ।”

सदानन्दके मुसक्री गम्भीर मुद्रा देखकर सम्मानने ईसी आ गई। मुँहमें  
कपल देकर अपने कहा—यह भी कहीं हुआ है ?

“क्यों न होमा ? कस्त तो कर्मों ही पूर्य है। बादलों में कस्त  
आभाष नहीं है। फिर वहाँ क्यों न लिनेमा ?”

“मिठी न रहनेपर क्या काली कर्मों कस्त पूर्य है ?”

सदानन्द सम्मानने मुसक्री ओर बहुत देर तक ताकते रहनेके बाद बोला—  
यही ठीक है। इसीने कस्त का र्सा है।

कस्तने फिर कुछ नहीं कहा। सभी जानन वे कि मरा पलाय दिनमें ऐली  
अनेक कस्तम और अस्तम बाटे करता रहता है।

कुछ देर मौन रहकर सदानन्दने फिर कहा—कस्त कस्तना, सारादा अब तुम  
संगेके पर नहीं बाप ?

सम्मानने बूतरी ओर मुँह फर किया। जान पला है, उत समयके अपने  
मुसक्री वह दिखाना नहीं चाहती थी। सदानन्दने फिर पूछ—नहीं बाप ?

“नहीं।”

“क्यों ?”

“तो मैं नहीं कह सकती।”

सदानन्दने फिर सन्ना शुरू कर दिया।

सन्ना यम गया, किन्तु क्या किसी तरह समझ नहीं चाहती। कस्त आघातने  
बारक और गहर होने का। सम्मान कस्तरी कस्तरी उदाहर कस्तम कस्तरी।

देखता सदानन्दने कहा—यह क्या, बापे वहाँ हो ?

“कह बाँझी।”

“इतने सन्नि कस्तने कुकर क्द न बाप ?”

“ क्या करूँ ! ”

कठनाके बाले जानेपर तहानन्द फिर गुन्गुनाते लगा ।

### ७

हातानन्दमें सब स्त्रीके हाथमें पूरेके पूरे हथ रुपये रख दिए, तब सुमनवाके मुक्तमें ईसी फूटकर मी फूटने न पाई बल्कि मुक्ता गई । उठने फिर छत्रमे हुए पूछा—ये रुपये तुमने क्यों पाये ?

वह मी ये रुपये स्त्रीके हाथमें हैंकर नहीं दे लड़े । कुछ बेर निबत्तर रहकर बोले—छामरा, तुम्हें क्या यह जान पड़ता है कि ये रुपये मैं चाटी करके क्या हूँ ?

सुमनवाका मुक्त और मी मस्तिन हो गया । उसके पापी अन्तःकरणमें यह बात घायब एक बार उदित हुई मी किन्तु वह क्या करी या लपटी है ? ईस्वर न करे, किन्तु यदि नहीं हो तो क्या ये रुपये लेना उचित है ? खोरीख पैसा लानेके पहले वह अनाहार रहकर मर लपटी है—लेकिन और तब श्रेय ? प्राणाधिक पुत्र और कन्याएँ ? सुमनवाने समझा कि इस बातकी आलोचना करनेका यह समय नहीं है, हठीसे वे रुपये उठने लम्बूमें बन्द करके रख दिए ।

कुछ कुछ मुक्त और लम्बूबन्धसे फिर बिन करने लगे । हाथन मुक्तकी आबकल हठरपुरमें बहुत कम दिखते हैं । पर आने पर उन्मदि अमर पूछती है कि तू बिन मर क्यों रहता है रे ? तो हातानन्द कह देते हैं—मुझे फिटने ही समय है । नौबरीकी लम्बूमें बूझा फिटा हूँ ।

सुमनवा मी अपने मनमें लम्बूकी है, बरी लम्बू है क्यों कि अब वह लम्बू देने मौगने नहीं आते—‘कम दे देंग’ कहकर अब हा आने पार आने उपायक नाम पर नहीं ले आते । हाथन बाबू क्यों रहते हैं, वह कोई अमर मुक्तम पूछे तो मैं क्या लूँगा, क्योंकि इसे मैं जानता हूँ । वह दिनभर किना कुछ जाय-दिय, बिना बिनाम किये नौबरीकी उम्मदबारीमें बूझते हैं । फिटने ही लम्बूक पत्र बाकर अपने बुन्तकी कहानी कहत है । आदितियोंके पास—यहौनक कि माम्बूरी बूझनदारोंके पास मी राता-वही सिल देनेकी प्रार्थना बत्तकर कम पानेकी श्रेष्ठिय करते हैं; किन्तु बरी मी कुछ डौल नहीं लगता । उत तब

## धुमदा

अधिकतर समय उन्हें बानते-पहबानते थे, इतीकिय कोरं विवाह करते उनको गलना नहीं चाहता। सप्याके समय हापनबन्ध लम्बा हुआ मुँह सिधे पर होए आते हैं। धुमदा मस्तिष्क मुहामे मुक्तसे पूछती है—आब क्यों लावा-पिया ? हापनबन्ध श्रीके प्रपनपर हैसनेकी चेष्टा करते हैं। कहते हैं—मुझे लानेकी प्रेन कमी है ? मुझे कौन नहीं बानता ?

धुमदा फिर कुछ नहीं कहती, पुन हा जाती है। बीर बीरे उसकी कल्पनीका बस लम्बा आ रहा है—इससे पुकते वा रहे पर नहीं बर पती किन्तु धुमदा अपने स्वामीसे मुँह फोड़कर अपने ही मनमें, जो कुछ पूबी है उठीका हिसाब लगाया करती है। केवल आब तीन दिन बाद बनी एत बीजे यके-भीदे स्वामीके दोनो पैर बजाते वषाते, मन ही मन पुन-बिषय, तर्क-वितर्क करक धुमदामे स्वचारीसे मुँह फोड़कर कहा—आब कुछ नहीं है; तब इपये पुक गय।

हापनबन्धने अँसिँ मुँहकर सम्पन्न तापारज भावसे कहा—रत इपये भीर कितने दिन बस रहने हैं।

भीर कुछ नहीं कहा। दोनो ही बने गत एतको पुन रहे। धुमदामे लोबा पा कि बस क्या होगा—पर बर पूछ ल किन्तु पूछ न सकी। किना कारण भाव ही भरतापी बनकर पुन गरी। अपने छोबा पा, लख करते-करत इपये क्यो पुक करते हैं, इलके सिधे उम पतिथी बिप सिद्धकी मुननी पोगी। तबमुब ही सिद्धकी सिन्धेवर शायर बर लघार देनेका, उनका दार रहने नहीं है—पर कानेरा प्रयास करनी किन्तु उनका बरते तहानुमृति पाकर उनका मुँहमे बल नहीं शूय।

पूठरे दिन तबय होद-न-हाव ही हापनबन्ध पर गय। लम्बा बैसे नित्य पाका बान-गाब करती थी, अपने कमी। लम्बनि नियमित ज्ञान पर आकर मिशीकी पिान्नी बनाकर पामे बैठकर पूबा करने कमी। केवल धुमदाक हाव देर नहीं पन्न। कुरहाव हुए परम कमी रबर कमी तब बैठकर अन्तक बर एक बगद बैठ गी।

आठ बने देगकर लम्बाने कहा—मा, तुन कब नहाने-पने पाकर नहीं रहे ? दिन हा बहुत पर आया है।

“अभी जाती हूँ।”

छम्पाने फिर कुछ देर बाद खीर खाकर बेच्य, उसकी मा उसी बगह उसी तरह बैठी है। विभिन्न होकर वह बोली—क्या हुआ है मा ?

“कुछ नहीं।”

‘तो फिर इस तरह बैठी क्यों हो ?’

“और क्या करूँ ?”

“यह क्या ! नहाओमी नहीं ? रोज़ न बदाओमी ?”

छम्पाने अपनी दोनों कतराँ बौलें कम्पाने मुसपर टिक्कर डरते डरते कहा—भाव कुछ नहीं है।

“क्या नहीं है ?”

“कुछ भी नहीं है। परमें मुझपर चालक तक नहीं हैं।”

छम्पाना मुँह खल गया। बोली—तो क्या होगा मा ? उनके-बच्चे क्या लारंगे ?

छम्पाने बूली और मुँह फेरकर कहा—ममामान् बाने।

कुछ देर बाद फिर बोली—छम्पाना, एक बार अपनी बिन्दो मुझके पास बा न ?

“कित्त लिए मा ?”

“बगर वह कुछ दे।”

छम्पाना पकी गई। छम्पानाकी बौलेंसे बौलें बहने लगे। ऐसी बात उनके और कमी नहीं करी—इस तरह मिठा मीठानेके लिए कम्पानाकी और कमी नहीं भवा बही बात उनके मनमें आ रही थी। कम्पाना लगी थी, छम्पाना कुछ रीत भी हुई थी। कित्तके ऊपर ? वह पूछनेसे शाबद वह लामिक मुसकी बाद बगके ऊपरकी ओर हाथ ठठाकर कहती—उनके ऊपर !

मामेपर हाथ रखकर वह बेच्यक उसी बगह बैठी रही। कम्पाना म्यारह बरनेका समय हो गया। इधी समय छम्पानाकी एक कृतके फुलके गारे छरीरमें बगना लगेये लगेये और पोटधि मन्थने उनके बहाक-वेरके बडका विमूर्ति बने करते बहोँ खाकर लगी हुई। बोली—मा, लानेओ हो।

छम्पाने बौल ठठाकर उनके मुँहकी ओर देला; किन्तु कुछ कहा नहीं।

छम्पाने फिर कहा—कम्पाना हो गया, लानेओ हो मा।

फिर भी कुछ उत्तर नहीं मिला।

उठ हाथके पुतलेको उठ हाथमें लेकर लखनाने और भी बरा ऊँचे खरसे  
 कहा—रोटी बान पड़ता है, अभी तक नहीं बनी !

सुमदाने फिर हिसकर कहा—नहीं !

लखनाने गरम होकर कहा क्यों नहीं बनी ? तुम याबर बेर तक  
 खेटी रही ।

उसके बाद न जाने क्या सोचकर वह रखेखरमें पुन गई और अत्यन्त  
 विभिन्न और कुछ हाकर विचरकर बोली—बूखमें आम तक अभी नहीं पड़ी !

सुमदाने बाहरसे फिर माफसे कहा—अब खूबा बसजैगी ।

लखना बाहर आकर बोली हुई । माफा मुन देकर अकस्मि वैम वह कुछ  
 अप्रतिम हुई । फिर पल बैठकर बोली—मा, अब तक कुछ हुआ क्यों नहीं !

“अब ठब होगा ।”

“मा, तुम इस तरह खरल क्यों हो ?”

इसी समय अठठीके नीलरसे रोगी मानवने सीम बगठसे पुकारा—ओ मा ।

सुमदा दडबडाकर उठ गयी हुई ।

लखनाने लड़े होकर कहा—तुम बैठा मा, मैं माफके पल बाकर  
 बैठती हूँ ।

“अच्छा तू ही का बेटी ।”

पामे निरकर लखनाने मित्रकीके इरामे मफागल गंग्याप्याबके घरमें प्रवेश  
 किया । किन्तु विन्वबासिनी वहाँ न थी । पहले ही दिन एतकी वह लमुता  
 बनी गई थी । उसे अबानक जाना पडा, नहीं तो वह निश्चय ही एक घर  
 सुमदाने मिकर ही बानी ।

मुसाम मुँरसे लखना और आई । राहमें किनी तरह उनके पैर भाग नहीं पड  
 रर ये । गंगुमीठ वर बाते समय पहले भी लखाके मारे भागे नहीं बड ररे थे;  
 किन्तु अब एतकी हाब की अलके समय उसे और भी अगहा मानस पडने  
 लगी । राहमें एक पेड़के तक वह बड़ी बेर तक गयी रही । उसके बाद न जाने  
 क्या सोचकर और राहस वह कालके पारकी और पली । एन ही लखनाने  
 बडबडीका घर का । बाहर लखनाने एन लखनाने एक लखनाने एतकीके बहुत  
 तरहके लखनाने करके दुख्य रहा था । लखना वही लखनाने लगी हुई । लखनाने  
 मुँर पुकार देला । फिर कहा—लखना, तुम बेते आई !

“बुआ फर्मो हैं ?”

“नहीं। अभी थामी कहीं गई हैं।”

लक्ष्मणा कुछ इधर उधर करके एक पग पीछे हटकर लपरी हो गई।

सदानन्द बड़ोबड़े बुझरना छोड़कर लक्ष्मणाके मुँहकी ओर टाककर बोला—  
बुआभीसे क्या कुछ काम है ?

“हाँ।”

“बह खो परमै नहीं हैं। मुझसे कहनेसे क्या काम न होगा ?”

लक्ष्मणा भी यही लोच रही थी। किन्तु सदानन्दके पूछते ही लक्ष्मणासे उठकर दूर एकदम व्यस हो गया। परमै कुछ सामेकी नहीं है, इलीलिय ब्यार हैं—  
छि। छि। बह बल क्या कही या लफ्ठी है ? छामबाने भी एक रिम डीक मही  
बल खोखी मी भाव लक्ष्मणाने मी मही खोखा—तो मी मुँहसे बोस मही निकल्य।  
बो कमी इस अन्तर्यामै पड़ा है, बही बानता है कि यह कितना कठिन काम है।  
बही केवल समझता कि मने ब्याहमीकी कलती बह करनेमें कित कर बड़कने समती  
है। किन्तु इतना और बल-प्रतिपत्त हो जाता है। करनेके पहल कित तब  
बीमकी हर एक नव बड़ होकर ब्यार ही ब्याव बकड़ जाती है। लक्ष्मणा मुँह बल  
कर कुछ कह नहीं पाई किन्तु सदानन्द जैसे लम्पत गया—लक्ष्मणाके मुँहपर धापर  
भीतरकी बल ललक ब्यार थी, इलीसे अनुमान करके, ईतकर सदानन्दने ठठकर  
लक्ष्मणाका हाथ पकड़ लिया। बह पगल है—बानते थे कि सदानन्द पगलेकी  
मनि रिपर नहीं है। ऐमे अनेक काम बह कर बैठता था, किन्हे और कर नहीं  
कर लफ्ठा था। बिन कामोको करगेमें और खोखोको संशेष हाता था, उन्ही कर  
हाथमें छानकर बह संशेष नहीं करता था—औरका थोमा न देव था बह  
छानकर उमे पब बाण था। इलीसे ठगने बेलकके भाकर लक्ष्मणाका हाथ पकड़  
लिया। ईकन-ईमठं बाण - आब धापर लक्ष्मणाको अपने लहा हाथने सगहा  
मामन हो गरी है ? लहा पागलने कही धाम्मना हेम है ? कि हाथ छोड़कर  
बोस क्या बान है, क्याभाभी नहीं ?

सदानन्दका ललका लर और बातरा मय एक ही तरहका था। बह ईकन ईमने  
मी अनेक ननप पली बा बह देता था, बिन मुनकर औलोका बल भाव ही ठगड  
पड़ता है। लक्ष्मणाके कुछ नहीं था। बबकी सदानन्दने निर ठठकर  
किन्तुन ही गभीर भाव बातर करके कथा—बो री लक्ष्मणा, कुछ बुआ है क्या ?

छम्ना फिर झुककर, लौंठ पीठकर, बधित तारमें बोझी—मुझे एक बपवा हो ।

सदानन्दने पहलेकी तरह, बस्कि और भी धोरसे हँसकर कहा—पह बात है । वह बात शामद सदा बाबासे नहीं कही जा सकती । लेकिन बपये की क्या बकरत है ।

तब भी छम्ना बुर नहीं हुई । छम्ना इधर उधर करके, छम्नासे और भी बोझा बपव होकर बोझी—बाबू परमै नहीं है ।

छानन्दने परके मीठर बुलकर एकक करते पाँच बपव समकर छम्नाक हाथमें क्या दिये । बोझ—बो आदमी कैसा आदमी हो, उससे धारमाना होता है । पातलसे क्या धारमाना ।

इतके बाद दूसरी ओर मुँह सुमाकर हँसकर बोझ—बब कमी कुछ बकरत हो तब इत पयालके आगे आकर खटना । क्यों, कहागी तो ?

छम्नाने देखा, उसके हाथमें बहुत-से बपये क्या दिये गये हैं । इसीस उसने कहा—इतने बपये क्या होंगे ?

“रबे रहनेस तइ न बापेंगे ।”

“न सई, हमें इतने बपयोकी बकरत नहीं है ।”

छम्ना बपये सौय रही है, यह देखकर सदानन्दने फिर आकर उठका हाथ पकड़ लिया और बातर माबसे कहा—छि, लड़कपन न करा । बपयोका प्रपोबन न हो छ और दिन आकर सौय देना । और देख, यह बात किरतिस न कहना । और अगर कहना ही पड़े तो कहना—सदा पयठने बार दना बपया ब्याब पर उघार दिय है ।

दिन इस तरह बीत गया । सपन भोजन किया किन्तु सुमदाने उस दिन बक-बर्सा भी नहीं किया । रातमदिन मालिखों दी, छम्नाने बहुत बार हावा, किन्तु किसी तरह उस दिन सुमदास कुछ गवापा न गया ।

छम्नाके बाद सदानन्दरु कल तिर, पैरमें सुज्जीनक धूमने भरे, घर आन । उनकी धतीके एक सैयमें हो लेके अन्दाज पारस और धुमरे सैयमें सादा-ना ममक, हो-पार आनू, हो-नान परस और ऐसी ही कुछ और चीजे थीं । एक पात्र समर उनको आसकर सपन समय सुमदा से चले ।



सब एक-से नहीं थे — उनमें महीन, मोटे, भुबिया लम्बी मिछे थे। दुम्मा अन्धरी तरह समझ गई कि उसके स्वामी उन छोटे-छोटे छिपे हास-हास मिछा मौलानर यह हक़्त कर छाये हैं।

८

छम्मासे कुछ पहले मापने कहा बड़ी बीबी, जान पाता है, मैं अब अन्ध न हो लूँगा।

छम्माने लोहसे मार्के मापकर हाथ रसकर दुम्माते हुए कहा—क्यों मार, अच्छे क्यों न होंगे ? दो-चार दिनमें ही दुम्मा अच्छे हो जाओगे।

“कितने ही इस तरहके दो-चार दिन बीत गये। कहीं, अच्छे तो नहीं हुआ।”

“अब अच्छे हो जाओगे।”

“अन्ध अगर न भाग्य हुआ ?”

छम्माने उसके दोनों दुर्बल धीन हाथ, अपने हाथमें छेकर कुछ गम्भीर होकर कहा — कि, ऐसी बात मुँहपर न बनी चाहिए।

मापने फिर कुछ नहीं बोला। चुप हो रहा।

कुछ देर बाद छम्माने कहा — मापू, कुछ लापस्य क्या ?

मापने फिर हिंसकर कहा — मा।

कुछ देर बाद ही औरत जानेका समय हुआ। छम्माने एक छदे-से कौनके मिछा-में थोड़ा-सा लकड़ प्यक चीरसिं हासकर मापनेके मुँहके पाल से बाहर कहा पियो।

मापने परलेकी तरह फिर हिंसया। दया वह किसी तरह न लावे-पियेगा। वह ऐसा माप ही करता था, कड़वी कड़कर किसी तरह दया पीना न चाहता था। किन्तु कुछ बोर दण्ड ही क्या लेता था।

“कि, दुष्टता नहीं करते — पी छ।”

मापने मिमल हाथमें छेकर लारी दया नीच दण्ड बी।

मापने और कभी ऐसा नहीं किया। छम्मा विभिन्न दुर्ग, नागव दुर्ग। बोली — वह क्या मापू ?

“ मैं क्या बचा न साऊँ-पियूँगा । ”

“ क्यों ? ”

“ बेकार क्यों साऊँ ? अगर अच्छा ही नहीं होना है तो बचा साकर क्या होगा ? ”

“ कितने कहा कि अच्छे न होये ? ”

“ मायब चुप रहा ।

लक्ष्मणा पल आकर बैठी । उसके घरीपर हाथ फेरकर बोली—मेरी बात नहीं सुनोगे माधू ?

बाबू-सुम्मम अम्भिमान ( बठने ) से उलझी ऑल्लोसिं ऑल्लू उसक भाये । बोला—मरी बात कोई नहीं सुनता—मैं भी किसीकी बात न सुनूँगा ।

“ कौन तुहारी बात नहीं सुनता ? ”

“ कौन सुनता है ? मैं कबरे बात पुछता हूँ तो मा लख होती है, बापू लखा होते हैं, हुआ बालवी नहीं, छम भी नयाब हाती हो । फिर मैं क्यों बात सुनूँ ? ”  
मायबकी ऑल्लोसिं ऑल्लू डुलक पड़े ।

लक्ष्मणने स्नेहसे ऑल्लू पोंछकर कहा—मैं तेरी बात सुनूँगी माधू ।

‘ तो बलाओ, मैं अच्छा न हुआ तो क्या रोत्र हली तरह पद्म रहूँगा ? ’

“ पड़े क्यों रहोगे ? ”

“ ता क्या होगा ? ”

लक्ष्मणाट होठ कुछ कौतर गद गये । वह कुछ कह नहीं सकी ।

मायब कुछ देर उतरक मुँहकी ओर लाज्जा रहा । फिर बोला— बड़ी दीदी, हम लोगोका छेय मारि बाहू हली तरह बीमार हुआ था, लेकिन वह अच्छा नहीं हुआ । उसके बाद मर गया । बाहू छय, मा रोई, सब लोग रोये । मा आबतक गयी है किन्तु वह छिर नहीं भाया । मैं भी अगर उकीओ तरह मा जाऊँ ।

लक्ष्मणने दोनों हाथसे अपना मुँह टक लिया । और छयप होला तो वह निराकार करके उतरा मुँह फेर कर वली; किन्तु हम छयप वह ऐसा नहीं कर सकी । मायब भी कुछ गद चुप रहा । हलक बाद बोला—क्याओ न बड़ी दीदी, मर जानेस कहा जाता है ।

लक्ष्मणने मुँह तैब लपकर कहा—कुछ नहीं, किई हम छेय रोयेंगे ।

बान पड़ता है, वह उस समय भी रो रही थी।

नहीं जानते, माधव कर्मस पावा या कि नहीं, किन्तु वह भाव छोड़ना नहीं।  
अनेक दिनोंसे बिस बातका बाननेके लिए वह ब्याकुल हो रहा है, वह भाव  
तब बान लगा। इसीसे उठने फिर कहा—दीदी, मर जानेपर क्यों बाना होता है ?

लक्ष्मिने ऊपरकी ओर नजर उठाकर कहा—ऊन बगह, भावयके ऊपर।  
भावयके ऊपर ? बातक्यो बड़ा विस्मय हुआ। बोस—लेकिन वहाँ किन्के  
पात्र रहुँगा ?

लक्ष्मिने बूकी ओर ताकते हुए कहा—मरे पात्र।

माधवको बड़ा लस्योव हुआ। ईत्कर बोस—तब तो ठीक है। अन्ध वहाँ  
क्या हम लस्योका पर है ?

‘हाँ, हे।’

‘तो और मी अन्ध है। हम होने बने वहाँ मजेमें रहें—क्यों ?’

‘हाँ।’

लक्ष्मिने मन-ही-मन प्रायना की कि भयवत्, ऐसा ही हो।

माधवने हाथसे उलझ मुँह अपनी ओर फेरकर कहा—वहीं दीदी, वहाँ जो  
की पाद वही कानेको मिळता है—क्यों ?

‘हाँ, मिळता है।’

‘वहाँ बहुत-से बनार हैं ?’

‘हाँ।’

बाक्यने सुनीसे ईत्कर करबट बरबी। बेने इतना भानन्द वह एक करबमें  
एक ही तरहसे पड़े रहकर लस्यून उपभोग न कर पावेगा। किन्तु बेस ही फिर  
लक्ष्मिनीकी भार पुनकर बोस—दीदी, कब बसना होगा ?

‘माधू !’

‘क्या दीदी ?’

‘मागे छोड़कर नू बेने बावगा ?’

‘वहाँ, मा भी तो बपेगी।’

‘अगर न बाप ?’

‘मैं हुन्पकर ल बाँटिगा।’

अच्छी मायब बड़ा खिन्न हुआ। बोस—दीदी, मा क्या बहों कमी न बापमी ?

“बापमी, लेकिन बहुत दिन बाद।”

“क्यों हब नहीं। हम पहले बाँटेंगे; न हो, उसके बाद मा भा बापमी।”

कुछ देर चुप रहकर फिर बोस मासे पूछ न सिवा बाप ?

“मही। पर बात मासे करने पर बह भी न बाँटेंगी और मुझे भी न जाने देंगी—समझे ?”

माबबने डरते हुए कहा—छो फिर न पूछूँगा। तुम अब मुझे दबा पिछकर बाहर लामो-सिमो। मैं छेदा रहूँगा।

बहा पीकर ऊपरसे बग़ाचा लाकर—पानी पीकर माबबचन्द्र मुझी मनस आकाशकी बात खेचने लगा। बहों न जाने क्या क्या करेगा, कितना घूमे कियेगा, कितने बनार बापगा, दो-चार मीचे माके पाठ फेंक देगा। अपने अपने पके बनार बाप लाकर छिक्के छम्ना दीदीके खीच खीचकर मारेगा उन छिक्केमें एक दाना भी न छोड़ेगा। छम्ना दीदी उसके मोंगीगी—सुधम्मद करेगी, बहुत मोंगीगी तब बह एक फेंक देगा। और भी न जाने कितने लकड़ों-हज़ारों का जेरी लपी मन-दी-मन तैयार करेते करेते मायब उन रात खे गया।

और सन्ना ? बह भी रातभर किलीको न देख पड़ी। सुभा धतनगि, मला गुमदा, छम्ना, हायनचन्द्र, सभी कितना ही पुनाव किये किन्तु उतने किली तरह ऊपरकी खेठरीका द्वार न खोलत। कल बही बबाब देती रही—किमें बड़ा दर्द हो रहा है मुझे पुकारो नहीं—मैं किली तरह ठठ न पाऊँगी, हस्यादि।

बूते दिनुसे माबबचन्द्र कुछ और तरहका हो गया है। बह यों ही घान्त लकड़ा था, बखतर और भी घान्त हो गया है। अब बह अपनेमें निम्कल भापति नहीं करता। बह न लौकना, बह हो बह न लौकना, बह हा - हत तगहकी बिद एक बार भी नहीं करता। आबबबब सरा प्रकल प्रकल रहता है। मा अगल कमी पूछती है कि मायू कुछ बापगा क्या ? बह बह देता है—सिमो।

“क्या है ?”

“छो कुछ हा, बही दे हो।”

बही दीदी पल देती रहती है, तब तो बोस बात ही मरी। बाबों बने सुरत

बुपके बहुत बातें करते हैं, बहुत परामर्श करते हैं। किन्तु किन्तीके भा पाने पर तत्काल बुप हो जाते हैं।

अब हारानचन्द्रकी पहचानीमें कैसा ज़ेद नहीं। अब बहुत अनधन या तंगी होती है, तमी कम्पना हो एक रुपये निकलकर दे देती है। शुभरा जानती है कि रुपया कहींसे आता है; यद्यपि खोजती है कि रुपया कहींसे हारानचन्द्र के आते हैं; हारानचन्द्र खोजते हैं—बुप क्या है। अब कहींसे आता है, अब कहींसे भी आये। मैं कहींसे आऊँगा। हाँ, एक रात आकर उस रात ही उनके मनमें आती है—एक रातके लिए उनके मनमें चिन्ता व्यक्त होती है—बह चिन्ता असीमकी माताके सम्बन्धमें हुआ करती है। बीच बीचमें उन्हें मर होता है कि घायल ठण्डा अन्धाल पकरम लूया जा रहा है। और घूर ही घाय तो उपस्य क्या है। मन बहाक रुझे मर की असीम कहींसे मिल सकती है। तिस तरहसे हो, और बाहे जो कले हो, अब देखकर जानेको चार रोपियों मिल जाती है, तब उन (असीम) के लिए मन न लग्न करेगा। अगले दिन आनेपर तब फिर हो जायगा। इस समय बेमे हैं वेत ही रहें।

कुछ दिन बाद हारानचन्द्रकी बुधा एक दिन भड़ गई। तदानन्दसे बोली—भैया, मुझे एक बार काशी-बामके दशन करवा। कुछ ठिकाना नहीं कि अब मर जाऊँ। वह जान ही क्यों सकता है। इस समय कमसे कम एक बार काशी-मिथनायक ती दशन कर दें।

तदानन्द बुधाकी किन्ती बातमें आपत्ति नहीं करता। इनमें भी आपत्ति नहीं की। दो-एक दिन बाद काशी जाना तय कर लिया। थानेक दिन लम्बा बेला, 'कम्पना, कम्पना' पुकारत-पुकारते वह एकदम कोठेस चढ़ गया। कम्पना उन समय ऊपर ही थी, तदानन्दका दलने ही उठकर लड़ी हो गई। तदानन्द बोलीके लूँ में पत्थरक समस्य रुपये बीच धराया या उन्हें लोकर एक लकियेके नीचे रखकर कम्पनेके बाद बोला—हम आज काशी जाँयेंगे। अब लोटेगे, कुछ कर नहीं सकता। अगर करत पड़े तो हमें मर करना।

कम्पाने विभिन्न शंकर कहा—रुठने रुपये ?

नाच ही नाच तदानन्द भी हैतर बोला—किन्ने रुपये ! पत्थर रुपये कुछ प्यारा रुपये नहीं हात। कम्पनेमें बहुत-से भयान हैं, किन्तु लकियेके समय लकिये करनेमें बहुत नहीं हात।

“ किन्तु इतने—”

बात पूरी न करने देकर सदानन्द एक तरहसी हस्तमंगी करके एकदम नीचे आकर रत्नोंभरने शुभदाके पास आ बैठा।

“ बाबीजी, आज हम कपड़ी का रहे हैं। ”

शुभदा यह कथर सुन चुकी थी। बोली—कम सौन्दर्य ?

सदानन्दने कहा—यह मैं कैसे कहाँ ? भग्न हूँ, कुभाषीके कपड़ी देल चुकनेके बाद ही सायन खैर आऊँगा।

शुभदाने एक समीचीन खेदकर कहा—हाँ, लौट आना मेरा। आर्षावाँद करती हूँ, कुशल-धेमत रहा—निरापद रखा।

सदानन्द चारस हँसकर बस दिया। दूसरे दिन सदानन्दने आबकं समाप्त रूपसे अपने पास रखकर आगे मालाओ देकर कहा—मा, बाते समय सदानन्द दादा से रुपये दे गए हैं।

शुभदा आश्चर्यसे भौंलें पड़कर उन्हें यिनने समी। गिनना समस्त करके कम्पनी आर देकर बोली—बान पढ़ता है, सदानन्द और कम्पमें हम लंगोच छोड़ें या।

सदानन्दने फिर हिंसकर कहा—येना ही बान पढ़ता है।

“ इतने रुपये क्या कर आरमी से सकता है ? ”

सदानन्दने कुछ उत्तर नहीं दिया।

“ कम्पना, सदानन्द क्या पागल है ? ”

“ क्यों ? ”

“ पागल नहीं है या ऐसा क्यों कहा है ? ”

“ दुल्हीके दुग्मसे दुग्गी होना क्या पागलता काम है ? ”

“ वो फिर लोग उम पागल क्यों करते हैं ? ”

सदानन्दने हँसकर कहा—अस बो ही कहा करते हैं।

X X X X

हायन सुरभीके परिवारमें आश्चर्य एक प्रशस्तों कीर्ति कर नहीं है। एतान-परनना अपनी तरह होना पत्न का रहा है; किन्तु यक-मादलेके दस बने दस तरहसी घने काम मग। किनीन कहा—हासन गालेन नन्ही पाहुअौल्य तर-

बपया मार सिंघा है। कितीने कहा। साथ आककक बड़ा आहमी हो गया है। कितीने कहा—अभी कुछ नहीं—डोकमे पोक है वत। परमें दोनों छमय बूरा भी नहीं बसया। इसी तरहकी अनेक बातें होती थी। वो लोग येर व, वे कुछ कम कुतूहल रखने लगे, किन्तु वो आत्मीय वे उन्हें ही अधिक कुतूहल या और वे इत मुसबी-परिचारके बोड़े-बहुत छिद्र स्पेज निष्काशनेकी पंथा करने लगे।

एक दिन बीपहरके छमय कृष्ण महाराजिने उहसा हाणन-बन्धके पर रहज देकर कहा—क्या हो रहा है क्यू? खाना-पीना हो कुछ क्या?

“हाँ, अभी कुछी पार है।”

तब कृष्ण महाराजिन उमात्सूके साथ पान पचाते-बघते और पीक बूधते बूधते उपमुक्त स्थानपर बैठकर बोली—क्यू, आक-कक क्या करता है?

हमराने कहा—और क्या करेंगे—नीकरी-पाकरीकी कोशिश करते हैं।

कृष्ण महाराजिनने फिर प्रश्न किया—मिरकीक्य कर्षं केस बस रहा है?

मुमराने इत्थ ब्रुठ उत्तर नहीं दिया।

कृष्ण महाराजिन फिर बोली—बोग कहते हैं कि हाराज मुसबीने नन्ही बाबूके बेरो बपये मार सिंघे हैं; वह आककक बड़ा आहमी है—उसे कपने-पीनेकी क्या बिता। किन्तु मैं तो तब इस खानती हूँ, इसीसे पूछती हूँ, बर-मिरकीक्य कर्षं कसे बसया है?

मुमराने कुछ इत्तर इत्तर करके कहा। यो ही किन्ती तरह स्तम्भ-पठ्य पल रहा है।

कृष्ण महाराजिनने कहा—इत्तमबादी छिनास वह बाभुनपाडाकी जाती (कप्याबनी) ही तो इत बनारसकी बड़ है। उधीके खान तो हाणनकी रोबी गई। बी बाहता है उत ककमुरीकी काट शर्दे।

पर मुमराने इत पठ्यपर ध्यान न देकर कहा—नन्ही, हमारा खाना-पीना हो कुछ।

“हाँ हो गया बहन।—उत इत्तमबादीने ही तो वह तर्बनाथ करया है। हाणन मुरल है कि नहीं? इत्तस उनके कंरेमें पड़ गया। बर तीन इत्तर बपये दूने शुगमे वे तो कुछ नहीं ली-बो ली बपये तो श्रीके हाथमें लखर लया। तो भी कुछ तो पाल रह बागा।

हमराने वन पन्नेके धिय पया नन्ही-बाह तमसे क्या बनाया था।

“और क्या बनाऊँगी बहन ! आब बेर हो गई थी, इसीसे हाक-भाकके लिया और कुछ नहीं बनाया।—हाँ, छो उठ चुकेछो क्या छनिक मी परछेककी बिन्ता है ! हायनने बाहर दो छप्पोके लिये क्व हाय बोके, पैरो पड़ा, तब हरामबाधने परके बाहर निकाल दिया। किन्तु मगवान् क्या नहीं हैं ! वह सब देखते हैं ! तुने बाग्दानकी लडकीका बैसे पर बिगाड़ा है, तुस बैसी छनी-छम्मीको बैसे बखसा है, उतघ्य हण्ड क्या नहीं पावेगी ! बहन, तू देख लेना, मैं करती हूँ—

शुभदा बचप कइ उठी - नरैदगी, मम्म बिन्दो इस तरह अपनाक समुदाय क्यों बध्नी गई - कुछ बानती हो !

“मुनती हूँ, उतके समुदाय अचानक एकको बखसा हो गया था।—अच्छा अब तू मिररपी बखनेक बैठा बन्दोबस्त करेगी ?

“मैं और क्या करूँगी ? ईस्वर जो करेगे वही होय।”

कृष्णा महाराजिन एक छम्बी छॉस छेड़कर बोली—छो छे होगा ही। लेकिन पिन्दाके ऊपर बिन्ता है यह तेरी छेयी लडकीकी। बीरे बीरे वह बड़ी हो गई—अब उतका ब्याह किये बिना देखनेमें मी अच्छा नहीं लगेगा और छेग भी बार तरहकी बातें करेंगे। इतका कुछ उपाय हो रहा है !

शुभदा बब मुक्ताये उदास चेहरेसे छम्बी छॉस छेड़ रही थी, उसी समय लम्ना वहाँ आकर उपरिष्ठ हुई। उम्नाके घरेमें महाराजिनकी बल उतने कुछ मुन पार्य थी, और कुछ अनुमान करके उतने अच्छी तरह लम्ना लिया कि बाहे अच्छे दिन हो बाहे बुरे दिन, बंगाधीके परमें क्वौरी लडकीक ब्याह किये बिना कम्म नहीं बनेगा। लम्ना है कि बालिष्णु होना पड़े।

९

हनुमन्त छेड़ पचादकी गत आधी बीत गई है। गंगलठके आधे बगल्ले पिये एक दूटे हुए शिव-मन्दिरके बीनरेके ऊपर एक बार्स-वेरिठ बरका पुरक बैन सिनीकी राह देखता हुआ बड़ी बेरमे बैठा हुआ है।

पुररका नाम धारदाचरन राय है। हनुमन्त गौदके एक बड़े अजमीकी यह पधमाव लतान है। मुजने कहीं तक लिखा-पड़ा था, यह छे हम बला नहीं



कहते, किन्तु वह यह कहते हैं कि वह विपक्ष, सुखिमान् और कामकायमें निपुण है। वृद्ध पिताका तब कपरोकर और कर्मकाय बही देखता है। माता जीकित नहीं हैं। अब तक वह जीकित थीं, तब तक हायन मुक्तकी परसे इन खेयोंकी बहुत पनिष्ठ आत्मीयता थी। उल्लसली और धारदात्री मज्जामें व्यपस्य प्रीति थी। अब धारदात्री मा मी नहीं रही और वह आत्मीयता और मैत्री मी जाती रही। विरोधकर धारदापरजके पिता उममोहन बाबू गरीबके साथ किठी तरहका सम्बन्ध रखना मुक्तियुक्त नहीं समझते।

यहाँ पर योड़ी-सी लज्जनाकी बात यह है: क्योंकि इस ख्यालीमें हमें उल्लसली बहुत भावस्वकता होयै। लज्जना अब बाकिम्ब थी, तमीस धारदाक साथ उठका बहुत देखेयै था—दोनोंमें बाबू-मुक्तम स्नेह था। तब हायन बाबूकी रक्षा इतनी हुती न थी। योड़ी औक्यतका भादमी किटना कर लच्छा है, उतनी धूनक साथ हायनन बड़ी कड़की लज्जनाका प्याह छोटी उममें ही किवा या किन्तु भाव-बोयस लज्जना हा उल्लसके भीतर ही विषवा होकर भर छीर भाई। उत लज्जना भी धारदाबागकी वह प्यार करती थी। वह प्यार कम नहीं हुआ उल्लसलीतर कड़की ही लज्जना। क्रमघा दोनों बनोकी अवस्था कड़के लगी लज्जना, बानो ही यह लज्जनासे स्ने कि यह प्यार परिश्राममें मुक्तवापक न होगा। क्रमघ लज्जना वह प्यारकी वृत्तान बीरे-धीरे कन्द कर देन लगी। वह अब धारदाक पाम नहीं जाती, उससे भागेके सिव नहीं कड़की, अब पहकेकी तरह प्यार नहीं बनायी, और ठिगकर पहकेकी तरह पत्र नहीं सिवली। यह लज्जना लज्जना-मुनकर धारदापरज बड़ी मुशकिलमें पड़ गया है। पहके उतने लज्जनाको बहुत समझारा बहुत भावति थी, अनेक मुक्तिबों दिम्पार; पर लज्जनाके बैठ अनेके खानमें उँकली डाल थी। एक दिन लज्जनासे लज्ज ही कर दिवा कि उस अब यह तब अल्लस नहीं लज्जना।

धारदापरजका मी उत दिन खेप आ गया। उसने कहा—अगर अल्लस नहीं लज्जना तो इतने दिन क्यों अल्लस लज्जना ?

“इतम दिन मैं छापी थी। अब मरानी हो गई हूँ।”

“बड़े होन पर हापर अल्लस न लज्जना पाहिए ?”

“महीं।”

“तेदिन लोब-लज्जनाकर दला—”

बात पूरी न होने बेकर बीच ही में सन्नाह बढ़ उठी—आज और सोचने-समझनेकी जरूरत नहीं है। तुम मुझे बुरी समझ न देना।

शाहदाशरथ बिड़कर बढ़ उठा मैं शायद तुम्हें बुरी समझ देता हूँ।

“देते नहीं तो और क्या।”

“बैठा हूँ।”

“देते हो।”

“तो आम्हो आज सब समाप्त कर दें।”

“अच्छ तो है।”

“इत ब-मर्दे में आज तुमने बात नहीं कहेगा।”

“न करना।”

फिर दोनों अपनी-अपनी राह चले गए। राहमें शाहदाशरथ गतबता-सरबता गया और सन्नाह तारी राह औसू पीछले-पीछले गई।

यह आज चार साठ पहलेकी बात है। चार साठ बाद आज फिर शाहदाशरथ सन्नाहकी राह देखता उठ दूटे मन्दिरमें बैठा है। पहलेकी बढ़ बात उसे एक तरहसे भूल ही गई थी, कमसे कम मूखी का रही थी किन्तु सन्नाहने ही फिर आनेका अनुरोध करके नहीं भुलवा है। इसीसे पहलेकी बातें एक-एक करके उतक मस्तिष्कमें आने लगीं। कोई कहता है कि बचपनका प्रेम नहीं फलता। कोई कहता है कि बचपनका प्रेम बढ़ नहीं होता। कोई कहता है कि बढ़ जाता है। चाहे जो हो, इस विषयमें कुछ निश्चिन्त नहीं है। सभी प्रकारका परिमाण हो सकता है। किन्तु कुछ भी हो, इस बचपनके प्रेमकी एक याद हमेशाके लिए हृदयक भीतर रह जाती है। चाहे किस तरह उलझी बड़की उलझाई क्यों न फैरा जाय, बरा-भी, छंटै-सी इतकी बढ़ शायद हैंदनेम हृदयकी चालीके कई हाथ नीचे मिल ही जाती है।

शाहदाशरथको अनेक बातें याद आने लगीं। आज चार साठ बाद वह फिर आनेगी, पल बैठेगी, रज करेगी। शाहदाशरथका हृदय भीतर भीतर बैग कुछ विहार उठा; आजन्बसे बैते कुछ रोमांच हो आना। किन्तु क्यों। क्यों आनेगी वह। अब मुझमें उतका क्या सम्बन्ध है।

एकछे अनाम एक बजेका समय होनेको आज। एक ली पूछते हैं, उनके

हुए उठी राहमें जाती देस पड़ी। धारदापरकमे लोना - क्या लम्ना है ? लम्ना ही तो है। किन्तु अथ बड़ी ही गई है।

लम्ना आकर पास लड़ी हुई। धारदापरकमे संकोच छोड़कर कहा—बैठा। तब बहुत दिनके बाद शान्त बने बाँदनीके शीत प्रकाशमें, उठी दूरे मन्दिरके चौबरेपर आत्ममे-तात्ममे बैठे। बहुत देर तक किसीके मुँहसे शब्द नहीं निकली। इसके बाद साहस करके धारदानरकमे यह बतल्य—मुझे यहाँ क्यों लुम्पया है ?

लम्नाने तिर उठाकर कहा—मेरा कुछ कम है।

“क्या कम है ?”

‘जाती हूँ।’

तिर बड़ी देर तक लुम्पया रहा। धारदापरकमे कहा—क्या, जाना नहीं ?

“जाती हूँ। पहले तुम मुझे प्यार करते थे, अब भी क्या प्यार करते हो ?”

प्रफ्फके डंगसं धारदानरकमे बड़ा विस्मय हुआ। उसने कहा—अब इस बातस क्या कम ?

“कम है, तभी-न्तो पूछती हूँ।”

अगर कहूँ कि अब भी प्यार करता हूँ ?”

लम्नाने यह सुनकर-सकल्य भावसे कहा—तुमसे प्यार करोगे ?

धारदापरक बाय पीछे हट गया। बोल्य—भरीं।

“क्यों नहीं करोगे ?”

“तुम्हारे साथ प्यार करनेस मेरी बांति पत्नी बापणी।”

“मेरे ही पत्नी बाय।”

‘साँझ क्या ?’

‘लम्ने-पीनेकी बिना तुम्हें न जानी होगी।’

“किन्तु जिना रात्री न होगी।”

“गरी हा बाँसंग। तुम तो उनकी एचमात्र लम्नान हा। तुम बादा हा उनको रात्री कर लम्पेग।”

कुछ देर चुप रहकर धारदापरकमे कहा—तो भी यह प्यार नहीं हो लम्पेग।

“क्यों नहीं हा लम्पेग ?”

‘इसके अन्त करत है। पहले तो दिवाके सङ्गम होने पर भी तुमसे प्यार

करो ही हम बातोंके बाहर कर दिने चाहेंगे। बातोंके बिनाकर हजरपुरमें रहना हमारे लिए सुखदायक न होगा। फिर मेरे पास इतना धन भी नहीं है कि मैं तुमको लेकर कहीं विदेशमें जा सकूँ। वृत्तरे, जो तमास हो गया वह तमास ही रहे—यह मरी इच्छा थी ही और इलीमें मंगल भी है।”

सम्झना कुछ देर चुन रहकर बोली—ठा फिर ऐसा ही सही। लेकिन तुम क्या मेरा एक उपक्रम करोगे ?

“कहो। कर सकूँगा तो अवश्य करूँगा।”

“तुम कर सकते हो, लेकिन करोगे या नहीं—यह नहीं लफ्ठी।”

छात्रदानरत्नने बराहेंकर कहा—क्याओ, मैं मरकर बेशा करके देखूँगा।

“मेरी धन तमनासे प्यार कर लो।”

छात्रदानरत्नने कुछ हँसकर कहा—क्यों, उसके लिए क्या बर नही मिलता ?

“कहाँ मिलता है ? हम गरीब हैं। गरीबके परमें कौन लक्ष्मी प्यार करेगा ? केवल यही धन नहीं है। हम कुम्भिन ब्राह्मण हैं; छोटे कुम्भमें प्यार देनेसे शावर सफ़ा मिल सकता है। लेकिन तब कुम्भिनताओ तिस्रबसि बेनी होगी। तुम हमारे बपारके कुम्भिन हो। तुम प्यार कर लो तो हमारी बत बन जाय। बोली, प्यार करोगे ?”

“मैं पिताकी आज्ञाके समूय अचीन हूँ। उनका मनासत जाने बिना मैं इस बारेमें कुछ भी न कर सकूँगा।”

“तो उनकी अनुमति लेकर प्यार करो।”

“बहाँ तक मैं जानता हूँ, यह इस प्यारके लिए अनुमति नहीं दोगे।”

सम्झना उदास होकर कहा—क्यों नहीं दोगे ?

“तो तुमसे नास ही कर हूँ, लियनेसे कोई क्षम नहीं। मेरे पिता धनक लोभी हैं। उनकी इच्छा है कि मरे प्यारने कुछ पैसा पैदा कर लें। तुम लोग अकस्य ही कुछ न दे लगेगे और इलीमें यह प्यार न होय।”

सम्झना बग़र होकर कहा—हम गरीब हैं, देनको कहीं क्या पावेंगे ? और तुम आगो ? धनकी बसुत ही क्या है ? यद्यपि क्या-कैसा तो है।

छात्रदानरत्नने दुर्धनता मानसे बरा मुत्तयार कहा—यह बात मैं समझता हूँ, लेकिन यह नहीं समझेंगे।

“तुम समझाकर कहोगे तो निश्चय ही समझेंगे।”

“ मैं केवल एक बार कहूँगा । धमकाकर न कह सकूँगा । ”

सम्मानने बहुत ही उत्सुक होकर कहा—खे फिर कैसे होगा ।

“ मैं क्या करूँ—मरे बरखी बल नहीं है । ”

“ बाल पढ़ा है, तुम्हारी प्याह करनेकी इच्छा नहीं है ।—बेल्के, सम्माना बेसी लड़की तुमको यहबर्न नहीं मिसंगी । यह सुन्दर है, बुद्धिमती है, कामनायी है । इसके सिवा एक गरीब आत्ममोका इससे प्येठ उपकार होगा, एक आत्मलकी बाति और कुसली रसा होगी । बेस्से यह प्याह तुम करतेसे ? ”

“ पिताजी को कहेंगे, बही करूँगा । ”

“ भाव तुमसे सब बात कहूँ । धामद इस बन्ममें फिर कमी कहनेका अकार न पाऊँगी, इसीसे कहती हूँ । तुमसं कम्मा मैंन कमी नहीं की, भाव भी नहीं करूँगी । सब बात लोकर कह बाँके । बेल्के, मैं तुमका हमेशासे प्यार करती आई हूँ, भाव भी प्यार करती हूँ । यह सब एक बार तुमसे कही थी—आज फिर, बहुत दिन बाद एक बार आसिरी कर कहती हूँ । तुमने मेरा एकमात्र अनुरोध—धावद अन्तिम अनुरोध है—नहीं रखा । वो होनकर या, हुआ; भाव ऐसा कमी न होगा । अर्षे तुमका मैंने इतना ज़ेरा दिया, इसके सिवा क्या करे । ”

धारदावरकने मन ही मन ज़ेराकर अनुरोध किया । सम्माना बली बा रही है—यह इलाकर बेस्से—पिताजीसं इस बारेमें अनुरोध करूँगा ।

सम्मानने झौटे किना बाले-बाले ही कहा—करना ।

“ किन्तु मैं पिताजी आशके अधीन हूँ । ”

सम्मानने बक़ो-बक़ने ही कहा—तो खे मुन सुधी हूँ ।

“ अगर कुछ कर लय तो तुमका काऊँगा । ”

“ अष्टी बल है । ”

“ सम्मान, तुसे माफ़ कर दो । ”

‘ कर रिबा । ’

१०

“ मग ' नक्षत्र ' \* है—स्यभी भैया पार आने पेसे ”— ताश बॉटनेवालेके हाथमे पार आने पेसे छकर गिनकर हासनचन्द्रने पौलीके बौटमें बौप लिये ।

“ माममें बा हो—मह आठ आने अक्षरी समाप ”—कहत हुए हासनचन्द्रने सामने सेकड़ों बगहसे फरी चयईपर ठाकने हुए रत्नकर ताशअ पचा हाथमें लिया । तमी छाप लखनेवालोंन उलंठिय मावसे अपना अपना ताश देखना शुरू किया । हममर बह ही बोलीन हाप अपनी बगहसे उछलकर हासनचन्द्र पील उठे— फिर ' नक्षत्र ' है—आभी तो बन्वू एक बपवा । बॉटनेवालेने हासनचन्द्रको बपवा बंकर ठनके सामने ताशकी गद्दी फेंक दी । और सब खिसमाड़ी बगली लुनी हँसी बँसकर अपनी-अपनी तहबीस ट्येककर पेसे निद्राकमे सग ।

“ और बाहिए—और बाहिए—और बाहिए ! ”

“ कन करो—और नहीं । ”

“ फत्रहपर एक बाभा । ”

“ सड़ बा, सड़ बा बय—ए यह बेरो मग फिर नक्षत्र है । ”

हासनचन्द्र जब लखत उठे तब प्राय रात्रि समाप्त हो गइ थी । उनकी घड़ीका बौट उठ समय बपये-पैनाके बोलते काफ़ी माटी हो रहा था । उठ रातको घर जाना मही हुआ । दूसरे दिन भी इठ हुआ—उम हुआपर बैठते-ठठते दोनहर चीन गइ । लगभग पार बय तीनर पहर बह घर आये । उम समय उनकी औरने बेहद लय हो रही थी । मुँह, नाक, घाली, पादर वहाँ तक कि नारे शरीरसे यौञ्जिनी दुर्गन्ध आ रही थी । हासनचन्द्र खान करके भोजन करने बैठे । उम समय शुभदाने सामने बैठकर कहा—आब बड़ी देर हो गई ।

\* नक्षत्र एक ताशके बटोरा खेप होता है जिनके बटोंकी कुलसिपेसे बार जीन होती है । कुलसिपेका जोड़ २१ होवेरा—जैसे एक बहला, एक लरवा और एक डुली वा एक एक लकड़ीर एक लता एक घोवा—नक्षत्र बनता है । नक्षत्रबला जीन जाता है । जीनने कम कुलसिपेमें भी एक जाया जाता है । तब जिनकी कुलसिपे ज्यादा होती है वह जीनता है । कुलसिपे कम २१ से अधिक हो जाती है तब जिनकी लय कम हो जाती है ।

हासनचन्द्रने कहा—क्याओ, क्या करके—कामके मारे घेर हो जाती है।  
 तुमने क्या अभी तक कुछ नहीं खाया-पिया ?

सुमदा चुप हो रही। क्या करती ?

हासनचन्द्रने फिर पूछा—नहीं खाया ?

सुमदाने कहा—भय साज्योंगी।

हासनचन्द्रने दुःखित होकर कहा—बह तुम्हारा बड़ा अन्धाय है। मेरा कुछ ठीक नहीं है। अगर दिनभर न आरें तो क्या तुम यो ही उपवास किया बैठी रहोगी ?

हा-एक और क्षण मुँहमें बाक्य हासनचन्द्रने सुमदाकी ओर देखते हुए  
 कहा—कल तबेरेके समय तुमने मुझसे कुछ रुपये माँगे थे न ?

सुमदाने समझ न पाकर कहा—कहाँ, मैंने तो नहीं माँगे।

“नहीं माँगे। मुझे क्वाब था कि तुमने माँगे थे।”

फिर क्या हैतकर बोले—कम न माँगे सही, दो दिन बाद तो माँगना ही होगा—बह एक ही बात है। मेरी उम्र कातरके सँझमें आठ रुपये बचे हैं, उनमेंसे पाँच रुपये तुम ले लो।

सुमदाने फिर शिक्काकर कहा—अच्छ।

बह आब बहुत विधिगत हुई। बहुत दिनोंसे कमी पैसा नहीं हुआ कि हासनने इस तरह अपनी ओरस किना माँगे कुछ दिया हो। भोजन आदि क्वाब हासन सुमदाने कहा—य रुपये तुमने कहाँ पाय ?

आब हासनचन्द्रके मुन्नास हैती कृपे। बोले—भबो हम सोयीस रुपयोंके लिए बिना नहीं करनी पड़ती। मर्केके पत्रने अगर बुदि रहती है तो उनके लिए तारी बुनिपाये रुपय क्वाब पड़े रहत है। कमसी ?

सुमदाने क्या समझा, बरी जाने; किन्तु उमने कुछ प्रतिवाद नहीं किया।

ऊपर किशो पत्राके बाद हो महीने बीत गय है।

आब क्वाबक समय सुमदाने क्वाबके पास बैठकर बहुत ही मस्किन होकर कहा—क्वाब, आब क्या कुछ नहीं है ?

‘कुछ भी नहीं है म्या।’

किन्ती ही बार तूने बरी बात कही है; किन्तु फिर दो-बार आने देन

निश्चय ही दिये हैं। देस तो बेटी, अगर कुछ हो; नहीं तो राजाओं एक बूट पानी भी किसीके मुँहमें न बावगा।

माताके कातर मुसल्लो देस और बालु-गारर स्वरकी सुनकर बहना रो पड़ी, बहमी—कुछ भी नहीं है मा। तुम्हारे पैर बूझर खरती हैं—कुछ नहीं है।

तब दानो ही बनी रात लगी। कम्पार बहुत-कुछ अनिश्चाल-बैसा कर बैठ नके कारण सुमदा रोने लगी; किन्तु लम्बनाके रोनेस और ही करत था। वह करत वह था कि पढ़ते कई बार 'कुछ नहीं है' क्यकर भी कुछ दे लकी थी किन्तु धाव बालनमें ही कुछ नहीं दे लकी, लयानन्दके दिये हुए पपल रूपोका आम्बिरी पैना भी आब लबरे लबरे हो गया। सब लगे क्या लारेंगे, किछ लरह एल करंगी; लानेको न दे पानेके कारण माके मनकी स्वा बधा होमी; लबरे फिर किछके पाल मील मौलने बाना होमा—यही सब लोचकर उलकी बालोमें भौलू आ गमे। किन्तो थी, वह भी अब बहोँ नहीं है; लयानन्द था, वह भी बहोँ नहीं है। केवल इतना ही नहीं, आब दो दिनसे हायननकरकी भी लल नहीं देस पड़ी। लम्बना वह या लो मदकके लोमें होमा या सुपके लोमें।

यहाँस लोङा-ला हायननकरके लारमें लय रहे। वह गौडा मलकर दम लमाने से मदक पीत्रे से, पाल-लः पैसा कर्ब करते थ, लो-लार लाने पैसे सुमदास लठ लोङकर, बहाना लनाकर मौंग लते से विम्बुल ही निरुपाय होनेस लारमें लोङ लम्बकर, देह लरमें लल लपेटकर, ललम-लललनकी लललम ललल - ललला मौंगनेका पैसा ललललललल करते थ; किन्तु लुभा कमी नहीं लल - अब लुभा भी लललल लगे हैं। लुभा लललनमें पलल-ललल लैला लुभा करला है— लललल लल-लार पैसा ललल ललल है, लैला ही लनल भी हाय लुभा। पलल कुछ कुछ लर लललने लहे; किन्तु पैसा लैले दिन ललने लल, लैले लैल लनल लाल्य ली लल्ले लोला लन ललल। सुमदाको किछ दिन थ लैल ललल लललने दिख थ, लली दिनस लनल लैला ललल लल। लल लल लमी हाट। ललल लल ललललन कुछ भी न लला लो, लल लल नहीं है। कमी कमी कुछ ल लले ली थ। लकिन लल ललललनीकी लललल लललल लललल ली ललली लल ललल लल। लल ललललललल लललल लललल ली लललल लललल ली लललल लललल लललल लल लललल लल लललल ली लललल लल ललली है, लली लललल-लललल लललल लललल लल लललल ली



आना, हो आने, चार आने, इस तरह मल्लेक परिचितसे कम बेनेका बादा  
 करके उन्होंने कर्ब ले रखा है। हर एक वृक्षनदारके चार आने, आठ आनेके  
 कब्रदार हैं वह। इन्हीं लव चारकोसे आबकक वह कमुनपण्डामें बहुत कम देस  
 पड़ते हैं। कुछ अधिक उन सब मरकके अक्षुपर लोच करनसे वहाँ एक कोनेमें  
 वह दिखणै पड़ते हैं। और कुछ अधिक रस होनेपर हुएके अक्षुभ दूर पीरेस  
 लोचकर उसके भीतर बुसठे उन्हें बीच बीचमें देखा जाता है। आबकक उन्हें  
 अधिक रस यही कितानी पड़ती है। पैसा पाठ न होनेके कारण आप नहीं सेस  
 लफते, किन्तु वृक्षोंको सेलकी शकी कितकर बीच-बीचमें हा-बार ऐसे गुड़कक  
 या धूमरानेके बना सेते हैं। सेकने बैठकर कोई ठठना नहीं चाहत। हासन-  
 चन्द्र उस समय ठमाकू मत्कर लकको पिजते हैं। बंछनेवाक्योंकी तरफदारी  
 करके, दो बाते कइकर, दो-चार दिहगी करके, हायमें बनेक सपरकर, दो-चार  
 बार हुय-दुगा कइकर, बिबनी पसक मन स्तकर अक्षिमभी मायाक दाम बुय  
 लते हैं। कित दिन कुछ अधिक क्या सेते हैं, उस दिन आप ही वो हाय  
 रोसने बैठ जाते हैं। या तो कुछ पा जाते हैं, नहीं तो उनकी उस कमाईको  
 पीरियों लव जाती है। दो-चार आने कित दिन होत हैं उस दिन उनकी कौन  
 पा लक्या है। मरककी वृक्षनमें आकर लकी पुतनी पाकसे सुग्गी कनकर बैठ  
 जाते हैं। अनेक कोसोंको रावा बरिअ आदिक लैके अगेहे बौटकर धूमराके  
 मुलकी चार आबातपर उठकर परमें आकर ठपरिभन हाय हैं। वहाँ तो कानक  
 सिप अप मोगू ही है। धूमराकी बर्माशारी कमी बुझेगी नहीं—उनकी  
 धूमरा गलक अयपूर्णा है उठकर हाय कमी लाली नहीं होग। किमीके सिप  
 न हो, उनके सिप मुझीअ अप तो रवा ही हाय। किन्तु पर भात समय उन्हें  
 कुछ कठिनार् होती है। बेस कुछ कुछ कया सगती है; चलेके पाग पौंचनेपर  
 पैर बेगे उस तरह सेबीसे ठठना नहीं चाहते। अलको परक भीतर बुककर वह  
 सेते और अधिक संक्यमें पड़ जाते हैं। धूमरा कित तरह पैर सेमके सिप  
 बन ल जाती है, कित तरह पैर पौठ बेनेके सिप जाती है, पैसे एने हुए मुँहसे  
 मोहनकी वाली लामने रलकर बुनबाप किन्तुल मुल ठठल बैठे रहती  
 है, उतग हासनचन्द्र मन भी न जाने केना होतै लगता है; मोहनके कौर  
 उस तरह लहकीं पैरके भीतर उतरता नहीं चाहते बेसे बीचमें अचने  
 लते हैं। चारे पौच बजे हो और चारे लकके तीन बजे हो—हासनचन्द्र देल

पाठ है कि हमारा बिना खाने, बिना विभ्रम किन्ने उनके खानेकी वाली समने रले एक ही तरहसे बैठा है। एक बार वह भी नहीं पूछती कि इतनी देर क्यों हुई ? इतनी रात क्यों थी ? उतक विस मीन मुलने ही उनके अधिक स्पतिमस्त कर दासा है। वह समने समत है कि पति होने पर भी वह नाम्मयक है इतनी भडा, इतनी मकिक बोम्य नहीं है। इतीसे वह इतना मन, इतना आदर स्वधन्द मावसे सहकमें उपम्योग नहीं कर पाते। वह देल पाठ है कि एक आदमी समतार अपराध करता आ रहा है और एक आदमी बराबर समत करता जाता है। इतीसे गैबडी और मरकथी होने पर भी उनकी औलें समाने नीची हा जाती है। सुमदा एक बार भी विररमर नहीं करती, एक बार भी शोध नहीं करती, एक बार सुमसुदासे भी यह प्रक नहीं करती कि तुम ऐसा न करो, अब मुसस तुम्हारी ये हरकतें सही नहीं जाती। हासनपत्रको बान पढ़ता है, जैसे उन्हें निस्य अपना विचार आप ही करना पढ़ता है। निस्य निस्य ऐसे काम करके अविचार अन्याय करनेमें बीच बीचमें उन्हें संकोष मासूम पढ़ता है। पादे को हो, इती तरह दिन बीत रहे य।

आज बहुत रात गव हासनचन्द्र वरमे आकर उपरिफन हुए। परके मीतर प्रवेद्य करक आज उन्हें कुछ और तरहका समा। आज सुमदा के खानेके निस्य पानी लेकर नहीं आई। निर्दिष्ट स्थानपर स्थानके टिए उकर कोई बैठा न था। एक कोनेमें एक हीनक बहुत धीमा पीमा स्मिमिमा रहा था। हीनककी बली पढ़ाने बाहर हासनचन्द्रने देना, उनमें उठ ही नहीं है। वह बरे। आज हो दिनम वह घर नहीं आय, इती बीचमें कोई दुर्पटना वो नहीं हो गई। रातके एक सिरफ बैठकर हासनचन्द्र अपने मनमें न जाने क्या क्या आकाश-पलाक खोजन समा।

सवेद्य होनेकी आया, वो भी कोई उन्हें दल नहीं पदा। हासनचन्द्र कुछ सायबर सेइडों बागहम फटे अपने स्ते हायमें सकर बुज्जाप परक बाहर निरम आय।

उनका हासा यह था कि परमा कर देसने न पावे और वह पल पावे। सकिन पेना नहीं हुआ। पीतरक ऊपर छम्नामयी बैठी थी। इतने सवेर पर कभी नहीं उठती कि तु आज न बान क्यों उठकर बाहर आ बैठी थी। बानको दपन ही वह बिलाकर कह उठी — बाह, तुम क्या आय ?

हायनचक्र बहुत ही सँपते हुए बोले—कल रातको ।

उठाने कहा—अच्छ वायु, तुम्हारी कैसी अक्षिप्त है, क्यामो तो ? कल मा, तुम्हा, बड़ी दीदी, किसीने एक बूँद पानी भी पीनेको नहीं पाया और तुम कुपचाप बूँद हाथमें से करके मरने का रहे हो ? आह हम लोग क्या मारेंगे—क्यामो तो ?

हायनचक्रको बान पद्म, छत्रामनीने बेसे ठनकर सिर ही करट किया । हाथके बूँद आपसे आप किलकिल नीचे गिर पड़े । सिरपिच्छर कुछ देर परदे रहकर हायनचक्रके मुँहसे निकल्य — कबमुच किसीने नहीं लाया ।

उठाने और मी निहाकर पुकारा—ओ तुभाबी, सुनती हो बसुकी बातें । मैं बेसे छट करती हूँ । कल रात मर मा और बड़ी दीदी रोती रही हैं - वह तुम मर्य कैसे बानेगे बसु ? कासी कपनेके किर आ बातें हो—इतके सिया हम लोगके साथ तुम्हारा कोई नाशा ही नहीं है ।

हायनचक्र लड़े न रह लके । बूँदका बोझ हाथसे उठकर सेबीसे बल मय । उठना और एक बार चिन्ता उठी —अरे बसु माग गये ।

उठना बकिछ है, बुद्धि कम है, उठकर बड़ी ही मुँहच है । किसे क्या करना चाहिय, कब क्या करना चाहिय, यह उठने कभी सीख नहीं । उठना अब तक आइये लड़ी लव करते सुन रही थी । फिाके बले बानेस यह चीरे चीरे उठनाके लामने अक्षर बोली—उठना, तुम्हारे क्या ठनिक मी बुद्धि नहीं है ।

“ क्यों ? ”

“ किसे क्या करना चाहिय, यह तुमने कभी तक नहीं सीखा ? बापको क्या इस तरह बट्ट बचनोंसे क्या पहुँचाकर मर्य देना चाहिय ? ”

उठाने कुक्ति होकर कहा — मैंने मर्य रिवा या यह आप माग गये ।

“ ठा । बानसे ऐसी कल कहनी चाहिय ? ”

“ क्यों न कहनी चाहिय । बान बेम्य बान हो तो उसे कुछ न कहना चाहिय । लेकिन ऐसे बानको लव कुछ करना चाहिय । किगछ बान इस तरह ईर कुणकर मर्य बाना है ? किगछ बान गौब-अफीम पीकर बजा रहता है ? मैं लव बहूँगी और बहूँगी ।

उठाने लीतकर कहा बहनें नू पत्नी था ।

सम्झना—मैं क्यों बर्ती जाऊँ—तू बर्ती जा। तू मरे ऊपर हुक्म बसाने न आया कर।

हम मानकर सम्झना सुपनाप वह बगद छोड़कर बर्ती गई।

११

उसी दिन दोपहर बीसमेपर शुम्दाने एलमणिके सामने एक कौंसलर बर्तन रलकर कहा नन्दबी बेर बड़ी हुई, जान पड़ता है, आज वह न ब्यावेंगे। देखा न, वह ब्येय गिरवी रलकर अगर कुछ मिस सके।

एलमणिके शुम्दाके मुँहकी ओर धगमर टाकनेके बाद बाकी—बड़ी शम्भा मास्म पारवी है वह।

सम्झना वहीं खड़ी थी। उठने खेय उठा मिया। बाकी—मा, मैं क्या एक बार बाहर रेण्य जाऊँ।

शुम्दाने बैसे हुए कण्ठसे कहा—कहाँ ?

सम्झाने बय हैकर, एक बार तुम्हाके मुँहकी ओर देखकर कहा—वहीं, पीतकी कुम्भनमें।

“तू बापगी बेयी ?”

“क्यों, उसमें लम्बा क्या है ? मैं इस मँहकी बड़की हूँ, सड़कपनसे लम्बीने मुक्तये देला है—मुझे लम्बा कादेकी ? भण्ठे या हुरे दिन कितके नहीं आते मा ?”

सम्झनाकी आते देखकर एलमणिके उठक हापसे खेय खीय मिया। कहा—तो फिर मैं ही जाऊँगी।

उस दिन तीन बजेके बाद लम्बा म्बेवन हुआ। लम्बाके लून होकर ल्या खेनपर शुम्दाने सम्झनाकी एक ओर बाहर कहा—सम्झना, तू पुरजेने पोहन-ला लखिने-का ल्या लोड़ ल्य न बयी ?

सम्झाने विमिन्न हाकर कहा—हम लम्प लम्बा क्या होमा म्य ?

“मुझे पारिए।”

“क्या बकसत है मा ?”

शुम्दाने बय हैकर कहा—तू लूनकर क्या कलेयी ?

वहीं क्या जाना था उकठा है ! छि छि छि—पर ते जाऊँ ! लेकिन बोड़े-से पास किसे-किसे निक्यऊँगा ? कोई बकरत नहीं ।

हायनबन्नेने पीछे फिर ठेंगाकर बाँध सी, फिर उठी वृकानपर आकर लड़े हुए ।

वृकानदाखे आवाज देकर बोले—बाबू लें छे ।

“बार पैसेमें दगा न ?”

“हो ।”

“तो इस हाथीमें दख दे ।”

हायनबन्नेने एक पाशमें बाबू डालकर पैसोंके लिए हाथ फैमया । वृकान-दाखे बार पैसे लेकर कुछ दूर आकर हायनबन्नेने एक बार मर-याँ हँस दिया । लपेछे ठाव । हायनदाखेने कैम्य किया बैसा फल पाया । आखेके लगमग पास पीक डाले । साबूझ फग ही नहीं बख्य । वृकानदाखेने उम्की इत बाध्यकीछे पक न्नेकी पदा ही नहीं की, वह बात एक बार मी हायनबन्नेके मनमें नहीं आई । वह हँसत-हँसते सम्प्राक रूपबायमें मरकक बोधी लौपी ( टार ) लोकर उम्में मुत गय ।

अब इनका पीछा करनेका बकल नहीं है । आरए, अन्यत्र चलें ।

## १२

“अब तो बखरप नहीं पसल बैदी !”

तीन दिन उपजल करके कय्या सम्प्राके गलमें हाथ डालकर सुमदा ईसे हुए आबगसे उपरक छम्द बहुर र पड़ी ।

पनमे मााके भौन् पीठर सम्प्राके कहा—मा, इत तरह बीरब कबो खेन्नी हा, ये दिन कुछ हमरा नहीं रईगे—छि मुदिन होम्य ।

सुमदाके रत-गत कहा—मरतान् करे पैगा ही हो; लेकिन अब तो लरा नहीं जाना । मा होकर भौन्केक नामने तुम लगीकी पर दुदगा—वह कइ अब ल मही दग मगनी बडी । मैं रंग मियाकी गौदमें ल्या जाऊँगी, नू बैदी, छिल लर हो गइ, इन लीगोवा रेगना । हरघर-हरघर मील मीगना—अ—मा होकर मुझे अब पर लरा नहीं जाना ।

शुभदा बिच तरह फफककर रो उठी, किस तरह कन्याके गलेसे छिपट गए, उसे देखकर परवर पिपस बाप । आब बहुत दिनोंके बाद वह अपनेको ठैमाक पा रही है, बहुत वरनेके बाद आब अपना धीरज जो बैर्य है—इसीसे आब वह अपने ऊपर काबू नहीं पा रही है । जो कमी श्रेय नहीं करता, उसका श्रेय बड़ा बेइज्ज होना है, जो बड़ा शान्त है, उसमें वह भीषी जाती है, तब वह मर्मकर प्रखर ही बन जाता है । इसीसे खटना बड़ी विपत्तिमें पड़ गई । वह किसी तरह माफ़ो यह समझा नहीं पाती कि ऐसा करनेसे वह भीत न वह सकेगी, कलबा अगर फफक बाहर निकल पड़ा तो वह उसे एक न पायेगी ।

बहुत रत गये मा-बेटी दोनों उठी बगह खेचते-खेचते लो गई ।

शुभदाको स्वामीके छिए बड़ा डर लग रहा है । आब छः दिनसे वह घर नहीं आये । उसके मनमें यह विचार आने लगा कि कहीं अपमान और खटनाके मयसे उन्होंने आत्महत्या न कर ली हो । अफ्साब बधात् किसी कमका न होनेके छिए, अपनी कन्या होकर भी, उफ्नाने उस दिन बैठा अपमान किया या, बैठा निरलकर किया या, उससे आत्महत्या कर लेना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है । परी लपास आठों पहर उसके मनमें बना रहता है । आब भी पानी-रो पड़ी रत बच रह गई थी, शुभदा बीककर उठ बैठी, खटनाको बयाकर बोली —भरी, वह नहीं है ।

कन्या नींदकी लुमाटीमें अपनी तरह समझ नहीं पाई । माताके मुहकी ओर लाइकर बोली—कौन नहीं है मा ?

“ मैं अभी कन्या देख रही थी कि वह पीकित नहीं है । ”

“ क्यों इस तरह पकटती हो मा ? ”

रत पूरी होनेक ताय ही खन्या भी रो पड़ी । जो कुछ खोई-सी रत बाकी थी, उसे दोनोंने रंकर ही बिना दिया ।

लूस निकले, धीरे धीरे दिन बढ़ने लगा । हल बच होग, इसी मय कृष्णा महाराजिनन मंगमें स्नान करके अपने घर लौटत समय उसके पल सुनबिति परने पुनकर भोगनमे पुवाप—इह ।

शुभदाने घर आ कर कहा—क्या है नन्दबी ? बैठा ।

महाराजिनन कहा—अब कैसी नहीं लीरी—देर हो रही है । नहाकर पर खेड रही थी—मनमें आया, क्या कृष्णे देलगी सई ।

सुमदा चुप रही।

कृष्णा महारजिनने स्वर कुछ भीमा करके कहा—बहू, बरा आकर चुन ले बा।

सुमदाके पाग धानेपर उन्हाते कहा—हापनकी कोर कापर मिछी ?

“ ना । ”

“ आज के दिनस बहू नहीं आता ? ”

“ छ दिन हुए । ”

“ छः दिनसे नहीं आया ? रामुनपाइामे कितीको कसो नहीं मेबा ? ”

“ फिसे मेरे, कौन बाक्य । ”

“ बहू भी डोक है । ती मुझसे कसो नहीं कहा ? ”

सुमदाने कोर कबल नहीं दिवा ।

कन्धी कन्धी कमरपसे कुछ कितक रही थी, उसे पच-स्नान रसकर महारजिनने कहा—हापमें कुछ बपया-येगा है ?

“ कुछ नहीं । ”

“ ता परक्य कम केम बछटा है ? ”

सुमदा चुप रही।

“ कफकेसी तबीयत कैती है ? ”

“ कैती ही है । ”

“ अण्ण क्यनाको बरा मेरे पर मेब देना । ”

कृष्णा महारजिनके धानेपर सुमदाको सन्धाने सुनकर कहा—कृष्णा महारजिन इसे कुछ मरे हैं, एक बार हो आ ।

“ कसो सुमया है ? ”

“ पर ती माण्डम नहीं । ”

सन्धाना कृष्णमिवाक परकी ओर बल रही। कुछ दर बार को आकर माणाक हापमें हा बरय राउकर बासी—सुमाने रिये हैं ।

सुमदा बरय औं कण्ठमें बौपकर बासी—कुछ कहा नहीं ।

“ रें, कण है कि बाटू कब आरं, तर उन्हें लखर दी बाप । ”

सुमदाने धाने ठाकुरकी ओर अनेक प्रयास करके कृष्णा प्रान् थी, पूबाकी कोठरीमें रगे हुए बासी रबीक निबसकी आर बलुन बेर तक हाप बोड़े तकती

रही, दुख्खी-बीनरेमें अनेक बार माया ठेकर इसके बाद खाने-पीनेका सामान मँगवा और आप गैमा-खान कर आई।

उस दिन ठीक समय पर मनके माफिक मोहन पाकर छम्मानपी मनके खानखसे हँसे-हँसे अपनी गुड़िकाके आहवा सम्भव करने बूतरे मोहलेकी कपड़ीके पर बस ही।

रतको कुछ बीबेरा होने पर बीबेरेमें मुँह ठियाकर आब छारे दिनके बाद हासनपत्रने धामे प्रवेश किया। छ दिन पहले वह बैस बे, आब भी बैस ही हैं, कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ। परिवर्तन हुआ है केवल बोटीमें। रंग ओबडेसे भी कस्य हो गया है और मिनकर देखा बाप छो बोटीमें छोटे अधिक स्थानोंपर गैठ बैसी मिलेगी। इमेराकी तरह समय पर उन्हें किम्ब-मिनकर गुम्बामे कन्दा छम्मानको हुसरकर कुछ हँकर कहा—बेटी, मखान करे रोब ही ठठकर पहले तेरा मुँह देखा करे—

छम्माना भी बरा हँकर बोळी—क्यों मा !

“आब मैंने बा मुक पाया, देता मुक्त बन्म भर कमी नहीं पाया।”

बूतरे दिन लबेरे छम्माने हृष्या गुमासे बाकर कहा कब रतको बाबु आए हैं।

हृष्या गुमाका मुक भिन्न उठा। बेसे एक बड़ी दुखिन्ता मिट गई। मुकमाने हुए बोळी—आ गया ! अथवा है !

“हाँ।”

“इतने दिन कहीं था ?”

“पर तो नहीं जानती।”

“बढ़ने पूरा नहीं ?”

“ना।”

“तरी मुमाने कुछ नहीं कहा ?”

“नहीं। पर छो बाबूने बोळी ही नहीं है।”

“बोळी नहीं ? क्यों ?”

“मैं नहीं जानती। मुभासी ही जाने।”

आब बरके समय हृष्यामिया महारुकिन केरके पलेले बख एक पत्थरा



पात्र हाथमें लिये, सुमराके पास ब्यारै। बोली—घोड़ी-सी तरकारी ब्यारै हूँ, हाथनको देना।

सुमराने वह तरकारीका पात्र हाथमें ले लिया और पासकी एक कोठरीकी ओर हाथका इशारा करके कहा—उठ कोठरीमें हैं।

कृष्णप्रियामे सुमराका मतलब समझ लिया। कहा—रहने दो, इत समय उसके पास न बाँकेगी—परमें सब चीज सुम्मी पड़ी है।

कृष्णप्रिया बसो बा रही थी, किन्तु आगे अँगन तक बाकर धीरे पड़ी। पास आकर सुमरासे कहा—बहू, हाथनसे एक बात पूछ लकेनै ?

“ क्या ? ”

“ इतने दिन वह क्यों रहा ? ”

सुमराने फिर हिचककर कहा—अच्छ।

सुमरा पठिको वह मोहन करने बैठी, तब धीरे धीरे उठने लूख—इतने दिन क्यों ये ?

हाथनचन्द्रने मस्तिन मुल्लसे फिर नीचा करके कहा—पेड़के तल।

सुमरा और और बात पूछ न सकी।

दूसरे दिन दोपहरके समय कृष्णामहराजिन फिर ब्यारै। बहुत-सी इबार उबारकी बातें करनेके बाद बोली—बहू, वह बात पूछी थी ?

“ हाँ। ”

“ उतने क्या कहा ? ”

“ बोले कि पेड़के तले था। ”

इसके बाद और और बातें हाने लगीं। उठते समय कृष्णा बुझाने अपने पात्रम दो चोनिचों निकालकर कहा—परमें पड़ी थी इसीसे ले ब्यारै। हाथनका पहननेके लिये देना।

सुमराने हाथ कैयबर चोनिचों ले लीं।

कृष्णा बुझा कुछ दूर उठके मुँहकी ओर ताकती रही। फिर तनिक नीम रसमें बन्दी—देख बहू, हाथन अगर पूछे कि किउन ही है तो और किसीका नाम ल देना, मय नाम न बजाना।

सुमराने तनिक हँसकर कहा—वह क्यों ?

कृष्णने इधर-उधर करके कहा—कुछ नहीं, यों ही ।

“और अगर शुभदा नाम क्या है ?”

अबकी कृष्ण शुभामे मी हैकर कहा—ये तुम सरो कृष्ण शुभाकी लीक्य रही ।

×                      ×                      ×

फिर एक दिन दो दिन करके दिन करने लगे । शासनपत्र अबकी बरसे परमे आये तबसे बरसे बाहर नहीं निकल्य । शुभदाक इस ओरसे दर कुछ बुर हो गया है, कुछ बुझिन्ता बुर हुई है किन्तु परका कम कैसे बले ? बुझिन्ताकी बड़ बही हुई । फिरीने फिरी दिन एक कपवा दान कर दिया, फिरीने फिरी दिन दो कपये मीस दे दिये, इस तरह क्या करने बड़े परिवारक पास-पोयत हो लक्या है ? विन्दाकी बस क्या केवल बही है ? माधवक मुँह देखनेसे तो देखक आभा बल पानी हो जाता है । उपर लक्याक म्याहकी विन्दा है । वह दिन-दिन बड़ी हावी बा रही है । म्याहकी उम्र हो गई है । बहलक कि हा-डीन महीनेके भीतर ठठके म्याहक समय (समावने कन्याक म्याहकी दो अवधि ठहवा ही है) निकल मी सव्य है । इधर बर शुभदाकी दृष्टि जाती है, तब वह इतक शोर्षे उपाम देख नहीं पाती । माधवके बहलवा बा लक्या है किन्तु बंगालीके परमे लक्याकी लक्या सङ्कीक्य म्याह न हो तो प्राय नहीं बर लक्ये; समाव इल अवधपक्य लमा नहीं कर लक्या । माधवका मुँह देखनेसे लल पानी हो जाता है; किन्तु लक्याका मुँह देखनेसे शरीरकी दृष्टि-पनकी लक पानी बन बाने समाती है । बुझिन्ताक माध शुभदा दिन-दिन लक्यी जाती है, इस बाकी और बार् मके ही न देख पाके, किन्तु लक्या अक्यी तरह देख रही थी । लक्याकी कान्त समय आध-परलक्य लक्य लक्य-लक्य शुभदाका हाय बर बाता है । लक्याको बर माधव पड़ जाता है । मीसमें शुभदाक बधर महीन लक्यी कोर नहीं बा लक्यी थी । बही शुभदा आबक्य लक्याकी काव्यी है तो कुछ महीन और कुछ मोटी हो जाती है । लक्या यह लमस पाती थी । लक्याकी लक्य कम हा गई है । दोना पक्यी बगल आबक्य बार बर केस एक बार लक्या रह गया है । लक्या अर बुधव लक्याके फिर लक्य करती-लक्यी है तो शुभदा कइ बेती है कि लक्य विस्तुय ही भूय नहीं है । लक्या यह लक्य लक्यी और लक्यक अपने बाँव पोछती । कमी कमी

घोठरीके किवाड़े बन्द करके अपना तिर छोड़ने लगती थी। इससे कुछ पक होने-वाला होता तो हो सकता था; किन्तु अन्तर्गमे ऐसा नहीं होता।

## १३

आज एकदली है। छम्नाने स्तोत्रपरमे बाल्य देखा, ठगकी मा भावन बना रही है। बूढ़ेके मीठर देखा, कोर बीच बस रही है।

उन पीक्ये पहचान न पानेके कारण छम्नाने पूछ—बह क्या है मा ? क्या मूल रही हो ?

“ कुछ तल्लोके छूत ( बाले ) हैं । ”

“ इनम क्या होया ? ”

“ छम्ना जावयी। आज महाकर कौटो छम्ब सेउसे छोड़ करेयी। मुत्तसे मूल देनेके लिए कहा था, लेकिन करेये तब छे हे मरी, इतीसे केलेक पसेमे तपेकर बाँ ही मूने हे रही हूँ । ”

छम्नाने फिर कुछ नहीं पूछ।

मोहनके समय छम्नाने साथ करक बा तरलकि छुबोम धम्बन बनवाया था, ठगकी साथ और साह देलकर बह बहुर ही मुक होकर खेले - पही घायर हुम्ने मूना है ? बह तो बन्कर राज बन गये हैं।

हुम्बान इतर उपर करक इतत-इतते कहा—तनिक बक गया है बेटी।

छम्नाने और मी बिराडकर कहा—मैं ऐस ग्यनेसं साथ आरं। तुम्हे घायर कयी हुर्द बीच अपयी लगती है, इतीसं अपने मनके माकिड गूथ क्यकर एस दिया है। छे, बह ल्या हे, हुगी ल्याना।

मुँर बड़ी हौंहीकी तरह बनाकर छम्नामे हापना कीर बार्थमे हाल दिया।

छम्नाने जो कुछ कहा बह असन मनक माकिड कहा था नहीं पर छे हम नहीं बह लज्ज; किन्तु यह अवश्य है कि अपने मनके माकिड काह बीच न हाम पर कटु इफ्तय राज ठगकी तरह कोर्द नहीं बह सकता।

बहुत हुन-हुन करके—बह-सककर छम्ना बह ग्याना ग्यकर पली गई, तब छम्नाने कहा—मा, छम्ना दिन-दिन बियाती था रही है, उस हुम कुछ करती

या डौल्यी क्यों नहीं हो ! मुझे तो उसे कुछ करनेका ठाहर नहीं होता । एक कर्तुंगी तो बत मुना बेगी ।

सुमदाने दमकर खेचकर कहा—उब छड़कियोँ क्या तुम बेसी होती है बेटी ! हाथकी पोंच डैयसियोँ पोंच तरह की है । मैं उसे किछर रिम नहीं पाली, पहना नहीं पाली । अगर वह नापक होकर हो बतें मुना दे तो छह लेना ही उचित है ।

“ मगर वह क्या बप्ला है ? ”

“ बप्ला नहीं, यह मैं जानती हूँ किन्तु क्या करूँ ! मरे दिन बप्ले होते तो छपना भी न करती और मुझे भी न मुनना पडता । ”

सुमदाने भी लमसा कि मातया कहना किस्कुल ठठ नहीं है ।

दूसरे दिन प्राण इती लमप लठना असन्त कियल मुस लिये माताके पास आकर लड़ी हो गई ।

सुमदाने उठकी और बेलकर कहा— क्या हुआ !

सुमदाने एक रूपया निवासर देकर कहा— इध्या हुआन कहा है कि अब काठने पर भी और रच नहीं है और बूटने पर भी और मंठ नहीं है । अपने आपसे कुछ उपाय करनेकी—कुछ करनेकी करो; नहीं तो मैं दुली-गरीब और बस्या-पैठा कुछ न दे सकूंगी ।

उठ दिनका लप कम-काब हो बुझने पर लठना अपने भाई मावकक पास आकर बैठी ।

मावकने पूछा—दीदी, उठका क्या हुआ !

“ किछर माधू ! ”

मावकने कुछ समझर कहा—बहो जानेका ।

सुमदाने भी बरा बककर— बरा खेचकर कहा—बही बल भाव तुमसे कहूंगी माधू ।

मावक आपहके लप एकदम उठ बैठा । बोल्य क्या, क्याया दीदी ! क्या बाना होगा !

“ मैं कम बाऊंगी । ”

“ बल बाऊंगी ! और मैं ! ”

“ मैं पहले बाँधूँ, उसके बाद तुम आना । ”

माचरने ब्यस्तताके साथ कहा—क्यों, एक साथ ही क्यों न पले ।

“ नहीं । तब मा बहुत रोबेंगी । ”

माचर कुछ क्षिप्त होकर बोला—येने हो ।

“ छि, कहीं यह हो सकता है । पहले मैं बाऊँगी । ”

“ ता फिर कब आओगी ? ”

“ बिग दिन तुम आओगे, उसी दिन और एक बार बाऊँगी । ”

“ बीचमें नहीं आओगी ? ”

“ ना । ”

“ मैं कब बाऊँगी ? ”

“ बिग दिन मैं लेने आऊँ । ”

“ तुम आओगी ? ”

“ हौं । ”

“ तुम्हारे जाने पर मा रोबेंगी ? ”

“ बाल ता पपुआ है । ”

माचरन कुछ देर निरंतर रहकर कहा—बीटी, वो फिर बानेकी बस्तु नहीं ।

‘ क्यों मार ? ’

“ माक रोनघ सपाठ आनेपर मेरी बहों बानेकी हपुन नहीं होती । ”

“ तो तू नहीं बापुया ? ”

माचरने फिर कुछ सेकिंड तक चुन रहकर कहा—हौं, बाऊँगी ।

“ तो मैं कब बाऊँ ? ”

“ बाओ । ”

“ मुझे राज म पान पर रोबेया तो नहीं ? ”

“ मुस लमे तुम कब आओगी ? ”

“ और कुछ दिन बाद । ’

“ ता बाआ, मैं म रोऊँगी । ”

मापार बेच न पाये, हम तरह सपनामे अपने हा-एक बूँद अपने हुए आँसु पोछ हात । फिर सौहार्दक उमके तिरपर हाथ रलकर कहा—मरे पल बानेपर ये लन बनें माते न करना ।

“ बाण्डा, नहीं कहुँगा । ”

“ मा बच जो करै, उसे हुनना किसी तरह उनक मनको ब्य न होने पावे । ठीक समय पर बहा ब्य लेना । ”

“ आ देगा । ”

कुछ देर ठहरकर छत्ताने फिर कहा—माधु, सरा दादाकी छुमका बाद है ?

“ है । ”

“ वह अगर आप—अगर तुम्हें देखने आवे—तो कहना कि पीली बखी मर् । लेकिन बच करै न हो, तब कहना । ”

“ अफ़ा । ”

इसी समय छुमदाने भाकर कहा—बड़ी रात हुई, तू सोने जा बय ।

माधकन इस छठके उठरमें कहा—मा, बीबी आब मेरे पठ खेगेगी ।

उस समय बीबीको छोड़नेवा माधकन किसी तरह जी न बारता था । छुमदा बान पाया है, यह समझ गई । उसने छत्तानेसे कहा—अफ़ा तुम वहीं लो खो—मैं ऊपर छत्तानेके पस भाकर लोकेगी ।

छुमदाके पहले बाने पर भी मारि-बहनकी बात्परति बहुत देर तक बसती रही । इसके बाद माधकन सा गया ।

दूतरे दिन सबेरे छत्तानेकी किसीने देख न पाया । सबरे मही उठकर परक लव काम करती थी—आब वे लव काम आब तक यो ही पड़े य—काइ काम मही हुआ था । माठ-नौ बदनक समय हुआ देखकर छुमदाने माधकन पूछ—तेरी बीबी कहीं है ?

छत्ताने भी पूछ—तरी बीबी कहीं गई ? ”

समीने कहा—इम नहीं जानत ।

बेला अचिक हाठ देपरकर छुमदा लव काम आप ही करने लगी । उस दिन छत्ताने भी उठमें मालाकी लहापना की । भोवन तैयार हुआ, लवन ग्यावा-पिया । बापर भी बीत गइ, लव भी बह नहीं आइ ।

छत्ताने उस हुँदने गई । छत्तानेकी भी अजन करक मक-माइसुमें भूमन निवली । कहीं कहीं लयना हागी था उस बह भेव दई । लयनाके पहल छत्ताने लो आइर कहा कि कहीं बह नहीं देख पड़ी—पर आ गइ क्या ?

“ नहीं आइ । ”

माधवने व्यस्तताके साथ कहा—क्यों, एक ?

“ नहीं । तब मा बहुत रोबेयी । ”

माधव कुछ स्मित होकर बोला—रोने व

“ छिः, कहीं यह हो सकता है ? पहले

“ तो फिर क्या आभोगी ? ”

“ बिल दिन तुम आभोगे, उसी दिन ।

“ बीचमें नहीं आभोगेयी ? ”

“ ना । ”

“ मैं क्या चाऊँगा ? ”

“ बिल दिन मैं लेने आऊँ । ”

“ तुम आभोगे ? ”

“ हाँ । ”

“ तुम्हारे जाने पर मा रोबेयी ? ”

“ बिल तो पढ़ता है । ”

माधवने कुछ बेर निरुत्तर रहकर कहा—

“ क्या मार ? ”

“ माइ रोज़ सब आनेपर मरी व

“ तो तू नहीं आया ? ”

माधवने फिर कुछ सेकिड तक चुन चुन

“ ती मैं क्या चाऊँ ? ”

“ बाभा । ”

“ मुझे रोज़ न पाने पर रोबेगी तब म

“ मुझे लेन तुम क्या आभोगी ? ”

“ और कुछ दिन बाह । ”

“ तब आभोगे, मैं न रोऊँगा । ”

माधव रोज़ न पाने, इस तरह क

पोछ बाव । फिर स्नेहपूर्वक उनके छि

दि लव जाने मासे न कहना ।

“ अफस, मही कटूगा । ”

साथमें पार-बोल और कई गवैये-बकरीये चले । उनमें एक गानेबासी भी थी । मौखिकोंने पास पड़ाकर बदरकर\* नाम लेकर समनाचबब नद ( बड़ी नदी ) में बबब लग्न दिया ।

अनुकूल वायु पा कर पाकके घोरसे बह बड़ा बबब उपहंसीन्दी तरह बबबपर तेरता हुआ चलने लगा । नदके किनारे स्थान-स्थानपर डंगर डाल्य जाने लगे । बगाह-बगाह मुरेन्द्रबाबू दल-बल सहित उतरकर सेर करने लगे । इसी तरह बल और फलके अनेक स्थानोंमें घूमा-फिरा गया । इसमें अनेक दिन बीत गये । इसके बाद बबब कलकत्तेमें आकर लगा । और लकड़ी इच्छा थी कि इस बगाह अधिक दिन ठहरा जाय लेकिन मुरेन्द्रबाबू सहमत नहीं हुए । उन्होंने कहा—कलकत्तेकी हवा और स्थानोन्मी अपेक्षा बुरी है । वहाँ नहीं ठहरेंगा ।

बबब उलझी और मुँह करके पल दिया । बबब बन कलकत्ता छोड़कर कबब, ठब बाबूके इष्ट-मित्र, कबु-कबबब, जो उनके साथ थे, अपने मनमें सोचने लगे कि बहुत दिन बबबमें रहा गया, बल-कघोसे मिमी हुई निगब शंसल बसुका सेवन करके लूब आराम कर चुके, शरीरके स्वात्म्यकी भी उषति हो गई अब पर लौटकर श्री-पुत्रोका मुँह देग पावें तो घाबर शरीरकी बन्ति थोड़ी और बढ़ जाय । इस तरह खचकर उनमेंसे अधिक्रांघ जोगोके मनमें अधिक बूर बानेकी इच्छा नहीं रही । दो-एक दिनके बाद दो-एक बादमी मुँह छोड़कर बह भी बैठे कि देशको छोड़े अधिक दिन हुए—बास्का शरीर भी सग्यूर्म आयेज्य हो गया है, अब लौट चलनेमें हानि क्या है ।

मुरेन्द्रबाबूने बबब हँसकर कहा—हानि कुछ भी नहीं है । लेकिन अभी नहीं लौटेंग । तुम लोयोंको अगर परकी याद बहुत लता रही हो तो तुम चले जाओ ।

सापान्न परके सिध, तुच्छ ली और बल-बबबके बिध मनका परतब होना अपारमना लघय कमलकर वे लंग चुन हो गये, किन्हींने लौगनेकी बात पस्यार थी । मुरेन्द्रबाबूने भी इस बारेमें फिर कुछ नहीं कहा ।

बबब फिर दल-दकर चलने लगा लेकिन उमरु भीतर पहलक-का उल्लस नहीं रह गया । मुरेन्द्रबाबूके निग प्रायः सभी लंग उदाल रहकर लनय किलाने

\* एक शैला नाम किन्ही जाल्ना-पूश बंवाके सुकम्मान शशी बग्न है । अरुमें बरता बर्ष पूरकद भी होता है ।—अनुवारक ।



## दूसरा खंड

१

नामधरपुरके बर्मीवार सुरेन्द्रनाथ चौधरीके मर्म्मे एक दिन यह सवाब आया कि उनका स्वास्थ्य गिर गया है; वायु-परिकर्षण न करनेसे कठिन रोग उत्पन्न हो सकता है। सुरेन्द्रबाबूकी आम्बरनी बहुत काफ़ी है। अकल्पा कुछ अधिक नहीं है; छात्रक पचीस छात्रसे अधिक न होगी। इसी अकल्पामें उन्हें कुछ तरहके धौंक हो गये हैं—मुठाहबों और हृष्ट मिर्चोंकी भी कमी नहीं है। उनमेंने दो-चार बनोंको बुझाकर कहा—मेरी लम्बुस्ती बहुत खराब हो गई है, तुम भोगोश्री क्या पय है ?

तब समीने मुककंठस स्वीकार किया कि इस बारेमें उन्हें कुछ भी ख़बरे नहीं हैं। वे बहुत दिनोंसे यह बात समझ गये थे किन्तु धुनकर कहीं सुरेन्द्र बाबूको कल्पेय न हा, इसीसे उन्हें कहनेका साहस नहीं हुआ।

सुरेन्द्रबाबूने कहा—क्या पकड़ा है, इसमेंही हवा लाने-पीनेकी बस्यत न होगी। मुझ विस्वास है कि हवा बरबनेसे ही सब ठीक हो जायगा।

हम्मं मी किनीको ख़बरे नहीं था। तबने यही मत प्रकट किया कि वायु-परिष्कानक बराबर औरत और नहीं है।

सुरेन्द्रबाबूने कहा—तुम जंग क्या लकटे हा कि किउ रवानाअ कल्पानु लकने उत्तम है।

तब अनाऊ खोगमि अनेऊ स्थानोंके नाम लिखे।

सुरेन्द्रबाबूने कुछ देर खेबक़ा कहा—मैं कहता हूँ, कुछ दिन मदीक ऊपर नारमें ही क्यों न रहा जाय ?

तबन एक दरसे कहा—यह तो खयम अफ़्फ़ा है।

उन कल्पमाबाबूी धूम पड़ गई। एक बहुत बड़ा पत्रग तरह तरहसे तबाबा बान स्या। बी-सीन मरनेके लिए तब बहरतकी बीजे उनमें लगी गई। एक बार पंचांगमें अफ़्फ़ी पढ़ी-आइत देतकर सुरेन्द्रबाबू नायपत तयार हुए।

साथमें बार-बार और कई गवैये-बड़वैये चले । उनमें एक गवैयास्त्री भी थी । मौसियोने पाठ बड़ाका बदरका\* नाम लेकर कमानागमन नद ( बड़ी नदी ) में बरग स्नेह दिया ।

अनुकूल वायु वा कर पाठके बोरोसे बह बड़ा बरग रजवांसीकी तरह बरपर ठेरता हुआ चलने लगा । नदके किनारे स्थान-स्थानपर छार बाल्य बाने लगा । बाग-बाग मुरेन्द्रबाबू इस-वक्त सहित उत्तरकर छैर करने लगे । इसी तरह बरग और पक्षके अनेक स्थानोंमें घूमा-फिरा गया । इसमें अनेक दिन बीत गये । इतने बाद बरग कलकत्तेमें आकर लगा । और लक्ष्मी इच्छा थी कि इस कपड़ अर्पित दिन ठहरा बाव लेकिन मुरेन्द्रबाबू सहमत नहीं हुए । उन्होंने कहा— कलकत्तेकी हवा और स्थानोंकी अपेक्षा सुष्ठि है । यहाँ नहीं ठहरेंगा ।

बरग उत्तरकी ओर मुँह करके चल दिया । बरग बह कलकत्ता छोड़कर पछ, लव बाबूके इस-मित्र, कस्तुर-कान्धव, जो उनते साथ थे, अपने मनमें आबने लगे कि बहुत दिन बरगेमें रहा गया, कल-कलसि मिस्त्री हुए सिन्धु शक्ति बालुका सिन्धु करके लव आरम्भ कर चुके, शरीरके स्वास्थ्यकी भी उपमति हो गई, लव पर लौकर श्री-पुत्रोंका मुँह देख पावें तो शायद शरीरकी शक्ति थोड़ी और बढ़ बाव । इस तरह लवकर उनमेंसे अर्पितल लगेकि मनमें अधिक बुर बानकी इच्छा नहीं रही । दो-एक दिनके बाद दो-एक बरगकी मुँह छोड़कर बर भी बैठे कि बेचको छोड़े अर्पित दिन हुए—आरम्भ शरीर भी संपूर्ण आरोग्य हो गया है, अथ और बरनेमें हाति क्या है ।

मुरेन्द्रबाबूने बरा हलकर कहा—हाति कुछ भी नहीं है । लेकिन अभी नहीं छोड़ेंगा । तुम लोगोंको अन्तर परकी बार बहुत लगा रही हो ता तुम बाव बान्नी ।

साधारण परके सिन्धु, सुष्ठु भी और बाल-बन्नाके सिन्धु मन्त्र ललाव होना बान्नाका लक्षण अन्तकर वे बरा पुन हो गये, बिन्दोने बौनकी लव बरग थी । मुरेन्द्रबाबूने भी इस बारेमें फिर कुछ नहीं कहा ।

बरा फिर बह-बहलव चलने लगा लेकिन उनके भीतर पहल-अन्त उल्लस नहीं रह गया । मुरेन्द्रबाबूके सिन्धु मन्त्र अन्त उल्लस रहल सन्त किान

\* यह ललाव मन्त्र, बिन्दी उल्लस-पुत्र बन्नाके मुल्लसाल मन्त्री बरग है । बरगेमें बरला अन्त पुनबल भी होगा है ।—कस्तुरकर ।

छो। तब जो दो दिन पहले अचरपन समझकर, बदन बचकर भी उस दृष्टि गय व, व पौरुषके गर्वको छोड़कर फिर वही बल उठानेका मौका खोजने लगे।

प्रथममें रहकर घर जानेकी बात मनमें उठने पर—जोक-बन्धुका मुँह बाद करके उनके पास और बान्धुकी इच्छा एक बार होनेपर फिर उस किसी तरह दृष्टिकर रक्ष नहीं वा सकता। एक एक दिन एक एक बचके समान बीक्या है। उन लगेलेके भी वही हाल हुआ। फिर तो तीन-चार दिनके भीतर ही प्रायः सभी उस विहाय और लम्बाके सिद्धांतसे बेकर पर जानेकी इच्छा प्रकट करने लगे।

सुरेन्द्रबाबूने कोई आपत्ति नहीं की। और बबराके चन्दन-नगरको नौबत न नौबते ही प्रायः सभी बच दिने। कल नौकर-धाकर रह गय। बबरा प्रायः खस हो गया। चहरके लगेलेके केवल परीहका रहनेवाला गैना और सुरेन्द्र बाबूका अनुग्रह बिच पर भी, वह नर्तकी रह गई। बच्चा लहव जन्मिसे लेकर आगे बसे। बेराको लगेलेके एक बार भी इरादा नहीं किया।

एक दिन तीनरे पहरके बाद, सूर्य मल होमेके पहले ही, पश्चिमी ओर बाहल पिरने लगे। सुरेन्द्रबाबूने मौलीको बुझकर कहा - देखते हो हरिचन्दन, बादल पिरत आ रहे हैं ?

“ओ ही।”

“आवह औषी भी आनेकी—मुझे क्या बान पड्या है ?”

“कैलास-खिठके महीनेमें औषी आना कई अचरव नहीं है बाबूजी।”

“तो बबरा एक बमह लगाकर बाँध हो।”

“लेकिन यहाँ कई बाँध लगे नहीं देग पड्या। क्या कुधाली बबरा लगाऊँ ?”

“क्यावेग्य नहीं तो क्या हुककर बान बना है।”

मौलीने बाग हलकर कहा—मेरे रहत मह डर नहीं है बाबूजी। औषी आनक पहले ही बमर हल दूँगा।

सुरेन्द्रबाबूने लीलाकर कहा—हयना लहव करमेकी जरूरत नहीं है—सुम बबरा लग दो।

लवना होकर हरिचन्दनने खिचारे पर एक साफ-सुधगी बमह देगकर परा लयाकर बाँध दिया।

सुरेन्द्र बाबू बगरीकी छतपर आकर बैठे । नीकर लम्बा मरकर रख गया । बाबू गुम्फुडीकी नकी कुँरसे लगाकर एक नौकरकी हुष्यकर बोले—बाबू उम्मादबीको बुझ दे ।

कुछ देर बाद एक पठौहक खनेवाले उम्मादबी सिपर हापमर कैना बाघ बीके, बाग्रीके दो हिस्स करके उनके खेना खेर खेना खनोमें खपेट मूलोपर तार खेत हुए आकर बोले क्या हुसम है हुसम ?

सुरेन्द्र बाबू उठ पाव किनारेके पल ही बलमर कुछ बाघी-बाघी-खी बीक उतराली हुँ खेर खे व । वह एक मनुष्यकर जि-ता बान पड रहा था । ठकीको वह मन ख्याकर प्यानसे खेर रह व । पहले उम्मादबीके खपट उनकर खनोमें ही नहीं खे । उम्मादबी उतर न पाकर फिर बोले—हुसम ?

सुरेन्द्र बाबूने मूमकर खेर । उम्मादबीको बलकर बाणे—उम्मादबी, बाघ बान पडता है, बीकी नहीं आखेगी । बाघ खनम-बनाना हो ।

उठने फिर हिम्पकर कहा—बो हुसम ।

सुरेन्द्र बाबू फिर वही बीक खेरने खे ।

बोड़ी देर बाद ही एक मुस्ली आकर बाबूके पाव गलीके पर बैठ गर । उम्मादबी बाबू तख्य हापमें खेर ऊपर खेद खे व । खेरकर सुरेन्द्रनाखन कहा—उम्मादबी, तुम नीके आखो । बाघ बागेकी बकरठ नहीं, खार्थ गना खेग ।

उम्मादबी बाघ खी ही ही खेर मीके उतर गर ।

इके पहले बो खी गलीके ऊपर आकर बैठी थी, उम्मा नाम बयाखी है । आख्या बान पडता है, खन खरी खेगी । खेर हुस-सुर मुखीय खेद है । खेरख, खेरख-खेरख मी खेरनेमें कुण नहीं है । वहुत खेरने सुरेन्द्रनाखी वृखणख है, उनीकी आखिग है । खेरखीके परकी लखी है । खेर-खेरख आखमर कुठ बहुत आखिग न था । एक खेमी बाघी किनारीकी खेरी खेर खे-एक खने पाने खेर खान्त पखी वृखी खेर खेर खेर खेर बैठी थी । सुरेन्द्र बाबू उठकी खेर खेरख बय खेरख बाउ—बा, बाघ तुमकर खिनमर नहीं खेर ।

“ खेरखके खान्त खिनमर खेटी खी । ”

“ बाघ खन आखमर हो गता है ? ”

बनासतीने बरा मुसकाकर कहा—बीड़ा कम हो गया है ।

“ गाना ग्य ठक्येमी ? ”

बनासती फिर हँसी । बोली—हुसम कीगिए ।

“ हुसम क्या करै, बो भी बाहे ग्ययो । ”

बनासतीने गाना शुरू किया ।

सुरेन्द्र बाबू उस पार बसमें उतरा रही बर कासी-कासी पीढक ऊपर नकर रलकर अम्बमनलक माकसे गाना सुनने लगे । सुनते-सुनते कुछ देर बाद, बनासतीक गाना समाप्त होनेके पहले ही, वह कह उठे—बना, वह पीढ हिक्ती-हुक्ती इधर उधर हो गयी है—क्यों न ?

बनासती गाना छोड़कर उधर विराप रूपसे देखकर बोली—पान तो पड़्या है ।

“ मेरी दूरबीन कहाँ है ? ( नौकरको पुकारकर ) अरे मीचेसे मय दूरबीनक कत छे के आ पाओ । ”

दूरबीन बाई । बसत कोकर दूरबीन निकालकर सुरेन्द्र बाबू बहुत देखक उठ बीकको देखते रहे । फिर दूरबीनकी कलमें कह करके उठ लगे हुए ।

बनासतीने पूछ — क्या पीढ है ?

“ कोई आरमी बान पड़्या है । ”

“ इतनी देखते पानीके भीतर क्या कर रहा है ? ”

“ वह तो नहीं जानता । देखना चाहिए उठ । ”

“ कोई आरमी मेव बीकिए । ”

“ मि आप ही बाकेगा । ”

आका पते ही एक मँली छोड़ी बेगमें बजरम सग्य हुआ एक गेठ ( डोगी ) के आया ।

सुरेन्द्रन कहा—उठ पार के बसमें ।

बाद बस पान पहुँचा तब सुरेन्द्र बाबूने दन्ता, एक गरी गयेक पानीमें डुबी गयी है । उलहा मुग कमलके सिने हुए पूरणी तरह सुन्दर है । बाके केय पारमकी तरह मीठे बकके ऊपर केके हुए हैं । सुरेन्द्र बाबू और पान गय, तो मी बद ली बोकी तरह नहीं बड़ी, उधर बड़ोकी वा बेगपर बड़ोकी इच्छा मी नहीं मकड की । बेली रिबर होकर लगी थी, बेली ही पतों की लगी लगी रही ।

सुरेन्द्र बाबूने कुछ इधर-उधर करके कहा—पान कोई गौव है क्या ?

“मैं कह नहीं सकती। जान पड़ता है, नहीं है।”

“तो तुम यहाँ कैसे आईं ?”

“कौन कुछ बोली नहीं।

“तुम्हारा घर क्या करी पास ही है ?”

“जी नहीं। बहुत दूर है।”

“तब यहाँ कैसे आईं ?”

“हम खेगोशी नाव डूब गई।”

“कब डूबी ?”

“कल रात।”

“तुम्हारे हाथके और खेम क्यों हैं ?”

“मुझे नहीं मालूम।”

“तुम इतनी देरसे यहाँ खड़ी क्यों हो ? आसपास किसी गौपक्ष पता क्यों नहीं लगाया ?

“जी फिर पुन हो रही।

भरनी बालक उठकर न पाकर सुरेन्द्र बाबूने कहा—तुम्हारा घर यहाँनि कितनी दूर होगा ?

“दूर कोठक लगाना।”

“किस हाथ ?”

सुरेन्द्र बाबू बड़ा विचर बा रहा था, उन्नी आर उन्तलस दिग्गजर झिने कहा—इत तल्ल ।

सुरेन्द्रनाथने कुछ सोचकर कहा—मैं इधर ही बाऊँगा। मर बरोमें एक स्त्री है। अगर तुमको किसी तरहकी आनति न हो तो मर नाथ बली। मैं तुम्हारा तुम्हारा पर पहुँचा दूँगा।

“विर भी पर स्त्री मौन ही रही।

सुरेन्द्र बाबू उसके मनस भाव कुछ मनस न पाकर कहा—बालकी ?

“बनौरी।”

“तो फिर भाव।”

विर कुछ पर पुन राकर उन झिने कहा—मरी धली एनमें कूरपर बर तर् है।

अब सुरेन्द्रनाथजी कमलमें आया कि वह खी हजनी देरसे पानीके भीतर क्यों लड़ी हुई है, बाहर नहीं निकलती। वह खुद नीचे उतर पड़े। मौखीय कहा कि वह होगी खैरफर बबरेसे एक होती ले आवे।

इसके बाद उछ खीस मूछ—बोती आने पर मेरे साथ बबरेयी न ?

खीने तिर दिसकर कहा—बबरेयी।

मौखी बोती ले आया। खबबर बाद वे उछ खीसो छेकर बबरेमें खी आये।

बबरेमें आकर सुरेन्द्र बाबूने उछ नबागन्दुक खीसो बबास्तीके सुपूर कर दिया। बबा मीठी बातें करके, बल और ब्यात्मीयता दिसाकर उछ खीसो रत मरके छिय अपने कमरेमें ले गई।

मंजन करकर, पान देकर, पाठ बैठकर, बबास्तीने उछ खीसे कहा—बहन, तुम्हारा नाम क्या है ?

खीने कहा—मंज नाम माळती है। और तुम्हारा नाम ?

“ मंज नाम बबास्ती है। तुम्हारा घर कहीं है ? ”

“ मदेशपुर गाँवमें। ”

“ यहाँसे किजनी दूर है ? ”

“ क्नामग दस-बारह खेस उत्तरमें। ”

“ तुम्हारी छतुरास कहीं है बहन ? ”

माळतीने बरा हँसकर कहा—कहीं मी नहीं।

“ वह क्या—क्या ब्याह महीं हुआ ? ”

“ हुआ या छकिन वह सब कलम हो गया। ”

बबास्तीने कुछ इमलिन भाससे कहा—जिन दिन हुए ?

माळती—बहुत दिन हुए। मुस ब्याहकी तब बातें भण्ठी तरह बार भी नहीं हैं।

बबास्तीने इत प्रसंगको बबलके छिय और प्रसन्न किया—तुम्हारे घरत कौन कौन है ?

“ कोई नहीं है। एक हुआ थी। बान पढ़ता है, वह भी नहीं रही। ”

बबास्तीने कमला, माय हुकनेना प्रसंग ब्या पड़ा है, भ्राएब इत बलाफी मं बबा करना खीने छेक नहीं कमला। खेयी—तुम लग कहीं बा रही वे बहन माळतीने कुछ छेबकर कहा—छान-हीनको।

“बो लोग तुम्हारे साथ ये, रुकना क्या हुआ ?”

“माफूस नहीं।”

“कब घर बाओगी ?”

“यही तोपती हूँ।”

बपानी क्या हँसी। फिर एकएक कर उठी—मेरे साथ बाओगी ?

मास्तीन कहा—ले पओगी तो पओगी। तुम्हारे स्वामीने मेरा बड़ा उपकार

किया है। और घरमें भी मेरा कोई नहीं है। घर बाकर किशके पास रहूँगी, यह

भी नहीं जानती।

बपानीने साथ चलनेकी बात कहकर ही अपनी गलतीपर बीम काट ली थी

मास्तीन उठकर मुनकर वह संकित हो उठी। बपानीको पान पड़ा कि

मास्तीनके छे जाना उसके लिए कोई तुलना कम न होगी। सुरेन्द्र बाबू अगर-

मास्तीनने कहा - तुम सोचोना पर क्यों है ?

“नारायणपुरमें।”

“और बा क्यों रही थी ?”

“बो ही भूमने-दिने। बाबूध स्वल्प कुछ गड़बड़ हो गया था,—हँसते

हवा बदलने निकल ब।”

और भी बो-बार बातें हुईं। इसके बाद दोनों लो गईं।

## २

गलबो सुरेन्द्रनाथ अपनी तरह लो नहीं लके, हँसते दूने दिन बहुत लके

पँस्य छेडकर उठ बैठे। हाथ-मुँह बाकर गुडगुड़ीस नक मुँसे ल्याय बरगबी

उपर आ बैठ। हनास बोए था। पान बड़ाकर मौसिबो-मालाहमे बरग लय

दिया। कुछ दिन बदनपर सुरेन्द्रनाथने बपानीका पुष्य मेवा। लके आनेर

पूछा—उत भीमका हाथ कुछ माफूस हो लया ?

“नर कुछ।”

“पर क्यों है ?”

“मरेचपुरमें।”

“मरेचपुर क्यों है ?”

“यह लो नहीं जानती। यहाँसे दन-बाह लेन लकने कानी है।”



“ बापका नाम क्या है ? ”

“ मैंने पूछा नहीं । ”

सुरेन्द्र बाबूने ईश्वर कहा— तब तो देखता हूँ, सब कुछ तुम जान चुकी हो !  
ले, स्वामीका नाम क्या है ?

“ स्वामी नहीं था । ”

“ तनुरक्त क्यों है ? ”

“ क्याया नहीं । ”

सुरेन्द्रबाबूने कुछ सोचकर कहा— बापि क्या है, जानती हो क्या ?

“ मा । ”

“ नाम जानती हो । ”

“ जानती हूँ— नाम माळती है । ”

“ अच्छा माळतीकी अगर कुछ आपसि न हो तो उसे एक घर मेरे कमरेमें  
रुका भेजो । मैं आप उल्लेख सब बातें पूछूँगा । ”

कुछ देर बाद एक नौकरने आकर कहा— कमरेमें बसिय ।

सुरेन्द्र बाबू तनिक मी देर न करके खीरन अपने कमरेमें आकर उपरिष्ठ  
हुए । पीछे फटाके गलीकेपर, माळती सिर छुआये बैठी थी । बचावती भी पास  
काड़ी थी । किन्तु सुरेन्द्र बाबूके प्रवेश करते ही वह बर्हसि बरठ थी । वह सब  
वह जानती थी, घाबर उठके सामने सब बातें न हो लके, घाबर कोरेँ अत्रुविषा  
हा— वह वह समझती थी, हठीसे सामनेसे हट आरै; किन्तु आइमे काड़ी रही  
थी या नहीं, सब बातबीत सुननेकी इच्छा उल्लेख मनमें बी वा नहीं, वह नहीं  
कहा वा लक्ष्य ।

सुरेन्द्र बाबू एक क्षणपर आकर बैठ । सुरबाप काड़ी देर तक माळतीकेँ मुँहकी  
ओर टाकते रह । माळतीका मुख बहुत मुखावा हुआ था और उल्लेख विचारकी  
छवा थी । किन्तु फिर मी बहुत मनोहर बन पड़ता था । देहका रंग बड़ा  
सुन्दर था । अंगोंकी सुषर्ण और सुधीअना अत्यन्त मीलितानक था । सुरेन्द्रको  
थान पडा, एक क्षीमे एकत्र हतना रूप उन्होंने पहल कमी नहीं देला ।  
विषया है— किन्तु कौन बालि है ।

सुरेन्द्र बाबूने पूछा— तुम्हारे पिताका नाम क्या है ?

‘ हासनचन्द्र मुन्धेय्याबाप । ’

“ वर परमें ही है । ”

माधवीने कुछ खेपकर कहा—ना । वर नहीं है ।

सुरेन्द्र बाबूने तनहा, उसके सिखायी मृत्यु हो गई है । बोले—वरमें और कौन है ।

अनभि माधवी बहुत डेर चुन रही । उसके अर चीरे चीरे बोली—जान पाया है, अर कोई नहीं है ।

“ इतने दिन तुम क्यों थीं ? ”

“ वही थी लेकिन हम गंगासागर जा रही थीं राहमें नाव डूब गई । ”

“ तुम्हारी लम्बाई क्यों है ? ”

“ काशीपाड़में । ”

“ वही तुम्हारा कौन है ? ”

“ छानक छोरे है, लेकिन मैं उन खेपोंको नहीं पहचानती । ”

“ कभी वही नहीं परे ? ”

“ ब्याहके समय एक बार गई थी । ”

सुरेन्द्र बाबूने कुछ खेपकर कहा—तुम्हारे मारकेमें भी कोई नहीं है, समुपमें भी कोई नहीं है—कममें कम तुम्हें मारकर नहीं—ता अर क्यों बाभोगी ?

“ ककहता । ”

“ ककहता ? वही तुम्हारा कौन है ? ”

“ कोई नहीं । ”

“ कोई नहीं ? तो फिर रहोगी क्यों ? ”

“ किमीका पर खेप देगी । ”

“ ठककर बार ? ”

माधवी चुन हो रही ।

सुरेन्द्र बाबूने पूछा—तुम मोजन काना जानती हो ?

“ जानती हूँ । ”

“ ककहतेमें अगर कहीं रोयी कानेका काम मिय बाप तो वही रहोगी । ”

“ हाँ । ”

सुरेन्द्र बाबू कुछ देर चुप रहे। फिर धीरे धीरे बैठे—माखड़ी, कलकत्तेके भव्यता और कहीं यह काम मिले तो जोगी क्या ?

माखड़ीने तिर हिवाकर कहा—नहीं।

बान पड़ा, बेधे सुरेन्द्र बाबू इस उल्लसते कुछ अस्पष्ट हुए। और कुछ देर सोच-विचारकर उन्होंने कहा—कलकत्तेमें जो पामेकी भाषा कही हो उसका दुगना-बौधुना और बगह मिस्रने पर भी नहीं करीपी क्या ?

माखड़ीने पहले ही वही तरह नामगूरी बाहिर करते हुए तिर हिवाकर कहा—कलकत्तेके तिरा में और कहीं नहीं बाँझी।

सुरेन्द्रनाथने एक लम्बी साँस छोड़ी। उनके मुँह मँस्र देखकर माखड़ी लज्जत गई कि उल्लस उल्लस सुरेन्द्रनाथके मनके माफिक नहीं हुआ। संभवतः इससे उन्हें स्वेच्छा अशुभव हुआ है।

सुरेन्द्र बाबूने वृत्ती और टाकते हुए कहा—वो खोग कलकत्तेमें नहीं जानते उनके लिए कलकत्ता बहुत बुरी जगह है। दुग्हाय वो जो पारि करो, सेकिन कलकत्तेमें बहुत चाबपानीसे रहना। और एक बात है। मेरा नाम सुरेन्द्रनाथ चौधरी है। नारायणपुरमें मेरा घर है। अगर कभी कोई बरखत आ पड़े तो मुझे राबर देना या मेरे पर बाझी आना। ही लज्जा है कि आपधि-विपक्षिमें दुग्हाय कुछ उपकार कर लूँ।

माखड़ी तिर छुन्नये चुनकी बैठी रही।

“हम एक उताहके बाद कलकत्तेमें तरफ लौट्ये। तब तक तुम इसी बबरेमें रहो। जब मैं कलकत्ते पहुँचूँगा तब उतर जाना।”

सुरेन्द्र बाबू ठठकर पल गय। माखड़ी वही बैठकर रोती रही। सुरेन्द्र बाबूकी छलम उम बनना पहुँची वी लकिन उतके रोनेके और भी लकड़ों कारण थे। सुरेन्द्र बाबूने उल्लकी छग्या लगी है, बबरेमें खान दिया है, और भी अधिक् उपकार किया है और मदिष्यमें करनेको कहा है किन्तु यह क्या करल रोती कानाकी नौझीके लिए कलकत्ते जा रही है ? लौहमपी मात्र, बीमार मार, अलहाय परिहार का वह छोड़ आई है तो क्या बरस दुगरोकी रोटी पधनर अस्ना पेट पाम्ने ही के लिए ? पाधिमारा काम तो एक बहाना भर है। वह पन बमाना चाहती है, और कलकत्तेके तिरा यह पन कहीं मिक लज्जा है ! बन बमानेकी यह भी उतने खोज ली है। माखड़ी कपलती मुलती है। यह

संते-माक्स हो गया है कि उसका शरीरमें कम कमका पड़ता है। कमका ज़रा शहर है। वहाँ यह रूप लेकर बानसे इसे बचनेकी चिन्ता न करनी पड़ेगी। शाब्द भाषा भी बिल्कुलकी नहीं थी वा लक्ष्मी है उठना घन मिल लक्ष्या है। इसीमे कमका बानके लिए उठन इतनी इद्द प्रतिका कर सी है। वहाँ उगल आर हीग, गरीबत बनवासी हागी, कपसे बीबन क्य रहा या, अब सुलते बीतेगा। फिर भी माखी रोती क्यों है। हम नहीं बानत—उसकी बान है, बरी बाने।

इसरे दिन हदपुर गाँवके नीचेसे बरघ बाने ल्या। माखी बचनेकी निहकीकी सिचमिची कोकर पके पापक निहारने लगी। पापके कोई आरमी उल कमब न या। बिल भाषामे माखी उपर ताक रही थी, वह पूरी नहीं हुई। गाँव छोड़कर बरघ दूर निकल गया। माखी निहकी बन्द करके पूर-पूरकर रोने लगी। बपाकी प्य आकर बैठ गई। माखीके आँसू पोंछकर स्नेहके साथ बोली— रोनेसे अब क्या होगा बहन। उन अगोके दिन पूरे हो गये ग, इसीसे गंगामेपाने उन्हें बरनी गोदमें ल लिया।

बपाकीने समझा कि नार हुक्नेसे परिवारक बी हुकर मर गये है, उनके लिए माखी रो रही है। माखी आँसू पोंछकर उठ बैठी। बपाकी अलपामे माखीसे बड़ी है, उतसे स्नेह करती है, उस छोटी बहनकी तरह मानती है। गामर वह मुनकर कि माखी कसकेसेमे उठर बापकी, उठका स्नेह भीर भी रुद गया है। माखीके बैठनेपर बपाकी और तरह लक्ष्मी पाते उकर उम पदलानेकी थोड़ा करने लगी।

३

दिनुभोगा स्थान है कि काशीपाममें स्थान हानेर चिस्येक प्राप्त हो बाग है। इसीमे नदानन्दकी हुआ काशी जाकर फिर नहीं बीटी, वही उनका स्वर्गान हुआ। नदानन्द हुआकी पवित्र रहस्ये गगाक किनारे बपकर, उनक चिगराक तक शिन्दकमें रहनेकी मुनबराया करके हदपुरको ली भावा।

एव्य वामे बगुल एन गय प्रवय करके लदा पागलमे अपने हापत हा रिकियों मेंकर गये। एक बार लोषा, उनी समय हारान बापूके पर बाहर वहाँके लखर रो आवे; किन्तु इतनी लक्ष्मी हैकने-मुनेकी—नय

सुविधा नहीं हो सकती, यह खेचकर किछीना निकालकर वह छो रहा। कपड़ोंमें घुंते छम्प वह हाथन बाबूके हुंरे बरिजकी बाठ, छम्पके हुंमामकी घट, कम्पनाकी घुंमि तफरीतकी बाठ बरिज खोजा करता था। रौमी हुंमामकी सेवामें बने रहने पर भी वह इन खोजोंमें भूक नहीं लगता था। बीनमें एक बार चिड़ी किसकर उठने बहोंके क्माचार जान किये थे, लेकिन उठके बाद फिर किछी ओरसे पत्र-म्पबहार नहीं हुआ। सरानन्द भी इसीसे क्मामय पत्र महीने भर उनकी कोई क्कर नहीं पा सका। अपने गौंममें छैट आकर वह उही सत्र शतोंमें पाद करने क्मय। बहुत रत मये तक जागते रहकर—स्वोकि नीर ही नहीं आई—छम्पके बौंठोंकी ओर घुंल रहिते खफते रहकर वह खेचने क्मा कि बाइके ऊपर क्मकका फूल सिक्ता है कि नहीं। क्कनाने उठकी इस बातपर कहा था कि मिहीके किना फूल मही सिक्ता। उक्क यह क्कना ठीक है कि नहीं। और वह बल सिक्ते क्की, उठने कैता जाना कि बाइके ऊपर क्मक नहीं सिक् लगता। वो कुछ हो, घुंके पिछे पहर छो जानेके पहले सरानन्दने यह तप कर जाय कि ऊपर आक्कणमें क्कके ऊपर क्मक फूल लगता है, किन्तु फूलकर अतिर दिनोंक सिक् नहीं लगता। उठके सत्र जानेकी अतिर सम्पाचना है। जान पड़ता है, क्कता ही बा रहा है।

हुंमरे दिन भीमान् सरानन्द पक्ककी महाशय क्क, क्कपत्र, क्कनाय-बीध प्रचार इत्यादि बहुत-जा सामान हाथमें क्किये एकत्र हाथन बाबूके घरमें आइर उपरिषल हुए।

भीतर कुंने ही सामने सुमदा बेस पड़ी। वह औंजन बुरार रही थी। हाइ कैकर, मायेकय औंबक बरा आगे लीरकर सुमदाने बीरसे पूछा—  
हुंम क्क आपे सरानन्द ?

“कत रानक।”

“कव अप्पी तरर है न ?”

सरानन्दन हुंमिन मायस बरा हैकर क्कदा—कव और बीन है ! एक हुंमामकी थी खे वह कायमें ही खान पा गई।”

सुमदा अप्पी तरर समस नहीं पाई। बोली—क्या पा गई ?

“हुंमामकी मृन्ड क्करीमें ही ही गई।”

शुभदाको इसकी लहर न थी। उसका अपना छोड़ इत शोकसे उमड़ पड़ा।  
शुभदा रोने लगी। बहुत देर बाद बोली—मैसा, छटना भी नहीं है।

तदानन्दने विस्मित होकर कहा—नहीं है! क्यों गई!

शुभदाने रोते-रोते कहा—भीर क्यों बावगी। कभीने सगारके दुल्ल-कइसे  
भरने मात्र दे दिये—आत्महत्या कर ली। आब पाँच दिन हुए, ग्याके किनारे  
उसकी पहननेकी चोटी मिली है।

शुभदा इरुइर रो उठी।

तदानन्दने भी अपनी आँसुके आँसु पीछे किन्तु आँसु एक बूँद या दो  
बूँद ही थे। इतक बाद शुभदा जब तक शान्त नहीं हो ली, तब तक वह स्थिर  
होकर बैठा रहा। शुभदाके श्वास होनेपर तदानन्दने कहा—कुछ कर नहीं गई!

“कुछ नहीं।”

“हस्तनदारा क्यों हैं मामी!”

शुभदाने आँसुके आँसु पीछे कहा—कर नहीं सकती। कभी कभी बर  
कर आ जाते हैं।

“वह आबइस क्या करते हैं!”

“यह भी नहीं जानती।”

“मायबअ क्या हास है!”

“देना परसे या, देना ही है।”

“भीर तब योग!”

“अपठे हैं।”

तदानन्द बालेके स्थिर उठने लगा। शुभदाने पूछा—शुभदारे यहाँ रामेश्वर  
कीन बनाइय? तदानन्दन कहा—धै आप बनाईय।

शुभदाने बय खेबइर कहा—यहीं न था लेना।

तदानन्दन कहा—रानेमें कीन हर्ष है! लेकिन उसकी बरुरत क्या है!  
तेरी बनामेका मुझे अम्मान हो गया है—कोई कर न होगा।

“न हो, छकिन नहीं, आब शुभ परी ग्याना।”

तदानन्दने कुछ खेबइर कहा—छकिन आब नहीं। आब मुझे शुभाकीका  
तर्न करना है।

शुभदाने खेपा—देखा ही होगा। एकीने उठने फिर कुछ नहीं करा।

हैं। हम खेमोन्ने इत कारमें विचार करनेका कोई अधिकार नहीं है। और वह अन्ध भी नहीं जान पड़ता।—केर, मैंने उससे कहा—मैं तुमसे प्यार नहीं कर सकूँगा।

“वह क्यों गई ?”

“ना। तब भी नहीं गई। उठनासे प्यार करनेके लिए कहने लगी।”

“पर तुमने स्वीकार नहीं किया ?”

सदानन्दका चेहरा बेकम्प और उसके मनके मास्को अनुमनसे जानकर, बरा हीउपर धारदावरजने कहा—अभीकार भी नहीं किया। मैंने कहा या कि बाबूजी राबी हो तो कर सकता हूँ।

“तुम्हारे पिता राबी नहीं हुए ?”

“ना।”

“क्यों ?”

“कहनेकी शक्ति नहीं थी, लेकिन करता हूँ, तुमो। बाबूजी मेरे प्यारसे कुछ पैसा कम्पना चाहते हैं। हाथन बाबू बना वह वे लखते ?”

सदानन्दने यह बात सुनकर भी बैठे नहीं सुनी। बोध—तुम्हारे पिता मिटना पानेकी आशा करते हैं ?

“पर तो मैं कह नहीं सकता।”

“जनकी आशा पूरी होनेपर और कोई आशय तो नहीं हो सकती ?”

“न होना ही सम्भव है।”

“तुम्हें पुर तो कोई आशय नहीं है ?”

“कुछ नहीं।”

“तो फिर देला बापगा।”

कहकर सदानन्द फिर साइ-साइड रौदका दुभा बीः पद्य।

धारदावरजने पूछा—अभी बाते हो। बरा बेर बैठोगे नहीं ?

“ना।”

“क्यों सदानन्द हममें मत कोई खोप नहीं है।”

“भावक नहीं है—मगान् जाने—मैं नहीं कह सकता।”

“नारायण हा गये ?”

“मही।”

सरानन्द वर सौकर कुछ देर इस कोठरीसे उस कोठरीमें भागा-गया। इसके बाद वह फिर वरसे निकल पड़ा। गंगा-किनारे जो यह बाती थी, उस पर पड़ने लगा। गंगाबीची छोटी-छोटी लहरें ऐसे पाछी लीदिसे उकरकर बस-बस उठ-उठ करती हुई जाती हैं और लीट जाती हैं। सरानन्द कुछ देर तक उन लहरोंमें बह सक रहेला रहा। वर पर एक बड़ा-ठा बरत उठ-उप डौड़ बरकता हुआ प्रधान गंगाकी छती पर बैला आ रहा था। सरानन्द अन्धमनक मासे कुछ देर तक उलकी ओर ताकता रहा। इसके बाद पाछी वरसे निपकी छोटी पर बैठकर पानीमें पैर डुबाकर भाग्यछपी ओर ताकता हुआ मनकी मीबमें कुछ गने लगा।

४

उसी दिन रात्रिके समय चौदनीसे रीे हुए प्रधान गंगाके बरत पर माटेके प्रगाहमें बैला-उठपता हुआ सुरन्द्र बाबूध बड़ा बरत, पीरे पीरे हाव पसनेकी तरह उठ-उप करके दो डौड़ पकता हुआ, उतरसे बधियकी ओर आ रहा था।

उठके ऊपर सुरन्द्र बाबू और बपावती, दोनों बैठे बातें कर रहे थे। नीचे कमरेमें सिद्धी लोसे माकठी गंगाके बधिरपकमें उठनेपाकी छोटी छोटी सहरोषे गिनती और औंभे पौछती जाती थी। माकठी समझ गई कि बरत हलदपुर आ रहा है। और कुछ दूर जाने पर उसे गंगा-किनारेका बरत पुटना पीकता पड़ दरत पड़ा। ठगके पस पकता था चन्द्रमाकी चिरमि बमगत रहा था—वह भी बैला। और उठके पीछे हलदपुर गौब लया हुआ निकलप पड़ा हुआ था। माकठी बहोफ प्रपक पर, प्रपक नर-नारीके निरिग सुरता मनके मैत्रेसे देखने लगी। और वह था—वह बरत उठना नाम्न परिचित थी तब होना बैला इसी बगद नहाती थी, कपड़े घौली थी, हाव पैर और देर पोन आती थी। इसी पान्मे बलकी मकर बस से पस पिला पीनेका और रतारका कम नहीं बकता था। माकठी अब मानकी है—वह अब लयना नहीं है; तो भी उस पान्का भूय नहीं था सलत, हलत सुनरीका भूय नहीं था सलत। इसीसे वह लोबती थी और लोय-लोयकर रती थी। और सरानन्द पण्डको भी वह किसी तरह भूय नहीं लकेगी। इसके पहल ही माकठीने बर



छोपकर देखा या। मास्कीने सोचा—छप्पना, किन्तो, कुम्पापुआ, मिरिबाया, रोल्फ्टी, रमा—कोई नहीं, कोई नहीं, लदानन्द ही अपना पागल बेहरा सिध दूर उलझी स्मृतिके आगेसे अधिक मार्गमें बसा हुआ बैठा है—अनोमि ठलीके गान गूँब रहे हैं।

मास्कीको बान पका, बेसे लदानन्द पागलका प्रफुल्ल मयूर सर कपल होकर बसपट्टा-ना कहति आकर उठके बानोंके भीतर पहुँच रहा है। मास्कीको विस्मय गा रहा है। बहरा और कुछ आगे बढ़ आया। मास्कीने देखा, पारके नीचे काली पैर डूबाये एक आरमी बैठा है। लेकिन गीत कर ही गया है। वह आरमी कौन है, वह ठीक पहचान न पाने पर मी मास्कीको एक मावस पत्र कि वह लदानन्दके निवा और कोई नहीं है। पागल-ऊनकी आरमीके निवा इतनी छत्रो और कौन मात्रा गंगाको गीत सुनाने आयेगा! चौबने-बिबानेपर फिर उठके कोई खन्हेर नहीं रहा। तब मास्की फिर रोने लगी। शिकनी ही लदानन्दकी बली पाह आने लगी, उठनी ही छप्पनाकी बाह आने लगी। छप्पना, मापब हुआ और अभाग्ये हासन मुजर्बी, सभी लदानन्दकी पारके आलस्यन धूम-झिंकार आने लगे। अन्तको बहुत रात गये रोते-रोते मास्कीको नींद आ पार्य।

नींद खुली, खबेर हुआ, क्रमछा खूब निरुपय, दिन बढ़ने लग्य। लेकिन मास्कीने उठा नहीं गया। खरी देहमें बड़ा दर्द पा। बेह गम हो आई थी। फिर उमक रहा पा। और मी अनेक उपद्रव उठ लगे हुए थे। हातीने आकर हास हास स्तब्ध देखा और करा—दुईं छे देल्फ्टी हैं, कुम्पा है। मास्की चुन रही। बपान्नीने आकर बेहरा हास गलकर देखा। मिडकी गुली देलाइर बग मीठी डीन आई। बली—इस तरह बरी मिडकी लडकर उथी हासमें गना बाहिए! एन भर पुरेबा हवा बजलेने कर हो आया है।

मास्कीने हकी बचाने करा—छे गई थी, इकीते मिडकी नहीं कर दुर। मुनेन्द्र बाबूको लहर दुईं छे बह लुर रोपने आब। लयनुप डगार पा। उनके पात्र रोपिमिधनेरिफ बबाओरा बस्य पा। उठके हया निरालकर उइने ही और बपान्नीने लयन रोतर कर दिना कि टोलीको ताबचानासे रत। बपान्नी मास्कीके पात्र आकर बैस। मिडकी मिडकी तब बन्द थी। मास्की

पूठ नहीं देल पाती थी। बरग चल रहा है वा लड़ा है, वह भी वह ठीक मस नहीं पा रही थी। कमरेमें बबरावतीके सिवा और कोई नहीं है, यह देखकर मास्तीने कहा — बीबी, हम कितनी दूर आ गये हैं।

बबरावतीको यह दीदी करने लगी थी।

“आठ-दस कोलके सगभग भाये होंगे।

मास्तीने यह नहीं बानना चाहा था। उसने कहा—कसकसा अब कितनी दूर रह गया है?

“अभी दो दिनकी राह है।”

मास्ती चुप रहकर कुछ सोचने लगी। फिर बोली—बीबी, अगर दो दिनमें मेरी तबियत ठीक नहीं हुई।

बबरावती उसकी बातको ध्यान गई। स्त्रियों ऐसे मयब मनमें ईर्ष्या नहीं रखती। इसीसे बरा देखकर उसने कहा — तो हम तुमको कसमें फक रेंग।

मास्ती भी बरा देखी। किन्तु क्याही देखी और मास्तीकी देखीमें योड़ा फर्क था। मास्ती बोली—यही अप्प हत्या बीबी।

बबरावती कुछ अप्रतिम हुआ। उसने वह सोचकर पहर नहीं देला था कि उसकी इस बातको दूसरी तरहका भी कुछ अब हा सक्य है। बस्ती—छि-ऐसी बात भी कोई बचन पर सता है।

मास्ती फिर चुप हो गई — कुछ उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप खेचकर देख रही थी कि बबरावतीकी ही बात सब हा तो कैसा हो? क्या अप्पा हो? नहीं, अप्प न होभा। वह मरना नहीं चाहती। उससे कोई अप्पा तरह पूछ ता वह कहेगी कि यद्यपि वह मरनेम अधिक बलघ पा रही है, तथापि मर नहीं लहेगी। मरनेमे वह डरती नहीं, तथापि उसे मरनेकी इच्छा नहीं है। वो लग्य वह अप्पा कर सक्य है, उनका दुःख इतना अधिक नहीं है।—उसकी औत्सास हो मूद भैलू टरक पड़े।

बबरावतीने प्यारमे उसकी भावों पोंछ दीं। बोली—बिन्ना बनें करती हा बान? पुरनार हच हन्नेम बह कुछ घाम हो भार है, हकके सिध बिन्ना करनकी कोई बस्यत नहीं।

हकके ठस्यत कुछ खचकर, ठारपान हाकर उसने कहा—अगर ये

दुआ, दुःखारी वकित ठीक न हो लखी, तो मी एक उपय है। पल ही कळका है—वहाँ डाक्टर-बैचोंकी क्या कमी है ?

बिक्रितकोंकी कमी कुछ नहीं थी और बरकर भी कुछ नहीं हुई। बहरां भित दिन कळकसेमें आकर पहुँचा, उस दिन माख्ठीका बुलार कित्कुल नहीं था, लेकिन घरीर बड़ा दुर्बल था, भमी उसने कुछ खानेको नहीं पाया था। कळकचा छड़कर, कुछ दूरपर दूरे किनारेपर बबरेका खमार शक्य गया। कमरेकी सिड़की खुली थी; माख्ठी गिर निकलकर बहाव, मधुस, बड़ी-बड़ी नाचें और मधुसे धेसे बने और ठेके मझनोंकी चोटियाँ देखन लगी। माख्ठीका डर माख्म हो रहा था। बही क्या कळकचा है ? तब तो इत मीड़ माड़ और इतने गुळ-मपाड़ेमें कौन किछकी बात सुन पावेगा ? अपने ब्यस्य घरमें कौन उतकी भार देखनेकी कुल पावेगा ? किन्तु वह तो न होगा—उस वहाँ जाना ही होय। बिकके लिए उतने इतने साहस्य बह काम कर शक्य है, बिनअ मुँह बेसकर—बिनअ कष्ट दूर करनेके लिए उतने नरकमें बूबनेस इतदा कर दिया है—इस खेक और पर खेककी किजी मी बलके मनमें खान नहीं दिना, उनके उम मुनके बह इतनी बखरी मूस नहीं लनेगी। भाव न हो कळ छही, बह भाभव छेड़ना ही होगा तब डरकर क्या होगा ?

उतने कमकठ जानेका पछा इतदा कर दिया; किन्तु सुरेन्द्र बाबूने बह प्रचार कर दिया कि बरग तीन-चार दिन और परी बँबा रहेगा। माख्ठीका घरीर अब किट्कुल ठीक हो जावगा, तब उतकी वहाँ इच्छा हा बहो जावगी। बरग मी उमी छमप खेक जावगा। यह सुनकर माख्ठीने मन ही मन उनका इबारा पन्यवाद रिबे। मनमें यह बही मना रही थी; क्योंकि यदि बिकना बखरी उमका कर्षण हा, व्याभव छड़कर बठहारे पने जानेके लिए मनका छड़केमें राखी नहीं बिना जा सक्या। इमक परने ही बह इनी बलक लिए भरने मनक ताव शगडा कर रही थी—अब कैसे खल्पिकी खँस खेकर लमगा-बुझाकर पत्नमही खगय एक तरदम मनको मनानेका उस मौका मिल गया।

दुगरे दिन शहरक समय बबालीने कळकचा बूमन खानका निश्चय किया। लखीक लिए गाड़ी और पानसी (छर्य डोली) ठीक करके नौरन खर दी। बबालीन खब पत्नक लिए सुरेन्द्र बाबूमें बटुन करा, खुशामद की,

लेकिन वह किसी तरह पसनेको राखी नहीं हुए। मासुतीने बाता बाहा मा, मगर बाबूने मना कर मंत्रा—कह्यो मेवा कि उन्नी तवियत ठीक नहीं है, मिर बुलार आ उर्या है। उर सखार होकर प्रवाली अकेले ही हाथी और नौकरके साथ लकर भूमने पसी गई।

मासुती कमरके भीतर लटी हुई थी। सुरेन्द्र बाबू दरवाजा ठेसकर भीतर दाम्बिल हुए। मासुती संकुम्भिल होकर उठ बैठी। सुरेन्द्र बाबू कुछ दूरपर बैठ गए। बहुत देर इसी तरह बैठे रहे। वह कुछ कहनेका इरादा करके भाये व लकिन कहनेका साहस नहीं होता था। बहुत देर बाद बरा ककर, कण लोच कर बोले—तुम क्या निश्चय ही बहीर उतर जाओगी ?

मिर दिसाकर मासुतीने कहा—हाँ।

“तुमने क्या अच्छी तरह साब-विचारकर देल सिगा है ?”

“हर सिगा है।”

“कहाँ जाओगी ?”

“सो तो कुछ नहीं जानती।”

सुरेन्द्र बाबू हँस पड़े। बोले—तो मिर क्या सोचकर देला है ? आब नहीं, कय कयइते बाइर एक बार कनइतेका भीवरी रंगइग देस आओ, उतके बाए अगर निश्चितो छंदकर अनिश्चित ही अच्छा लग तो पसी जाना। मैं मना नहीं करूँगा।

मासुती कुछ नहीं बोली।

सुरेन्द्र बाबू कुछ देर चुन रहकर फिर परल्लय अविड उद्यान मात्रस कोण तुमने इस घरमें विराना नहीं छाया होम, उनना मैंने सोच-विचारकर देला है। तुम प्राणवर्ती कया हा—दोर नीचइति या ग्यय काम नहीं कर लओगी। मने आइमीकी लइकी तुम किगी मछे घरमें प्रपय न कर पाओगी सो बहो रह महीं नसगी। इस दयामे अलहाय हाकर, बिना किसी सहारेके किछ तरह इनमे बड़े घरमें तुम आसप स्येब लगी, यह मरी समझमें नहीं आता।

कुछ देर ठहरकर बाबूने मिर कहा—और वह मी गौर करके देखे कि तुम्हारी बह अर्या है। इन अर्यापामे इन्ना-माकक कयाप रलकर, अर्याके

संमत्कार क्या तुम सब सभोगी ? मुझ डर है कि तुमको पस पगार विपत्तिका नामना करना पड़ेगा ।

माखी चुन्चाप तो रही थी । उठने इन सभी बखोंपर विचार करके देखा था; लेकिन उसके स्थिर इतके सिवा और और उपाय न था कि यही उतर जाय । वह हम पहल ही कह चुके हैं ।

सुरेन्द्र बाबूने समझ लिया कि माखी तो रही है । उन्होंने माखीको पहल ही रोले देखा था; किन्तु इस समय उन्हें और ही कुछ जान पाने लगा । उन्होंने कहा — तो फिर तुमने जाना ही तब कर लिया है ?

माखीने बोलें पोछकर फिर हिटाकर कहा — जी हाँ ।

नारायणपुरके बमींदार सुरेन्द्र बाबूको बहुत धन मूल या भाँदु, समझते थे किन्तु वास्तवमें वह भौदू नहीं था । जो जाग उन्हें भौदू कहते थे, उनसे भी जान पड़ता है, वह सौगुना अधिक बुद्धिमान था; किन्तु अनेक समय वह दुर्बल प्रकृतिकाके मनुष्यकी तरह काम करत थे, इसीलिए उनको तहजमें नहीं पहचाना जा सका था । माखीके मन भी काठ वह ताड़ सब । वह बरा होते । उसके बाद माखी वह पहलकी अपेक्षा तुम्हें, तब उन्होंने कहा — माखी, तुम्हें बचपनी बड़ी बकरत है न ?

माखीके बोलू फिर उक्त पड़े । जान पड़ता है, बनका इतना प्रभावन दुनियामें और किसीमें नहीं है ।

“ बड़ी बकरत है—क्यों न ? ”

माखीने रोना कुछ कुछ कर करके दूरी-दूरी बामीमें कहा — बड़ी बकरत है ।

सुरेन्द्र बाबू हँसे, अब उन्हें समझनेको कुछ बाकी नहीं रहा । पगला हुआ बलाइ उनको हँसी और, इतना करत वह था कि बुर संगके शेरम बर वह भूम गये थे कि इन सब ( रूप बचपनकासिबों ) के भी रोनेका बचाप करत हो सकत है, ये सभी फैमानक स्थिर नहीं रोनी । कुछ हँसर और कुछ हँसी बकाइ उन्होंने कहा—तब फिर तुम रोनी क्यों हो ? तुम बचपनी हो बचान था, बचपने जा रही हो । अब तुमको धनका चिन्ता नहीं करनी होगी । बचपनेमें हीनक गरीबी-गरीबी बिलती पड़ी देल जाभागी ।

माखीका जान पड़ा, अस्वस्थ बचपनका उतम फिर पढ़ा अस्व होकर नीचे फिर पड़ा है । अब हम सिद्धकीने गद्यमें और पद्यमें भी विशेष धति न

होगी। मास्त्री ऐसा ही कुछ करने का रही थी; किन्तु तबसा उस जान पड़ा, हममें बाधा पड़ी। वह मूर्च्छित होकर और एक आरमीकी गोदमें गिर पड़ी है किन्तु उठ गोदमें बेने आग बिठी है। वह बड़ी कठिन और लपटी हुई है। उसमें बेन निकलना भी मीम नहीं है—तनिक भी कोमलता नहीं है। तब पत्थर है, सब अमिमव है। मूर्च्छित अस्वामे भी मास्त्री सिहर उठी। जब उसे होना आया, तब उसे जान पड़ा कि वह किसीकी गोदमें नहीं सेटी है। औसि लोसकर देखा, अपनी धप्यास ही पड़ी है। किन्तु सुरेन्द्र बाबू उसके पग उमर मुँहकी ओर ताकने हुए बैठे हैं। सग्रासे उनका मुँह माल हो गया। दानी हाथोंमें मुँह टककर उसने करण काल की।

बुल हर एक सुरेन्द्र बाबूत कहा—मास्त्री बल प्राप्त जाल में बबरा लाल दूंग; लेकिन तुमको नहीं छड दूंग। तुमको मेरे साथ जाना होगा। सीन यत्कर मास्त्री मुनने सर्गी। सुरेन्द्र कहने लगा—जिनके लिए तुम कसकसे जाना चाहती हो सो तुमसे हो न सकेगा। जान पड़ता है, तुमने पहले यह वृत्ति कभी नहीं की—अब भी नहीं कर सकेगी। तुम्हें जिनने पनकी बरुत होगी, जिनने सुन और स्वपुन्दरार्थ अमिष्यय होगी, वह मैं तुमको दूंगा।

मास्त्रीकी बर्षा हुई सीनके साथ औलोम औलू निकल आये। सुरेन्द्र बाबूत यह समझा। बड़े प्यार और प्यस मान्त्रीको अपनी गोदमें सींचकर बोले—मास्त्री, मर साथ रह। मैं लूह पनी न होनेपर भी दखि नहीं हूँ—तुम्हारा पर्व मजमें उठा लूँगा। और तुम्हीं बगभ्ये मल्य, मैं अगर तुम्हें यहाँ छोड बाँकेगा तो क्या तुम बँती रहोगी? या मैं ही पाल्य मनम अपने पर गी लूँगा?

सुरेन्द्र बाबूने उम और भी हृदयके पाग लीब सिवा लहरक साथ औलू पाठ दिये—आपसे, छि छि—सग्रासे लकुजिन उन होठोंको पूसकर बोले—क्यों, तो बखगी न?

मास्त्रीके लगे शरीरके रोड़े लड़े हो गये, लारी देह बँव उठी। वह अब यह पहली स्थना नहीं है, वह मास्त्री है अब। वह और बँव नहीं है, इन समय वो है बदन बगी है। सुरेन्द्रनाथकी चिर-संगिनी, आकम-प्रसविनी। पत्नी, बत्नी, वह लपन्ती—मगर अब लीब-मरिषी नाम लनकी क्या बरुत? वह पया, वह पय्यारखी है। किन्तु इतने ही

हानि क्या है? सुम्भ, घान्ति, स्वर्गकी गोदमें मान-अपमान क्या है? सम्भना अर्थात् कर्तमान मास्ती निरुम्भ, व्यभेदन स्वर्ग-प्रतिमाकी तरह सुरेन्द्रनाथकी गोदमें पड़ी रही। वह गोद अब अरियम्म, कंघम्म, फयर और अंगारोंकी संभ नहीं है—अब वह घान्त, जिग्घ, क्रोमस, अमृत-मधुर है। सम्भनाको खान पन्न, इतने दिन उसे घाप-सा क्या हुआ था, अब फिर स्वर्गमें आ गई है। इतने दिन बाद उठने अपना खुशवा गवा धन सम्य पाया है। मास्तीके सिकुड़े हुए होठ फिर फैल गये। सुरेन्द्रनाथ उन होठोंको बास-बार चूमते हैं और पापकी पहली सीढ़ी उतरकर, अपनेको भूँकर सम्भना स्वर्गसुख भोग गयी है। उठ समय सूर्य अन्धकारका बा रहे थे, सुष्ठी सिद्धकीकी धमिले वह पापन्न चित्र देखत गये। उठ समय तीसरे पहली सुष्ठी फिरनाके स्वर्गसे सुरेन्द्रनाथकी नबरामें सम्भनाका सुम्भमण्डल पहलसे हवारगुना मनको मोहनेवास्स बान पड़ा। उन्होंने हवार आवेगस, हवार तुष्णासे उठ सुत्तको फिर चूमकर कहा—मास्ती, तो चलेगी न।

“ चलेगी। ”

सुरेन्द्रनाथ उन्मत्त हो उठ—तो चले, अभी चले।

“ लेकिन कीसी ? ”

“ कौन कीसी ? ”

“ तुम्हारी स्त्री। ”

सुरेन्द्रनाथ बैठे चौक पड़े। वह सिहर उठे। बोले—मेरी स्त्री। उसे मरे तो बहुत दिन हुए।

“ यह बबानी ? ”

सुरेन्द्रनाथने सुष्ठी देखी बैठकर कहा पवा मरी स्त्री नहीं है। उससे मैंने कभी प्यार नहीं किया।

“ तो फिर वह क्या है ? ”

“ कुछ नहीं, कुछ नहीं। तुम मेरी तर हा, पर कार नहीं है—तुम ही तर हो—एक कुछ हो। ”

अबकी मास्तीने बानों हाथ सुरेन्द्रकी गरदनमें दस दिये—उनकी छातीमें धूर छिन्न किया छि छि। मुकड़ण्ट होकर बास्ती—मैं तुम्हारी बिरवास्ती बासी हूँ—मुसे छडना मरी।

सुरेन्द्रन आबेक मय कहा—नहीं, कमी नहीं।

“ तो फिर मुझे ले लो । ”

“ लो । ”

“ आज ही । ”

“ अभी, अभी पढ़ी । ”

इसी समय बाहर सेरों से बोग तरह-तरहकी आवाजमें चिल्ला उठे— पकड़ो— पकड़ो— हा बाभा— भयान-भयान, चारिं गरिं— रूप गरिं— हाव-हाव इत्यादि । सुरेन्द्रनाथ बौद्धक कमरेके बाहर भागे; साथ ही साथ माधवी भी निकल पड़ी । सुरेन्द्रनाथने देखा— एक पार, उस पार, पारों ओर मौसी-मदमाद कुली-मबदूर सब बसा होकर चिल्ला रहे हैं और बुरफर समझा गंगाकी बीच धारामें एक छरी होगी खीमरक टकटक पीरे-पीरे डूबी जा रही है ।

पछममें ही सुरेन्द्रनाथने पटनाको समझ लिया । वह चिल्ला उठे— ठगमें मरी क्या है ।—साथ ही साथ वह बम्में पीरे पड़ रहे थे; किन्तु पाठ छोड़ी माधवीने उनको पकड़ लिया । सुरेन्द्रनाथ पागलकी तरह छटपट करके चिल्ला उठे— पकड़ो नहीं— पकड़ो नहीं— मरी क्या डूबी जा रही है ।

तब तक वह छरी-सी होगी उस बड़ खीमरक तसे पीर पीरे डूब गई । सुरेन्द्रनाथ भी मौसी-मदमाद, नौकर आदिके हाथमें मूर्च्छित हो गए ।

५

“ क्या ! ” होता भानेपर अलि एकादर तबमें परसे सुरेन्द्रनाथ भागुम भागमें कह उठे— क्या !

एक बेटी माधवी उनकी मंदा कर रही थी और भाने अलि भी पीछे पी पी । सुरेन्द्रनाथ तब तरह बपाको पुकारा, ठगस बड़ और भी अधिर अलिमाधवी पीछेने छली । लेकिन सुरेन्द्रने उपर देखा नहीं । बयस एक पार उगरी ओर देखा था, उठके बाद अलिमें मुँदे पड़े रहे ।

बहु देर तक इसी तरह पड़ रहनक बाद एक मधवी छवि छोडकर कहा— बपाकी कोई मकर नहीं मिथी ?

एक ही एक पुकता नीरक गया था । उल्ले बाहर मधुमे कहा— नहीं ।



“ सार नहीं मिली ! तो धान पड़ता है, अब वह जीका नहीं है। ”

नौकरने साव-विचारकर कहा — धान तो यही पड़ता है ।

“ उठ किजनी हुई ? ”

“ दल बड़े होंगे । ”

“ दल ? तो मी लखर नहीं मिली ? ”

“ बी नहीं । ”

सुरेन्द्रने और अधिक इताय होकर मापेपर हाथ दे माया । फिर कहा—तुम सब श्रेय बाभो—सारे घरमें, सारे गंगाके किनारोंपर जाकर उठका पना लगाओ ।

नौकरने मनमें सोचा, हुकम सुग नहीं है । मुझमें कहा — जो आज्ञा ।

फिर वहाँसे उठ आकर अपनी ग्यार से रर ।

कमरेमें — बहारेपर—मासठीके सिंग और कोई नहीं है । किन्तु सुरेन्द्रनाथ उठसे नहीं बासे शुभवास बैठहाला औलू बहाल रहे । इसी तरह समब बीजने लग्य । कमरेकी दीवारमें जो पड़ी स्त्री थी वह अपनी बायले मारक बाद धारह, उनके बाद एक, दो, तीन, चार इसी तरह अपने सब भंड बचाती पत्नी गई; किन्तु किसीने उपर प्यान दिया हो, पेंग नहीं जान पड़ा ।

सुरेन्द्रनाथ हथर उभर करक बरस रहे थे । मासठी पाल बेठी उनकी मगजा देखने लगी और औलू पांउने लगी । उस मी कठ हुआ है, मगजा हुई है और उसमें अधिक अदन ऊपर पूजा हुई है । वह अन्न भूत, मविष्य और स्नमान पर विचार कर रही थी ।

एक छं कसकठेमें गगा-ग्यार एतमर मगस्य नहीं रहता, दूसरं अब छे चार बब गय है । चारों ओर पौड़ी-बहुन सेमोंक बायनेकी आदृट मिय रही है । छगोंके सत्न-फिने और आने-बाजेका शब्द हामे लग्य है ।

सुरेन्द्रनाथ एका-क उठकर बैठ गय, मासठीकी आर ध्यात्र रह, फिर कुछ देर बाद बीच — एतमर परार बागनेम कार्य स्वम नहीं । तुम बाइर लोभा ।

मासठी गठकर बा रही थी । सुरेन्द्रम उग पुताकर कहा बैठा, बाभी नहीं; तुमने कुछ करना है ।

मासठी दो पग भाग बढ़ गई थी; फिर लौटकर पदल ही की बगदपर बेड गई ।

सुरेन्द्रनाथन एक बार ऑल्ले रागड़ी, एक बार बेने क्या कहेंगे, वह खेन  
पिया, उनक बाद गम्भीर रखमें बाक — मास्त्री, किमके पारले यह हुआ !

मास्त्रीके खिलार बेने भावनाय कए पड़ा। यह बात पहले ही यह बहुत का  
भरनेमे पूछ चुकी थी। उत्तर भी एक तरहसे आने पा पिया था। किन्तु यह  
करनेमें उनका मुँह नहीं खुल्य, इसीत यह सिर झुकाय निरुत्तर बैठी रही।

सुरेन्द्र बाबूने भी बा कहनेका विचार किया था, यह न कहकर कहा भ्रष्टा  
यह बात फिर होगी — इस समय तुम बाओ।

मास्त्री पहिले आकर अपने कमरेमें लए रही। किन्तु क्या उसे नींद आई ?  
नहीं। बाकी गा बाराबाद पर पढ़ पढ़ छान्दनी रही। अनेक बार ठठकर बैठी,  
अनेक बार लम्बी। अनेक देखा-देखवाओंके नाम लिपे, अनेक घंठ पाद की।  
इसके बाद सचरेके पहिले कन्नाकी होरमें तरह तरहके सपन देखन लगी।  
उसने देखा, बाराबादी छात्र साथ आँगामे लड़ी उलझा पूर रही है। कमी देखा,  
सदानन्द मनकी मौहमें गा रहा है। कमी देखा, उम्मी मा सुमदा ए रही  
दे। अनेक बात पढ़ा, बेम माधर आकर उनके खिलारने पना है—कहीं किसी  
अज्ञान भेगमें चलेके सिंग साग बार उन उनेविष कर रहा है। मास्त्रीरी पही  
बानेकी इच्छा नहीं है। अकिन्त यह किन्ती तरह जेड नहीं रहा है। मास्त्रीकी  
आँख पकाएक खुल गई। आँख खोलकर देखा, कहीं कोई नहीं है। केवल  
मात रागक धुपरी दिगर्ण तुली गिड़कीय आकर उनक सुगरा पढ़ रही हैं।  
मास्त्री फर्क छड़कर दाइर आई।

उस दिन दिनभर सुरेन्द्रनाथ उस नहीं देखा पड़े। कुछ पहले ही यह बराग  
छड़कर पद लये थे। दूसरे दिन भी यह नहीं आय। तीसरे दिन सामग पहले  
आकर अतन कमरेमें चले गये, और भी लम्बे हाथ बन्द कर लिया। यह दिन  
भी ऐसा ही बीग। चौथे दिन उन्होंने मास्त्रीको दुस्य भेजा। मास्त्री भीतर  
आकर निरुत्तर रागड़ी रही।

सुरेन्द्र बाबू एक बागब निकर खिलार रहे थे। बान पना है, कहीं पत्रलिप्य  
दे गे। मास्त्रीने भाड़ी नखरन दान इरन देखा, उनका पदग बहुत ही उतग  
हुआ था, आँख मलल हा रही थी, दरमें बगर बगर कप भी बीनड लगी हुन थी।  
मास्त्री आर ही आर बीन उठी। उस बान पड़ा बेम बहुत ही गर्हित अज्ञापर  
बिखारक निरुत्तर दिखारनेमें लपलप रहा है।

सुरेन्द्र बाबूने भाषा सिखा हुआ वह कागज एक ओर रखकर तिर उठाकर उसकी ओर देखकर कहा—तुम्हारा शरीर अब अच्छी तरह सुस्थ हो गया है क्या ?

मास्तीने बैठ ही तिर छुड़ाने यत्न दिखाकर कहा—हो गया है ।

सुरेन्द्रने कहा—मैं आज बबरा लीस हूँगा । उठ पार कलकत्ता है—तुम्हारा यहाँ भी बाँदे का लपटी हो ।

सुनकर मास्तीकी आँसुओंमें आँसु आ गये । पर उठने कुछ कहा नहीं ।

सुरेन्द्र बाबूने पसपस कागज हाथमें लेकर कहा—यहाँ भर एक मित्र है । उनका पत्र पढ़ाकर वह पत्र लेकर उनके पास पधो । वह तुम्हारा कुछ उपाय कर दंगे ।

उपरो एक आँसु मास्तीकी आँसुसे नीचे गळीसे पर गिर पड़ा ।

बान पढ़ता है, सुरेन्द्र बाबूने भी उस देख पाया । बग ठहरकर बोले—तुम्हारे पास अपना-मेठा घापद कुछ भी नहीं है ?

सुरेन्द्रनापो फिर कहा—यह मैं जानता था । यह लो—

कहकर एक मनीकेग तकियेके नीपस निवाकर मास्तीके पैरके पस पैरकर सुरेन्द्रने कहा—इसमें जो कुछ है उससे, किसी तरहका कोई उपाय न होने पर भी एक काम एक तुम्हारा काम मजमें पठ बाबया । उसके बाद इतरके आशीर्वादसे भी हो लो द्ये ।

और एक आँसुका बूँद पंथ पर टपक पड़ा ।

सुरेन्द्रने कहा उठ तिन ठम्मल था, इनीमे पूछा था कि किमके पापने पैला हुआ । किन्तु अर मुझ होय भाषा है । अब बेलना है, गरे ही पापम वह कर है । तुम निरौय हो ! अपनी बबली मीने ही मार बाप्य है ।

माप पर फीनेक कुछ बूर बना हो रद व, ऊँद हापसे पोछकर सुरेन्द्रने कहा—बहुत हुआ—अब पाप न करूँगा । कुछ दिन छू मागपर रहकर रदू—घापद इन्में मुन पाऊँ ।

मास्ती लड़ी रही, सुरेन्द्र बाबू पर पत्र समाप्त करतो ल्या । पत्र समाप्त होन पर तिरनाम्य तिरकर वह पत्र उहोने मास्तीके भाग कूँक रिया । बाउ—बद ल्ये । इयमाबागामें पत्र सया ऐना । बान पण्य है, इतम उपकार होगा ।

आँसुं हुए हापत मास्तीन पत्र उठा रिया ।

मुनेन्द्रने कहा—बपये छे छे ।

मास्तीने बपयोना बटुआ भी उठा लिवा । दरसारेकी ओर एक पग बढ़ी ।

मुनेन्द्र बाबूअ भी बाने कैसा कर उठा । बोले— परमेशी राहपर रहना ।

मास्ती और एक पग बढ़ी । अन्धी मुनेन्द्रनाथका गन्ध कौपा—मास्ती,  
२२ दिनकी बाल भूल जाना—

मास्तीने दरसारेकी मुठियों पकड़कर लीपी, दरसारा भाषा चुस गया ।

मुनेन्द्रनाथका कण्ठ और भी कौप उठा—अम्भबमे बटुमें पड़नेपर मुसको  
बाह करना—

मास्ती बाहर निष्कम आई । साथ ही साथ उनकी भीलें भी भीनुभोजि भर  
गई । पुत्राग—मास्ती ।

मास्ती बही लड़ी हा गई ।

फिर पुत्राग—मास्ती ।

अन्धी भीतर बाहर यह किवाड़ोके सहारे लड़ी हो गई ।

भीलें पोंछकर मुनेन्द्रनाथने कहा—बपाना शोक अभी तक नहीं भूसा—

मास्ती द्वार छोड़कर बही बैठ गई, उमरी देह कौप रही थी ।

मुनेन्द्रनाथ बास्तीकी तरह रो पड़े—मास्ती, क्या लेकर उलाममें रहूँगा ? तुम  
अगर मुस छोड़ बाओगी तो मैं नहीं बर्बूंगा ।

यो बहकर अन्धी नीचे चरौपर छेप गये ।

मास्ती पल आकर बैठी । अपनी गोदमें उनका गिर उठाकर लल  
सिवा और उनका भीनु पेटनी हुई बोधी—मैं नहीं बाऊँगी ।

तब दोनों बने बटुा देलक रोने रहे । मास्तीने फिर उनकी भीलें पोंछ दी ।  
मुनेन्द्रनाथकी भीलें मुँहा ही थी । २२मी तरह पड़े-पड़े उन्होंने दूटे हुए स्वर्गमें  
कहा—उन दिन तुम्हें क्या कहा था, याद है ।

“क्या कहा था ?”

“गिर-दाली कहा था ।”

“बही ललरो ।”

+ + + +

मुनेन्द्रने ऊँचे आस पुत्राग—हरिवान ।

उपसस हरिचरन मीसिमी कहा— भी डुवर !

“ बरग अमी लोम हो । ”

“ भमी ! ”

“ हौं, भमी । ”

६

बस तक बरग दिखारि देता रहा, वस तक सदानन्द गाना करके उठीकी ओर देखता रहा । उसके बाद पर्ये आकर सो रहा । भाव उठता मन लगप हो रहा था । नींद भी अथमी तरह नहीं आई । प्रातःकाल शुभदाके पास आकर उठने कहा—“ भी अगर नहीं ला सिपा करके तो क्या पैना हो लफता है !

शुभदाने एने हुए मुलमे कहा बवो नहीं हो लफता ।

सदानन्दन कहा मैं यही खेप रहा हूँ । मरे कोई रोटी बनानेवालय नहीं है । दोनो बल बही रोटी ला किया करेगा ।

शुभदाने धाच-विचारकर कहा—अप्य तो है ।

सदानन्दन कहा—बुभाभी समुराभ्ये उनकी कुछ बमीन है, वह मीने ही पर । हा-एक दिनमे वही बापर मुझे लव देखना-मुनना हागा ।

“ सो तो निभव ही वलना-मुनना होगा नहीं ल और कीम बरेगा ? ”

‘ हमीने लाकता हूँ कि भवनी धानका बोठाव वही लव हूँगा—नहीं तो धान बाव पुग से ला लफता है । ”

शुभदा भीतरकी था नहीं ललसी । बोसी—इतन दिन ल किसीन पुपमे नहीं ।

“ न पुपप हा, सेकिन भव लो पुपप का ललते है । ”

शुभदा पुव हो रही ।

हक हा-एक दिनक भीतर ही सदानन्दकी धानकी बोठाव, दाखना मलक, आदना लोच, नागिपकसा वर, गुडका पाग, लव एक-एक करक आकर मुसवीने परमे खान था लग ।

वह देवार शुभदाने कहा सदानन्द, लव क्या बड़ेग !

सदानन्दन हेंगर उतर दिया—बाव मरी है, लोयोकी नहीं है । मैं यही लला हूँ, वही लला हूँ—मरी पीव-वगु भी यही रहती ।

पाल्पर्म मोहलक इस आदमी इस तरहकी बातें करने लगे । किसीन कहा—हरानकी स्त्रीन लज्जानन्दपर बाजू कर दिया है । किसीन कहा—सदानन्द अरु पूरा पागल हो गया है । किसीने यह अफवाह फैला दी कि लज्जानक साथ सदानन्दका ब्याह हो रहा है । सदानन्द यह सुनकर मन ही मन हँसा । जिनन उगळे मामा यह बल उठाए, उस उमन हँसकर एक रामप्रसादका गाना सुना दिया । किसीन शिस्तगी करके कहा—मैं दर्जेगा तो हो पीषा बमीन तुम्हारे नाम जिन बाँडेगा । किसीन कुछ गम्भीर हाँकर कहा—पागल आदमी पागलपन कर तो इतक सिधे तुम चिन्ता न करो । कमया खेगोका मुँह बन्द हान लगा । शिस्तु खो खोग इर्ष्याके बस व, बे मन ही मन बल्लन लगा । मन्कारन गौगुलीन यह हाल सुनकर सदानन्दका बुझकर शिस्तु रूपत उपदेश दिया ।

दिघन रूपत उपदेश पाकर सदानन्दने पुगलिन माफने कहा—बद होनका था, गो हो गया । अफकी बुभाबीकी लमुरामत खैर आकर पानकी कोठार आपक परमं रन बाँडेगा ।

गौगुलीने बहुत ही लफ्फा होकर कहा—तुनो श्री सदानन्द, तुम्हारे जिया मी बुझ मानन और मया अरुप करत य ।

“मैंन मी किसी प्रकार आपन अरुधी नहीं की ।”

“तु फिर ऐसी बल क्यों कही ?”

लज्जानन्दन कुछ अग्रनिम मार दिग्गतर कहा—समा कीविपण, मरी बुद्धि क्या ठिगान नहीं रहती ।

गण्णगणाय और मी सिद्धक बोले—तुम नर होने का रर हो—बधा हा रहे हा !

सदानन्दन सुन्धरानर कहा—आर खग चाड़ीनी बेरा करत तो हापद कण्णर हानेमे बल भी बा सरता था ।

गौगुलीन कहा—तुम मरे तामनेस बल बाम्य !

“बो भाग ” कहतर सदानन्द पातर आतर लुर हँस जिया और फिर ऊय खग रामप्रसादका एक वान छुट कर दिया ।

पामने का खेबरन पल्लरा करत निरपर सिधे हाँको बा रहा था । उमन लज्जानन्दकी भीगामे हँसीकी पमक और शुभमे गाना देलतर कहा—खो पासा, हलमी पुसी कारकी है ।

लदानन्दने हँसते-हँसत कहा—यँदुओ महाशयके वहाँ भाव खोला बा। एउ  
पेउ मन्कर ला आया हँ।

उठने कहा—ठीक है।

तब आकण्ठ पर्यन्त मान गया है—यह पूछकर, और एक बार हँसकर  
लदानन्द हुए किये हुए गानेश गला हुआ मनके ध्यानरहे पछ रिया।  
कंगक्षीपण मी हाथी और पछ गया।



वहाँपर एक बात कह दें। जमिने कहा है कि स्वर्ग और नरक मनमें ही  
है। तुम-दु लक्ष्य लक्ष्यमें अस्थिर बहुत कम है। यह बात समूह लक्ष्य न  
होनेपर भी हठके आशिक लक्ष्य होनेमें कोई खन्दर नहीं है। कारण, हासनन्दके  
पार्थिव मुक्ती को अस्थिर सीमा है, धर्मका तब मुक्तीके कैसा उपयोग नहीं  
कर पायी। हासनन्द होनेसे बल मनमें खोजल करते हैं, पाँपते  
ही खीले हो-बार आने जैसे बर्षण नाम लक्ष्य या बाँटे हैं, उन्हें  
अपना करनेका संकल्प नहीं है। अकण्ठ बाजारके मीतर सिर कैसा  
किये भावे-बात है, किसी तातेका एक पैज मी अब उनपर बर्ष  
नहीं है। नयेके ओषधेने उनका पहलेका पर सम्पन्नके साथ फिर लीज  
रिया है। और क्या पाहिए ? और जो कुछ बाँधी है, उनके लिए हासनन्द  
अपने मनमें सोचने हैं कि लदानन्द और बरा वाग्ल हो प्राप्त तब उठे भी पूरा  
कर लेंगे। तब मदकषी वृक्षान भाव ही लरीद लेंगे और छोटी बात हयमखरी  
वास्तव्यनीके समग्रका पूरा कर हेंगे। उतका एक लक्षण लक्ष्य जानने उठके  
गामने कँडकर वहींगे—छोटे आदमीनी बटी ! मुझ सिद्धकी कपटी है ! देव  
समझती है ! अरे मरके मर्या और लीके परिकषे देवता लो जानव मही, वेरी  
क्या दली है !—और वह ममान नन्दी—बड़ा कभीदार बना है। उसके  
पारके गामने ही मदकषा अङ्ग न लार्द लो मेरा माम हासनन्द नहीं।

इस दिनों हासनन्द मनेसे कोई-न-कोई गला धुनलुलाये हुए बाहुनगाडा  
गौमें घूमने-फिरने रहते हैं।

नकिन हमरा ? उठकी मी क्या पेसी ही मान्ना है ! ममान धानते हैं,  
लक्ष्यका हुए उठने एक दिन मी मही पाया कभने कम उठे बार नहीं।

उसी स्वामीजीके अन्न-संबंधन निश्चय देनेमें उस किटना आनन्द, किनी वृत्ति मिथ्या है, इसकी ठीक ठीक बातें वह आज ही नहीं कर पाती। आनन्दसे उसकी भीखोंके खेतोंमें भौंरू भर आते हैं। किन्तु इस कौन देखेगा ? देखने वाला एक व्यक्ति था, समझनेवाला एक आरामी था; लेकिन वह पहले ही चप्य गया। कबल यही बा होता तो शुभदा इसी मुझमें सांसारिक कहानी समाप्त कर दे सकती किन्तु उषा छम्मा दिन दिन बर्फी होती जा रही है। उषा केम क्या उषाप हागा ? जो मर गया वह तो बी गया। किन्तु माचरके मनमें क्या है, वह शुभदा किसी तरह समझ नहीं पाती। आजकल उसकी चिकित्साकी सहाय्यता और चण्ड मुपाग भी है, मरुतक इत्यत्र भी हाता है मगर उषा कुछ फल होता नहीं देख पाता। शुभदा यह बात खोजकर माया पाटनी है, छम्मासे यह कुछ आकुल होकर आज ही आर अकर्ममें लगी है और छम्मा बर्ही गई है बर्ही उषाके पत्र खानेकी कामना करती है। फिर मदीये बल लगी है, मोहन बनायी है, सबसे निष्पत्ती-निष्पत्ती है। इसी तरह दिन बीतन चल पाते हैं।

एक दिन दासहरजी मोहन करने बैठकर सदानन्दने शुभदाके मुझसे और देखकर कहा—छम्मा खानी हो गई है।

शुभदाने मन्त्रि सुनकर कहा—हो।

“अब क्याह किये बिना और काम नहीं चल्गा—देखनेमें अच्छा भी न लगेगा।”

शुभदाने कहा—मा दुर्गा ही जाने।

दानन्द बग हँस। शक—मा दुर्गा तो क्या न कर जावैगी।

छम्मा चुप रही।

दासानन्दने कहा—हरमाहन बाबूके सड़के दासदानन्दके साथ भी तो गार हा सकता है।

शुभदा अच्यी तरह समझ न पाई। बोली—गारदाक साथ ?

दानन्दने कहा—हो।

‘तबिन क्या यह संभव है ?’

‘असंभव ही क्यों है ?’

“क्या जाने !”



वह बल शुभदाने सम्पूर्ण हलाक मानस ही करी ।

पागल सरानन्द हम बातको समझकर, कियकर बग हैंत बिया । फिर  
कहा—यह बात मैंने एक दिन धारदावरपस करी थी । वह तो राबी है ।

शुभदाके मुगलर आमहके निह प्रकट हुए; किन्तु बेस ही तुरन्त मानस  
हो गये । शुभदाने कहा—लेकिन ठठके पिता, वह क्या राबी होंगे ?

सरानन्दने कहा—कबो न राबी होंगे ?

कबो न राबी हांग वह शुभदा समझती थी । सड़केकी इच्छा रहने पर भी,  
उमक बापकी इच्छा कबो न होगी, यह भी वह जानती थी; किन्तु लोमकर  
कह नहीं सकी । एक बार ठठकी इच्छा हुए कि पूठे कौन ठठके पिताका  
राबी करन बावगा ? लेकिन यह भी उसने नहीं कहा । कसब बुपबाप कलर  
दृष्टिसे उमक मुलकी ओर ताकती रह गई ।

पागल सरानन्दने वह मौन भारा भी समझी । बेस्य उमक बापको राबी  
करनेके लिए हम ल्येमाका ही बेधा करनी होगी । कारण, स्याह ल्ये करना  
ही होय ।

शुभदान डरत डरत, आछा-निराशाके बीच, अरुण खरमें कहा—वह राबी  
होग क्या ?

“ निश्चय होंग । ”

“ केन बाना । ”

पागल सरानन्द फिर बग रैनकर बस्य—मैं बानता हूँ । आप चिन्ता न  
करिये; मैं निश्चय राबी कर हूँगा ।

और ल्येभी दरमोहनका दिन तरह राबी करना हांग वा किन तरह राबी  
किया वा लकटा है, यह सरानन्द विरोध करस बानता वा और राबी बस्य  
होंगे, यह भी बानता वा ।

लेकिन शुभदाना वा मही गदा । लोमकर भीतर बूष ल्येके लिए लूँ ।  
किन्तु बूषना कथेय हायमें लखर बमारपानीय उममें एक बग ल्ये ल्ये  
बैर भी मिश्र हाय । अग्रिम मारमें बाहर आकर बायी—बरा बठा सरानन्द,  
बूष बरलकर लगी हूँ ।

दूरर ल्येमें बाहर बूषकी कदांमें हाय गकर शुभदान बाधा और री

लिया। तावपान होकर और भी दो-चार बड़े बड़े भौंख बरती पर गिरनेके बाद भौंखें पोटकर रूप कपड़ेमें ढाकने लगी।

शुभदा रोई अवरण; लेकिन य भौंख फलेश पीरकर निकलनेवाला राहके पूर नहीं वे बसिक बलागमबक सम्मन होनेमें था आनन्द हाता है, उसके भौंख य। इनमें सम्मनाके छाकका एक पूर बस, स्वामीकी बेदनाका एक पूर पानी मी गाबर था।

मीरान समाप्त करके सदानन्द मैदानकी ओर पल्ल। वहाँ उसके लेन है, किमान कम करत है, गऊ-बछड़ करत रहत है। सदानन्द सेठकी मेड़पर कुछ बेर घूमता रहा। फिर एक पीपलकी बगमें बैठकर दण-पौन बार बस्यीका नाम लिया, दो-चार बिष्म ठमात्तू फूँकी। इसके बाद बहोसि ठठकर इम्पेहन चाबूक बैठकनानेमें आकर उपस्थित हुआ।

बूढ़ हरमोहन उठ सम्मन लकर ठठकर पान पद्य रहे ब। सामने बिष्म मरी रखी थी—उत्कथ तथा अमी तक लूत गम नहीं हुआ था—सिफ बोड़ा बापा सुर्मो निकल रहा था।

सदानन्दको देखकर बूढ़ कह उठे—क्यों जी, बहुत दिनोंसे तुमको नहीं दगा—कहाँ य।

सदानन्द बस्य—इसर बाड़ीमें बहुत दिन रहा।

हरमोहनने कहा—हाँ, यह तो सुना था। तुम्हारी बुभा बाड़ीमें स्वगसाकिनी हुई—यह भी सुना है। भाव कब ? बैठा।

सदानन्द लूत सप्रतिम मावत बूढ़क पात ही बैठ गया। सदानन्द किती बलाको कहनेके लिए कुछ भूमिना नहीं बोलता, सिप्य ब्यहमर उसे अण्डा नहीं खला। बैठते ही कह बैठा—आरके पात विराहका प्रस्थान लकर आया है।

हरमोहनने ईनार कहा—कितके विराहका ?

सदानन्द—आरके पुत्रता।

बाबरी बूढ़ गम्भीर हो गये। बामके ह्यग म्दरहारकी पार्श्विकके लम्बर हसी शिरोको बहुत दूर छान्न भाव है। हरमोहनकी नजरमें उनके पुत्रके प्यारकी बापीका एक बहुत बड़ा मानना था एक बहुत बड़ी बामकी बात थी। अन्तक हल शिरामें उन्हें बहुत शिमाग लाना पड़ा है—अनक संदण ठठान पड़े है। उनही समयमें आर ऐन बटिक देन-लेनको तय करनमें—बहत कानेमें पूरे

तीरसे बुद्धि न बड़ाई जा लके तो किसी तरह एक ग्वाभ्येक्षित निर्वन्ध लक्ष नहीं पहुँचा जा सकता। उनकी यह चारणा ही न थी सफ़ेद बाजोंवाले बाड़ी-मूठ-ठण्डट बुद्ध स्वच्छिके सिवा और कोई कर्मठिन आदमी ग्वाभ्येक्ष प्रस्ताव अपने मुससे निकलस लच्छा है। इत समय एक नवपुत्रके मुससे ऐसे गम्भीर विपक्की अफ़वारणा मुनकर बुद्ध हरमौरन कुछ पिछड़ हो उठे। कुछ दिन पहलेसे ही वह मुन पा रहे थे कि तशानन्दका मस्तिष्क और अधिक विकृत हो गया है। इस समय उसके पागलपनका ऐसा प्रकल प्रमान पाकर वे बहुत ही कल्ले फनके लय और पूरी तीरसे गम्भीर बनकर बोले किजका ग्वाह ? शारदाका ?

“जी हाँ।”

बुद्ध अन्वमनलक मावस मौतलकी ओर उँगलीका इशारा करके बोले—बान पड़ता है, उधर शारदा है। बाभ्ये।

बुद्धकी आकृति-ग्रहृति देखकर इत कपनक म्दल्लव सदानन्दने लमल मिया। बरा ईसकर बोस—शारदास मंग क्म नहीं है; आपहीके पाल भाषा है।

बुद्धने पहलेके ही ठंगसे पूछा—मेरे पाल।

“जी हाँ।”

“क्यों ?”

अभी आपसे कहा म कि आपके पुत्रक लम्बन करने आया है। शारदाका क्या ग्वाह करिगा ?”

“कईज, लेकिन इतने दुर्गे क्या करना है। दुर्गे क्या प्रसोबन ?”

“क्या बिना प्रसोबनके ही आया है ?”

“दुर्गास प्रसोबन। मुससे।”

“जी हाँ।”

“लेकिन दुर्गारे लय म तब बाँटे नहीं हो लच्छी।”

सदानन्दने समझा कि बुनियाके इन लरहके ग्वाभिसोके भाग मुनकर तनिक भी ईतौका बिद्ध रहे तो बालकीन नहीं बल लच्छी। मुनका बड़ी हौड़ीकी तरह क्नाये किना मेम-न्देकी, कप-नेकी बल तनिक भी लमसी जा लच्छी है, इतकी इन लच्छाके मनुज शारदा ही नहीं कर लच्छी।

तब सदानन्द बोहा करके बिना हो लका लमना गम्भीर बनकर बोस—

मृत हो सकती है। मैं जब बासक या ठमी मेरे पिताजीका स्वर्गदास हो गया था। तब मैं ही उनकी सब बायबाद और मामझको देखता-सुनता-आ रहा हूँ। सांसारिक पालपीत हम लोगोंको ही करनी पड़ती है। मैं जानता हूँ कि आइका साकब करम आनेपर लगे-देनेकी बात तब करनी होती है। मैं आशा करता हूँ, इस मामझको बिठना आप तमसैग उठना ही मैं चाहूँगा।

इस हरमोहनका बरी पहली बार जल हुआ कि वह ठीक पारलम्बी-सी बात नहीं करी गई। मोड़ा लीचकर बोले—अबस्य। लेने-देनेका कुछ फेरस्य तब करना ही चाहिए।

हरमोहन ईसीको दबा नहीं लक्या। इसीमे फिर बग ईठ पड़ा। फिर बास्य—मैं तो पहले ही आपसे निवेदन कर चुका हूँ कि वह तब दलपीत मरे नाब करनेसे विधिप सति न होगी। लेने-देनेकी बात तब करनेके सिध ही आपकी मझमे उपरिप्य हुआ हूँ।

हरमोहन कुछ नम्र पड़े। बाक—किछकी बड़की है! कहीं है!

“इसी गौबमे है, हायनबन्त मुञ्जोपाप्यापकी बूखी कन्या है।

“हायनकी!”

“जी हाँ।”

“वह क्या देगा?”

“आप जो चाहेंगे बरी।”

बुद्धन कुछ सोचनक बाद कहा—छाकी देगने-मुननेमें बेम्बी है!”

“आपने उसको देगा है; लेकिन छबद आपको पाद नहीं है। किन्तु, मरी तमसमे साइकी दलन-मुननेमें डुपी नहीं है। आपने पुत्रने उठरो देगा है—विशाद बनको अनिष्पुड भी नहीं है।”

अबकी बुद्ध बत ईमे। बोले—तब ये ठीक ही है। और हमारे परहाबाक परमे मोमकी पुापीता भी शिधेय प्रपोवन नहीं है। देरन-मुननेमे विहायन बुनी न हो और परस काम-काज कर तब, इतना ही प्त चाहिए।

“वह सब बह कर मरी।”

“लेकिन हायन क्या है नक्या? कपन-नेनक विहायन उन्की हाक्य तब अब भगुनी नहीं है।”

“ना, हास्य व्यक्ती नहीं है। इसीका स्वभाव रखकर आप जो भावा करोगे, वही बह-रिगे।”

बुद्ध बरा मुस्किन्में पड़ गये। मन ही मन सोचा कि ब्यापिक बघात्र उदेलन न करना ही अच्छा होता। किन्तु बुनियाके मामलमें तीस्र बुद्धि रखनेवाले पत्तर हस्योहनन अपनी इस मूक्ये बर सुचारवे हुए कहा—मगर जानते हो मैना, सङ्कीके आहमें कुछ कर्ष तो होता ही है।

“अवस्य।”

तब हरमोहन आम्वातके माफिक होठोंकी शीत्र ईँसीके विरा करके पत्तरके आहमी बनकर बोले—एक तरहस मकर रकठ-मुद्रासे कम लम्बर में धारदात्र विगाह भिरी तरह नहीं कर सकता।

सदानन्दन ईँतकर कहा—परी दिवा बापया।

सदानन्दकी बल मुनकर बुद्ध से अपने ही ऊपर लीत्र उठे। उन्होने मन ही मन अपनेको एक बलुन बड़ा गया कहा। टेढ़ हवार रुपये कबो नहीं करे? यह अधयोग उनके हृदयमें घुलनी तरह गड़ने लगा। सैर, बल बल मुँहस निष्क गरि तब बह फिर सौठई नहीं था सकती। जो हो, अब बिगड़ी किनी मुषारी बा लके उखनी मुषार लनेके उदरेखसे बोले—सङ्कीको गहने मी अवस्य देने होंग।

“बैरक देने होंग।”

“दान-तामशी मी बैठी होनी पाहिए होगी ही।”

“जो हों।”

“तो फिर मैं मी राजी हूँ।”

“तो एक दिन ठीक कर दीजिए।”

बुद्धने बरा धूक पैरकर कहा—यह विराह-तन्मय अवस्य अपने आपमें हा रहा है, और दागनको मैं कुछ मर नहीं ल्माराप हूँ, तो मी तब निबमोच पाप्म करक पाछना हाग।”

गदानन्दने कुछ धंजिन होकर कहा—निबम और क्या है।

“निबम परी कि आरुनी बल होनेपर मी उगनी एक लिना-पुत्री हो जानी पाहिए।”

“अच्छे बाल है। स्त्रिय-कड़ी कर सीविए।

“छिन्न स्त्रिय-कड़ी कित्तु साथ हामी।”

“मेरे ही साथ कर सीविए।”

“कब।”

तदानन्दन हमस मालकर कहा—एक महीने बाद।

बूढ़ राबी हो गय।

तब तदानन्दन कहा—मय एक अनुग्रह है।

“क्या मैसा।”

“बह ऐन-देनेके साथ कोई ठीक्य आदमी न मुन पाव।”

“क्यों।”

“एक धरम है।”

हमोहन पात्रक आदमी हैं। तदानन्दके मनका मय अनुसकर साथ—

पुनवार बान करना चाहत हो।

तदानन्द चुन हो रहा। उग्रम मुख देखकर, बह निस्ताप दया देखकर उन पड़ी हम्मोहनका भी स्त्रया मालूम पझे सगी। किन्तु हम पहले ही कह चुके हैं कि बह पूरे मनकी बीज थे उन्होंने इस मालको अधिक देर तक मनमें न छिन्न दिया। एनी ईसी ईसकर धोते—मैसा, हम धोग बूढ़े हो चुक है, इसकि हमारी आँखोंमें उजना लीछ या मनमें उजना सुप्पहिवा भी नहीं रहा। नहीं तो हासनकी हम्म में रिशेर रूपम ही बानता हूँ। गैर, मुम बह बानकी बानोतान गगर नहीं होने देना चाहत हो तब मैं भी पुनवार उम ल लूँगा। हमके छिर मुम कुछ बिन्ना न बरो।

मदानन्द प्रपुरा मुगमे नमस्कार करते बहोमे पय दिया।

## ७

हममान मुना, हागन बचन मुना, उजान भी मुना कि हागबानरगद मय गल्का ब्यां हो रहा है। पर ब्याह मदानन्दन बगना है। मुनकर ताम्रमिन साथ बाहिर की कि मदानन्द पूर्वकममें हमदारा पुत्र था। मदानन्दक मनन भी बह बाव कही गई थी। उनन कुछ उत्तर न बकर हम श्रीदार कय जिग, कोई प्रतिवाद नहीं दिया।

अनेक शंकाओंके मारे अशक्त वह अपनी कुआली बावदादको देखने-मानने नहीं जा सका था। अब समय पाकर उठने पर वह—बानेकी अपनी इच्छा छुमवाते करी। छुमवाने सहमति प्रकट की। तब पौष्ट्य-पोषकी बॉक्सर कुछ दिनोंक किए श्रीमान् तद्वानन्दने विदेशके किए यात्रा की। छुमदात्म परिवार अब उल्ला परिवार हो गया है, अतएव छुमदाके परका तब प्रकष कर बाना वह नहीं भूला। साय ही ब्याहकी और तब तैयारी कर रखनेके किए छुमदाके विद्येय रूपसे कर गया। वहाँ बाकर तद्वानन्दने मृत कुआली सारी क्वीन-बापदाद अक्षी तरह देख-सुन सी। इसके बाद एक आरमीको वह तब लौकर बर्षान् उसके हाथ तब बॉक्सर पत्रह दिनके मीतर ही वह इवदपुर लौ आया। हम्मोहनके साय ब्याहमें देने-देनेकी, सिखा-पूरी की, गहने सदाये, तब बौल-बलु मीतार, ब्याहका दिन ठीक किया। इसके बाद समय निकलकर एक दिन शाहदावरसे मुलाकात करने गला। इतने दिनतक एकात्मने शाहदावरसे हो बातें करनेका समय वा अन्वया नहीं मिल पाया था। अब बहुत दिनोंके बाद होनेने आश्रमे कुछ बातचीत करना पारी, इसीसे हाथमें हाथ हास हुए दोनों रंग्यके किनारे एक बगहर आकर बैठे।

बैठकर शाहदावरने कहा—तद्वानन्द, तुम्हें क्यापनकी बातें बार है।  
 “कुछ कुछ बार क्यों नहीं है।”

“बार आती है कि जब मैं एक आरमीका बहुत प्यार करता था, वह कंसक इसी रणको दिन-रात लेया करता था, तुम्हारे आंग किन्ती आया, किन्ती कल्पना, न बाने किन्ती और क्वीन-क्वीन बातें करवा-सुनना था, इन्तेस किन्ती लेप था और हम हैंकर उठा हते थे, वा अत्य-विद्वप करत और क्नात य—  
 वे तब बातें क्या कमी तुम्हें बार आती हैं तद्वानन्द ?”

“बार क्यों नहीं आती ? वह तो बानी काली बल है। जान पड़ता है, कल-आठ मास अधिक न हुए होंगे—तकिन उन बातोंर अंग-विद्वप तो भिने कमी नहीं किया।”

“मुझ ला जान पड़ता था, देने हम विद्वप करत थे। जेर वह पारि बी हा, इनके बाद किन दिन उनमें मेरी तब आया भूममें मिय ही—  
 इन्तक हम दोनों ही बेचना-बातना कर करके लदाके किए विदा हो गये,

उस दिन कितनी रात गये तब तुम्हारे पाव बैठकर मैं रोया था, वह तुम्हो  
बाद है मर ? ”

“ हाँ है । ”

लदानन्द कुछ अभ्यमनस्क हो गया । लेकिन ठहर छत्र न करके पौड़ी पुर  
पर कैर्णसे विपन्नकर धारदावल्गने कहा—उठ बगद बह मरी है ।

लदानन्दने वह बात बैसे सुनी ही नहीं । गंगामे एक नाव पाठ उठाने  
लेखी पत्नी का रही थी—उसीको वह ताकटा रहा । धारदावल्गने फिर कहा—  
कम्ना इसी बगद झूझकर मर गई ।

अबकी लदानन्दने मुँह मुगाकर कहा—कित बगद ?

“ इस बगद । ”

“ कैसे जाना ? ”

“ वहाँ उठकी पहनी पीली पाई मरी थी । ”

लदानन्द उठकर लफा हो गया और बोला—तो पत्ने, वह पीली बग  
दान थावे ।

धारदावल्ग बग हैला । बोला—पीली क्या अभी तक वहाँ बरी है ?

“ तो बन्ने, वह बगद देस थावे । ”

तब दोनों उठ बगद काकर राफे हुए । लदानन्दने बस देकर मुँह बोला,  
अँरे बोरे । इतके बाद फिर बयातपान आकर बैठ गया ।

“ लदानन्द, मुसे बड़ा पछावा हो रहा है । ”

“ क्यों ? ”

“ कभी कभी जान पड़ता है कि मैंने ही उठको मार डाला । ”

“ क्यों ? ”

“ बगरीरर जानते है कि उठकी आसु कम्ना हुई थी कि मरी, किन्तु  
मुसे जान पड़ता है कि मैं ब्याह कर लेता तो शाबर वह बब भी मरती थी । ”

लदानन्दने एक लम्बी लँग स्त्री । बोला—बो मरा वह बकर ही मरता । तुम  
क्या बनेग ?

“ वह मैं जानता हूँ । तो भी अगर मैं उठकी दान मान लेता, अगर  
ब्याह कर लेता—”



—द्वानन्द इसा । बोला — बातोंसे जो निश्चय दिने चाते ।

छात्राचारमने यह सोचा । बोला — हाँ, बात ही जाती ।

“ तो फिर तुम और क्या कर सकते थे ? ”

छात्राचारमकी भौल्लोर्मि औसू आ गये । बोला — अब क्या कर सकता हूँ  
लेकिन तब इतना पछवावा न होता ।

गदानन्दने वृथी ओर देखत हुए कहा — बीरे बीरे तब दूर हो बासग ।

छात्राचारमने कहा — आहा, अगर मैं उसका आशिरी कहा मान लेता —  
उतके अनिम्य अनुपेक्षकी रक्षा कर सकता ।

“ क्या अनुपेक्ष किया था ? ”

“ उतने कहा था कि एक गरीबकी बात कबाले उतनासे प्याह कर दो । ”

गदानन्दने उतके मुसक्री ओर टाककर कहा — तो क्या उतनासे प्याह  
न करोगे ?

“ कर्सेग, लेकिन वह क्या उतके अनुपेक्षकी रक्षा करना हुआ ? ”

“ क्यों नहीं हुआ ? ”

“ एक तरहसे हुआ कसर, लेकिन अन्ध गदानन्द, चापूके तुमने केसे  
राही कर किया ? ”

गदानन्द मुसक्रीवा । बोला — मैंने कहा कि वह प्याह करनेकी तुम्हारी  
इच्छा है ।

“ किई इतना ही ? ”

“ और क्या ? ”

“ मैं क्या चापूके बासग नहीं ? ”

गदानन्द फिर ईसा । बोला — तो फिर पूछते क्यों हो ?

“ मैं पूछता हूँ कि निजान रुपये देने हयि ? ”

“ यह तुनतम तुमको कोई काम नहीं । ”

“ गदानन्द, यह पापम बन बो है । ”

“ मैं आशीर्वाद कर्सेग कि तुम्हारा जीवन तब तुमने कर । ”

“ काम हानेत मैं तुमको ये रुपये फेर हूँग । ”

“अप्या, पर देना,” कन्धर लहानन्द ठठठ बड़ी आवा बड़ी ठठनाकी  
 बोली पड़ी सिन्धी थी। वह उन खानची मिठी उठाने क्या।

शारदाशरवण विभिन्न होकर कहा—वह क्या करत हो। मन्पा बेला मिठी  
 क्या उठा रह हो।

लहानन्द लज खोले हुए उठा। बोला—पगलपन कर रहा हू।

लजकुच शारदाशरवण उनके इन कथनक साथ उनक कामका विद्येय भेद  
 नहीं देत पया। हा भी बोला—पगलपन कर रह हो, वह तो मीने नगी क्या।

लहानन्दन कहा—तुम क्यों कहोग, मैं करता हू।

“ना ना, सन करो, मिठी लेकर क्या करोग।”

लहानन्द—मैं आबकल शिव-पूजा करता हू। परमे गंगापदी नहीं हूँ, इसीने  
 लिये जाता हू।

शारदाशरवण लज लज उठक्य मिठी निघण्णा देग्या रहा।

लहानन्दने मिठी निकालकर उतरा बड़ा-सा गीण बनाया, फिर उभ गंगदे  
 मीतर बैठकर हाथ-मुँह खोज शारदाशरवणके पान आ गया हुआ।

“क्यों शारदा, पर खने।”

“तुमन बह नर क्या किया।”

“बो दिया था तो तुमन भीतरन देल ही दिया।”

“कहाँ, शिवलूतिक किर तो मिठी नहीं थी।”

“ना, भर शिव-पूजा नहीं करूँगा।”

“क्यों।”

“वह फिर किसी दिन बपड़ेगा।”

इतक बाद दोनों बने गौरक भीतर गुनकर अन्न अन्न पकी और बल  
 लये। आकर लहानन्दन उन नरके लिय आनी कौठरीका दरवाजा  
 बन्द कर दिया।

गाथे मोहन बगनके लिय उन्ना और पुधारी घरी-घरीन पुनन भर,  
 लेकिन लहानन्दन इत नहीं लये। भीतरमि कहा—आर गयी लकिन  
 बलु गगर है।

तुमरा दंगलक लिय आर, लेकिन उन लमर लहानन्द से क्या था। कई  
 बार बार-बार पुधारकर बह लीं रई।

पूछे दिन उबेय होनेपर वह फिर उठा। मैदानमें खेत पर गया। खेबन करन आया। ईसकर याना गने लगा। नित्यकर्म को रोब करता था वह सब करने लगा। किन्तु कोई वह नहीं समझ पाया कि वह प्रतिदिन क्या करता था। वह कैसा था, आब ठीक कैसा नहीं है। कमरा आताइकी खेबकी स्थिति—छम्नाके ध्याइका दिन—आ यर्द। आब समीके चेहरे पर आनन्दकी ललक है समीके मनमें उल्लाह है। लहानन्दको हम लेनेका अवसर नहीं है। हायन मुलकीकी पीस-गुमरकी हक नहीं है। बुमाजीके बीसू कराकर बाटी है। बरमें जो आता है, उसीको रोकर बनाती है कि ऐसे मुलके दिन मी कमनाके लिए उनका मन हाव-हाव कर रहा है, उनके मनमें रची मर मी मुल नहीं है। बान पफता है, उनमेंये अधिकाराव व्यक्ति उनके साथ इत अवका आगुमन कर रहे हैं—छम्नाका अमाव उन्हें लक रहा है। केक छुमदा आब बड़ी घान्त, बहुत पीर है।

कमरा: लप्या हुई। बहुत बाने कले। बहुत खेम बना हुए। इसके बाद छुमदा सय छुमदा पड़ीमें धारदावरके साथ छम्नामकीव व्याह हो गया।

आब गौब मरमें कृपन हरमोहनकी मरालकी भूम मनी है। उनक शकु-आने मी अपने मनमें यह स्वीकर किना कि बेघक वृद्धका मन अव्यन्त उदार है। मुलके ऊपर कोई उनका गुणगान करता है तो वह हरमोहन बहुत ही कुच्छित मापन करते हैं—क्याइए क्या करें, एक ही तो बड़का है—उत्की यही व्याह करनेकी इच्छा थी मैं नहीं क्यों करता। फिर मरमें हमारा ही पर उनकी बराबरीका कुभीन है। फिर अपने परस्त्रीके बय देखना मी तो होय है।

धारदावरन वह बस मुनकर आइमें मौह सिझेता था।

८

व्याहके बड़े काम य—बड़े कइस लव काम निबडे। अब आराम करक हम लना अण्डा लगता है। लेकिन हा-बार दिन यह वह आराम जैसे उपमोम नहीं किना था लगता। लिंकुन अण्डा मावस निकम्मेकी तरह बैठे रहनेमें मी तविकन उब जाती है। छम्नामकीव व्याह करके, जिया ठियाकर हरमोहनका अण्डी रकम पून देकर, हलाके अरणजमें पकड़े गये अणामीके मुलकाव पनकी

तरह, विद्युत्मेंमें पाइकर मनके आनन्दसे ठकिया छातीमें हवाकर हवा-उपर कर  
 वा बदलकर तदानन्दने बी-बार दिन बिना किसी संसटके किया रिये । इसके  
 बाद उसे बान पढ़ने लग्य, विद्युत्ना बेमे कुछ गय्य हे, तकिये बेसे कुछ कहे हो  
 गये हैं, ओठरीके मीठर अपकार बेसे कुछ अधिक छा गया हे । तदानन्द  
 उठकर बाहर आकर लप्य हुआ । उन समय लग्य लग्य हो गई थी । दिनकर  
 आस्यसे बूँद गिषी रही थी, और बुँदियाना अभी तक बन्द नहीं हुआ था ।  
 बाल बाल बादल छेडे-छेडे हवाके सोकोसि बीच-बीचमें कुछ हवा-उपर हट  
 भवस बान प किन्तु पानी बरखाना बन्द न करठे प । बन्द भी नहीं करेंगे ।  
 कमसे कम तदानन्दने अपने मनमें वही समझ किया । इसके बाद सिरपर छाटा  
 लगाकर बाहर निकल पडा । बहुत देर तक हवा उपर उहमें घूम-फिरकर, कपडे  
 भिगेकर, पैरोंमें बीचड भरे हुए हातानन्दके पाके मीठर आकर लप्य हुआ ।  
 बान पढ्या हे, दुग्धा रलेईपरमें थी । तदानन्द उठ थोर नहीं गया । बुआकी  
 शायद मोहलेका बकर लगाने गई थी । उनका भी प्या उठने नहीं लग्या ।  
 देर थोकर हवा-उपर रेकर बिल ओटेमें माधकरनर सोला था, वहाँ आकर  
 उपरियत हुआ ।

बहुत दिनोंमें माधकरनरको हमने नहीं देला । आज उकर्य कुछ हाल  
 कहेंगे । समना बबये गई तमीसे बीरे बीरे बह लग्यदार हो गया हे । बडे  
 अनुमही और लग्यदारकी तरह समी बातोंमें खेच-समस्य बह करनी राप  
 बाहिर करला हे । ऐजी-बेती बीच खामेको नहीं मोंग्य । किसी पलक किप  
 मबन्ता नहीं । अकर बह कुछ खेसता ही नहीं । पुरनार बाउनिक्की तरह  
 तकिये हट्टेका उहीके सहारे पुरनार बैठा रहला हे । कई उठकर पय आये  
 पादे न आये, बह उपर प्यान ही नहीं देला । आज भी बह इसी तरह बैठा  
 था । तदानन्द आकर उनका पय लप्य हुआ । उनकी थोर घूमकर मापाने  
 देला । खेच-तदा दादा, अर हुन मरे पय आन बयो मरी !

‘ दुस किना नाम था मारि । ’

“ तब हो गया ? ”

“ हाँ । ”

“ ऐसी हीरी बब लोकर आवेयी ? ”

उठना थाकर उसे ले बावगी, लेकिन उदा खाने कुछ और ही तरहकी बात कही है। उसके शरीरमें अब एनिक-सी भी शक्ति नहीं है, अब वह वहाँ इतनी दूर क्यों जा सकेगा ? खेब-खेबकर बहुत पल बीतने पर उठने निश्चय किया कि उसकी टीसी कमी बहुत नहीं बोलेगी—बधा-समय निश्चय ही आवगी। मापक-समय तब बहुत-कुछ घान्त मनसे सो गया।

## ९

और भी कुछ दिन बीत गये। उठना समुत्सवों कापक पर और आरं। माहसुखे और लें और एक बार नये सिरेसे बड़की और बामादको देख गये। किन्ती ही ईसी-दिलगी और ठंडा हुआ। हरमोहन आप वहाँ आकर उसको मधुर सम्बोधनोंसे निहास करके, सम्बिन्धना नमस्कार प्रदत्त करके पर लौट गये। हाफन-समयने कर्ममें एक पुत्री हुई जाकर लपेटकर सम्बुनपाइकी हर एक वृक्षनमें एक बार बैठकर उसको मुग्ध कर लिया। इसी तरहकी अनेक घटनाएँ परिष्ठ हुईं।

आज मापक-समयकी पीड़ा बहुत बढ़ गई है। किन्तुनेपर पड़ा छाप्य रहा है और उसके अगत-काल, तिरहाने, पैरोंके पल्लु बुझा चलमभि, कृष्णा महदाबिन उठना बगैर बेसी है। घामचा वहाँ नहीं है। वह लोरेपरमें बेसी कुछ लाना बनली है और कुछ रंभी है। लदानन्द दान्तरको बुझने गया है और हाफन-समय 'अमी आया है' कहकर समझा तीन पन्ने हुए, बाहर निकल गये हैं और अभी तक लौ नहीं पाये। लव लोम अम्बने-अम्बन बैठे हैं। कृष्णा महदाबिन मापक-समय शरीरपर हाप कर रही है और दान्तरकी राह देखती हुई मन ही मन सम्बन्ध अन्वेषण स्या रही है।

कर्मका लम्बा हुई। उनके थोड़ी देर बाद ही दान्तर आ पहुँच। यह आज छः सप्त दिनसे नित्य आन है, नित्य रोगीका दग्गन है। पीड़ा किसी तरह कम नहीं होती, बरिष्ठ और बढ़ गई है—बढ़ बढ़ जानत ब। रोगी बपगा नहीं, यह भी बढ़ लमत गये हैं। आनेकी इच्छा भी नहीं थी; किन्तु लदानन्दके पीछे पड़नेसे आनको लखार हुए।

भीतर आकर दान्तर लोम का जो देखने है, वह सब दग्गनके बाद बाहर

सुम्हा

भाबर लखनन्दको हुलाक कर देते हैं, अतः उसके बोले—बेल्थो लखनन्द बाबू, यात्र लख ठाणमान रहना । जान पड़ता है, लख भाब रातको नहीं बनेगा ।

लखनन्द भी यह जानता था । बहुत छन बीते हाणनपत्र मी आये । खोली तर बोटरीके बाहर लखे गहकर बहोतक सम्मन था, मीनका हात जान सिवा । इसके बाद दरवाजा बग बासकर निर मीतर बढ़ाकर बोले—अब कैसा है ?

किन्तिन बहाब नहीं दिवा । केवल छमदा बाहर निकल भाई । लानेकी यात्री सामने रखकर पाठ बैठ गई ।

हाणनपत्रने पूछा—माभूषी ठकित अब कैसी है ?

“जान पड़ता है, अच्छी नहीं है ।”

“अच्छी नहीं है ।” बग यमकर हाणनपत्रने कहा—“मरा शरीर भी बंध नहीं है ।”

क्या लोचकर उन्होंने यह बत करी, क्या लोचकर उन्होंने अपने अमुरय होनेकी बातका उल्लेख किया, यह हम नहीं कर सकते, और हमें सब या शक किन्ना था, यह भी हम नहीं जानते । लेकिन उनकी यह बत छमदाके लोमें नहीं गई । हाणनपत्रने भी मन ही मन बहुत दुःख मना । लीके आगे अपनी शारीरिक अमुरयकाही बत करकर उल्ला एक लेहमय उतर न पाना, लीका आगे न प्रकर करना उन्हें ऐसा आश्चर्याकिक जान पड़ा कि हाणन पत्रने अपनेको पपेर अस्मानिन समता । यह मया करने आये थे, हलीशिय यह लोपारन अस्मानरा अंकुर हो-बार परामें ही मल्लिक मीतर लख शाणा-प्रशाणार्थ कैमकर छन गया । हाणनपत्रने लीहक मारे बायी सामनेमे टेव ही और कहा—अन्तको क्या मर जाई ?

हाणनपत्र बहीमे उठकर हाण-मुह खोल बुला करके अपनी बाठीमें पोने लय और अपने किन्तिनेर मयेमे पैर पला कर ला गय । जान पड़ता है, उन्होंने मनमें यह डीठ कर लिया कि वह भी यथ अमुरय है ।

इपर छमदा हाण बाहर मापारक पाठ आ बैठी । यह हमकर बुझा महारामने पूछा—हाणन करी है ?

“उनकी ठकित लख है—लेट रह है ।”

कृष्णा महारथिन हमर चुप रही। इसके बाद बीरेसे कहा—आदमीके माया-ममत्त्व मछे ही न हो, अँखोकी धरम तो कुछ खनी चाहिए कि जेय कहा करेंगे—क्या हमरेंगे ?

यह सुनकर एलमिने होठ विचरये।

क्रमशः रात अधिक होने लगी। कृष्णा महारथिन अनेक मरनेवालोंके पाठ बैठकर रात बिता चुकी थी, अनेक मौतें देखी थीं। उन्हें खान पड़ा कि माघबन्धी राँस बीसी पड़ गई है। कुछ देर बाद माघब कह उठा—सिरमें बड़ा दर्द हो रहा है—सिर फट्य जा रहा है।

कृष्णा हुआ उसके सिरपर हाथ करने लगी। बरा बरकर फिर माघबने कहा—पेट बहुत पेंठ रहा है। बी बहुत मज्जम रहा है।

उसने परस्पर एक दूसरेके मुँहकी ओर देखा। जैसे हर एकने हर एकके मुँहपर उसके मनकी बात पढ़नेकी चेष्टा की।

फिर कुछ देर लड़ाय रहा। सभी मौन मस्तिन मुँहसे अमृतके बिन्दु आयेछा किये बैठे थे।

कुछ देर बाद अड़कड़ली हुई बरसनेसे बड़े अंतरात्मसे माघबने कहा—बड़ी प्यास है।

हुआने रूपके बरसे उठके मुँहमें गंगाजल डाल्य। आगहक मारे माघब वह लव पी गया और बड़ी बरसक चुपचाप निश्चल्य पड़ा रहा।

क्रमशः रोगीकी राँस बढ़ पड़ी। सभीने उस सन्ध किया। कृष्णा हुआ नाड़ी देखना बान्नी थी। बहुत देरतक हाथ पकड़े नाड़ी देखती रही। फिर तदानन्दको पाठ सुनाकर कहा—अब इस नीचे बमीनपर तुम्हना चाहिए।

तदानन्द चुप रहा।

एलमिने यह बात सुन ली थी। वह अस्तु रदनके साथ कह उठी—अब क्या देखने हो तदानन्द ?

उम्मा रो उठी, कृष्णा हुआ रो उठी। साथ ही साथ माघबन्धी भी प्रायः अपना देह नीचे ठार ली गई।

बहु देर बाद माघबन और एक बार मुँह फेक्यवा—कृष्णा हुआने पहले ही बी तरह उठमें घोड़ा-सा गंगाजल डाल्य। माघबमें जैसे कुछ तापट आ गई।—

एक बार अँलें खोलकर देखा, फिर मुझसे हुए बोम—क्या खाया, सीदी खाई है।

उत्तमपत्नी पल बैठी थी। भाव वह उत्तम नहीं लोई। कापकर वह म्नाके पल और सितककर था बैठी। उत्तमपत्तिके लगे छीरेके संगरे गये हो गये।

धीर कुछ देर बाद माधवपुत्र अत्यन्त अरिपर—बेचैन हो उठा। वह फिर सापके अग—मौल बड़े बोम सलने लयी। बेलकर कृष्ण बुझाने से पर कहा—अर और क्या बलन हो ! म्मन हो गया—

उत्तमपत्ति बिलत उठी—सखरकहा कसम्य करो—हुम्मीबौणके नीब—

तब सभी ऊँचे लकसे से उठ। सीधरक हाससे हारानबन्द ही नींद उन्ट गई। वह दौडकर बाहर भाप। देखा, माधवपुत्रे उठाकर बाहर खया गया है—वह मी बिलककर दीने और अर्धमून पुत्रके छीरेका गेदने सकर बैठ गय। से का पुकाय—बय—माधु—

माधवने मी बाल पढ़ता है, गों-यों करके एक बार कहा—त-यू।

## १०

विभिन्न महम्मों, विभिन्न बानके ऊर, अर्ध बुदरी मान्नी कमका अपनी आमान बगमगानी हुए बैठी है। पाग मकर पयके बने गारह-बाईके ऊर पोंके छपारानमें बसी बप रही है। उलीके प्रसारमें मापनी एक पुनक पड़ रही है। बिल कमरेमें मापनी बैठी है वह बहुत अविष्ट तथा हुआ है। लगे छयमें बहुतस्य विभिन्न रसका बिया हुआ है। दीराममें बहुत तरल कम-बूट और पुन-रम अँलिन है। उनक ऊर बहुत-से निर, बहुतस्य आया-पैठिन ( लेखविन ), अडेकिभोगक, छोपेमाक आदि विनेय प्रसारण लू-छनीक लय लय हुए हैं। अत्यन्त बहुत प्रसारणी दीरालरारिसी पानी कसा-का बड़ामेके निर गुणेमिा हैं। उनर दीरेके आरके मीलम लण, मीपी, ही कोक रंगी रोपनी हय उपर बैठ रही है। लाना अेर—आर-काल—आपार आरन है। ननस प्रारा प्रतिप्रिया होल एक उवाकेवा बौगुता बदा रहा है। उन आरनामे लगी हुई लकर्ममेकी मेवे और उन



ऊपर छपेन्द्र फरकरके छाने रले हैं। चारों ओर छपेन्द्र, अडे, पीले रंगकी मनुष्योंकी मूर्तियाँ उस पेशानीमें सजीव-सी प्रतीत हो रही हैं। इस एकाँके योग्य महत्त्वमें माख्ती—तबीब खर्क-प्रतिमा—ज्येष्ठकी बैठी है। किन्तुने कससे इत पार्थिव सौन्दर्यके हचार गुना बढ़ाकर वह यहाँ बैठी है, आत्म-निरस्त होकर मुग्ध नकनोंसे वह छोमा देसनेके लिये उस बगह और खोई नहीं था—इसीसे माख्ती बैठी पुस्तक पढ़ रही है। पढ़ लाक रही है पंक्ति पर पंक्ति अँलकोंके आगेसे किलकटी जाती है, पंथे पर पंथे फबटते जाते हैं; किन्तु एक अक्षर भी मनके भीतर प्रवेश नहीं करता। बान पढ़ता है, पढ़ने बैठनेके पहले वह रो रही थी क्योंकि सुने अँलकोंके हाग अमी तक उसके गाँवोंपर बान पढ़ रहे हैं। इस सुनके परम वह क्यों रोती थी, वह हम नहीं जानते; लेकिन रो वह निश्चय रही थी और उठी फरकरकी रोझनेके लिये उसने पुस्तककी लहाफ्त्य ली थी। माख्ती कई आशुपथ नहीं पहने है। माख्ती ममूखी बख्र धारण किये है। माख्ती रोती थी। माख्तीके मनमें दुःख नहीं है। उसने पुस्तक बन्द करके खंडिके ऊपर फेंक दी। बुल्नाप कोझके बाजूपर तिर रखकर बैठी रही। फिर अँलकमें अँलक भर आये। अक्षर उठने उठने रौझनेपर प्रयास नहीं किया। अक्षर एक एक करके अँलकी ईँरे कोझकी मसमकी बाहरके ऊपर गितने लगी।

बहुत देर बाद तुरेन्द्रनाथने कमरेमें प्रवेश किया। इतने मोटे गलीचके ऊपर बझनेपर शब्द नहीं होता, इसीलिये उनका ध्याना माख्तीने बान नहीं पला। वह बैसै रो रही थी। बैसै ही रोती रही। तुरेन्द्रनाथ बुल्नाप लड़े लड़े वह देखने लगे। कुछ देर बाद और धाँडा पाठ आकर लड़े हुए। उसके धार पुष्पाय—माख्ती।

माख्तीने अँलकर ऊपर देखा। कोसी—आभी।

तुरेन्द्रनाथ आकर पाठ बैठ मये। माख्तीके दोनों हाथ अपने हाथमें लम्बर गेहरस गीत लरमे कहा—फिर रो रही थी।

माख्ती रँग हाथों पकड़ ली गई थी इतीसे इच्छा रहत मी 'ना' नहीं कह लगी। बुल रही।”

“क्यों रो रही थी?”

माख्ती रोती नहीं।

सुरेन्द्रनाथ भी कुछ देर तक कुछ भी न बोले। फिर मासुकीके दोनों हाथ बग हाथसे हथकर बोरे बोरे बोले—तुम यही है कि इतनी बेठा करके भी मैं तुमसे मुझी नहीं बना सका; इरयसे इबार बाहर भी तुम्हारा मन नहीं पा सका।

मासुकीको इतना बोरे उतर हिंदे नहीं मिया। और भी एक काम उनके हाग नहीं हुआ। इतके पहले, उठने मन ही मन प्रतिज्ञा की थी कि बाहे बो हा, वह पकड़ी नहीं। किन्तु औसुकीके ऊपर अपना प्रमुख बनाये न रख सकी—और उनके बघमें नहीं रह सके। वे बेमे गिर रह थे, बेसे ही गिरने लगे।

सुरेन्द्रनाथ कहने लगे—कदा करनेस बोरे आदमी मुझी हो सकता है, यह मनुष्य समझ नहीं सकता और देना समझ सकता है या नहीं, यह भी मैं नहीं कह सकता। तुमके लिए, मुझके लिए यह पर मैंने इत तरह कहाया, यह बेबीकी-प्रतिज्ञा इत मझमें इठने मनसं स्थापित की; लेकिन क्या मुझी हो सका? मुझकी बात छोड़े देता हूँ—बात पड़ता है, मरे अमुक वा सुननी ही मात्रा बद् गंरे है। बिने मुझी करनेके लिए मैंने इठना यन् किया, ठम एक दिनके लिए भी मैंने मुझी नहीं देला। तुमको बघसे पाया, तबसे इन हाठार पकड़के लिए भी हूँकीकी एक हाक भी मैंने नहीं देखी—

कहते-कहते सुरेन्द्रनाथने हाथ छोड़कर अपना अबाँर माझमे मासुकीका बद् अधु-मझि मूय ऊपर उठाया। फिर कहा—मासुकी, देखो किन दिन हो गय! तुम क्या किसी तरह प्रकृषित न हाभागी? तुम्हारी यह ठगली और रौना क्या किसी तरह पूर न होगा? क्या किसी तरह एक बाग हंसकर मरी आर न दस्तगी?

मासुकीने हाथ उठार औसुकी पठे।

सुरेन्द्रनाथ कहने लगा—यह औन्दर्य केला और क्या है, इन स्वर में क्या हाथ हुआ है—पीसा है, हा बरकर मात्र नदी कर मझा। मनकी हाथसे तुमको मझाऊँगा—इत आया और अमिष्यास किने आभूरन लपेट लया, किने बढिया दय एकत्र किय—उझि यही मरके लिए भी तुमम उन्हें नहीं पदना। मासुकी, तुम क्या मुस दय मरी सकती?

मासुकी सुरेन्द्रनाथकी गेरमें गिर लयकर ठेने लगी।

सुरेन्द्रनाथजी बोले मी गौमी हो आई । पार और सुधर करके मास्तीके मस्तीपर हाथ रखकर गद्गद स्वरमें बोले—तुम मुझे देख नहीं सकती, वह मैं नहीं कहता । किन्तु और मी अनेक बातें मेरे मनमें आती हैं । तुम कुछ न मानना, मुझे जो जान पड़ता है, वह मैं आज तुमसे कह हूँ । मेरा विचार है कि तुमने जो यह अपनाई है, उस यहको नीच शिरो ही अपने मुलके लिये अपनाती है और बह, अर्धरूप बन-ये-स्वर्गके सिवा उनका और क्या सुल है, वह मैं नहीं जानता । लेकिन मुझे तुम उन बेसी नहीं जान पड़ती हो । इच्छिय वह मी मैं नहीं समझ पाता कि क्या करनेसे तुम सुल पाओगी । अगर वह बात होती तो अब तक तुम दूबी हो जाती—

कहते-कहत सुरेन्द्रनाथ क्षणभरके लिये चुप हो गये । फिर कुछ गम्भीर भावसे बोले—मास्ती, तुम्हारे स्वामी क्या जीवित हैं ?

मास्तीने गोरमें छिर हिलाकर बताया कि उसके स्वामी जीवित नहीं हैं ।

“ तब फिर देखो, मुझसे विवाह करके क्या तुम सुली होओगी ? क्या — क्या, मैं उनके लिये भी तैयार हूँ । ”

अन्धी मास्ती तड़ककर सुरेन्द्रनाथके पैरोंपर गिर पड़ी । हाथसे होना फ पकड़कर उनमें उठने अपना मुँह छिपा लिया । किन्तु सुरेन्द्रनाथन इनमें बहसनाही पडा मही थी । यह उन्हें मन्त्रम पड गया कि औकुओंसे उनके पैर भीग रह हैं, तथापि उन्होंने मास्तीकी उठाया नहीं । बल्कि एक लम्बी साँस छोड़कर वे चुप हो रह ।

बहुत दूर योही बीती । इनका बाद स्थान मात्रस धीरे धीरे करने बग — भगवान् जान, मुझ क्या हो गया है । वह कह नहीं सकता कि तुमको मैं हृदयमें पार करने क्या हूँ या तुम्हारे इस अद्भुत रूपने मुझे पागल बना दिया है । किन्तु वह नहीं है कि मैं जानको गया बैठा हूँ—अब-तुम समझानकी समझ मुझ छाड़कर चली गई है । तुम्हारी एक बलात् हाथद मैं प्राणक ह सकता हूँ । ईश्वर जानत है, मैं कुछ तुम्हारा मन पामेके लिये या तुम्हें पुत्रव्यनेक लिये छठ नहीं करता, तब ही कहता हूँ, मैं अनन्ध भूत गया हूँ—जो होना होगा जो होगा—तुम एक बार कह दो कि तुम मेरे क्या करनेगे ही सुनी होओगी, तब मैं बही बनेगा । बलि, सुन, मान, इतना क्या बचना—रिचीका लाल मही करेगा ।—

कहते-कहत सुरेन्द्रनाथजी औंलो इधर-उधर भाँरे, गन्ध फैल गया। कुछ देर चलकर, औंल पोंछ बाँधकर, बहुत धीरे, बहुत धमक तारमें उन्होंने कहा—  
उमरु काद माझी, हम बेमे भादमीके स्थिर साक राह पड़ी है—बस तहा न चायगा, तब आत्महत्या करके नरककी ओर सीधे ही चलय जाईगा।

बस माझीम तहा नहीं गया। रोते-रोते बोली—यह कत तुम न कहो। तुम्मे मरे प्रात बचाये मे, सम्मान-निष्ठाव किया था—मेरी ब्यब रखी थी—दवा करके ब्याधय दिया था—नहीं तो मैं जीती न बचती, वह मुसं जान पड़ता है। मैं नीच हूँ, निर्दिव हूँ, किन्तु अहठक नहीं हूँ। तुम्हारी बना, तुम्हारा स्नह इस जीवनमें मैं कभी न भूलूँगी। इन सबका बदला क्या मैं इस तरह हूँगी ?

सुरेन्द्रनाथने एक समी लँग छोड़कर कहा—कैसे बदला चुकेगा, वह ईस्वर जाने; मैं नहीं जानता। तुम्हें क्या फाई कि बेसी कब्रगा, कैसी हजरतकी बख्त भाव महीने मरत भी अधिक समयसे मैं मोगता आ रहा हूँ। तुम मनमें चुष्ठी न होना—कहत शय्य मायूम पड़ती है कि इसने थोड़े दिनोंमें एक बीस पेसा दाम हो गया हूँ—एक बी—एक बी—तुम चारे बो हो—तुम चारे बो हा—लेकिन मैं तो बास-बादेके बंग-उम्मानक मित्रनके स्थिर राखी हूँ—

माझीने भी ऐसी ही दृढ़-दृढ़ बानीमें कहा—मैं—मैं तुम्हारी दासीकी भी दासी होनाक दाय्य नहीं हूँ—मैं कौन हूँ बो मरे स्थिर इतना सहोगे—अपने ज्योस भी दौब लगा दोगे ! मैं कमसे ही चुष्ठी हूँ। मैं अपने जीवनमें इतनी कब्रगा कभी नहीं पाई—भगर अन्त हा तो ईश्वर करे, वही मंग अन्त हो।

सुरेन्द्रनाथने स्नहपूर्वक माझीको हाथ पकड़कर उठाया। इसके बाद उसे पल बिठाकर बोले—लेकिन तुम किसी तरह तो मुस्य नहीं पा रही हो।

माझीने औंलोमें औंसल बेकर करा—हम बड़े गरीब हैं।

“लेकिन मैं तो गरीब नहीं हूँ। मंग बो कुछ है वह तुम्हारा भी है।”

“मैं अपनी रज नहीं करती।”

“तो किन्हीं का करती हो ? तुम्हारे तो कोई नहीं है।”

“मगान् जाने, अर कोई है कि नहीं। लेकिन बस भाँरे मी तब सब मे।”

“यह क्या ? मार डार जानेसे—”

“यह तब छूट पा। मार डूबी ही नहीं।”

सुरेन्द्रनाथ विष्णयसे मासखीका मुँह टाकने लगी। शायद एक बार उनके मनमें यह सन्देह उत्पन्न हुआ कि यह सब सच है या सब बात है। लेकिन इस मुलसे छत्तरी बात निकलना सम्भव नहीं। उन व्यक्तियों, उन औसुओंमें भी प्रसारणा, झूठ-बनासट किया यह संकल्प है—ऐसा उन्हें नहीं जान पड़ा। कुछ देर बाद उन्होंने पुकारा—माखी!

“ क्या ? ”

“ सब सच है ? ”

अपनी माखी सुरेन्द्रनाथ मुँह टाकने लगी। देखते-देखते छत्तरी औसुओंमें औसु भर आये। सुरेन्द्रनाथ खिन्न हुए। अपने हाथसे माखीके औसु पाउस्र बोले—तो सब हाक सुनकर करके रहो।

तब माखीने बीरे बीरे सुरेन्द्रके पुत्रोपर सिर रलकट, कमी रोस्र, कमी रवर होकर कहना शुरू किया—

बचने में पैदा हुई तबसे तुलसी गोदमें ही पड़ी। लेकिन हमारे सब था। मेरे पिताने ब्यापक देख-सुनकर मेरा ब्याह किया था; किन्तु मैं अभागिन एक बरके मीठर ही विपदा हो गई। बिनके साथ ब्याह हुआ, उनके शायद एक बारसे अधिक मैंने नहीं देख पया। मैं बापके घरमें थी। विपदा होनेके बाद लगभग पौष तक तक वहीं रही। मेरे पिता अपने गौब हस्तपुरके पत्न, लगभग एक मीठके प्यठले पर, एक कमीठारके बर्ही नौकर थे। साधारण ही तनसबाह मिळी थी; लेकिन ठठनेहीसे एक प्रकार तुल-ब्याने, किष्पयत घापीन, हम खेयीका गुबर-सर हो बास्य था।

इस समय माखीका गस्र औसुओंसे रूँप गया।

“ उन दिनों तुम्हारे घरमें कौन कौन थे ? ”

“ लमी थे—पिता, माता, सुभाशी, हम दो बहनें और एक छोटा भाई। एक बार बौरीके अस्तपसे पिताकी भी मौरी पकी गई। तभीम पर नीकल अ गई कि पिताकी नित्य मिछा भोगकर खान। कभी हम खेयीका खाना नमीष हना है और कभी भूने ही मौ रहना पड़ता। मा ली लमी थी—मौंगे-बाप को मिष्पय था, उनम और लबसे मिष्प-सिष्प होती थी, और बाप प्रायः नित्य ही उपवास कर जाती थी—यहाँ तक कि छयाकर हा-बो तीन-तीन दिन तक —

करते-करते मास्यी बरफ़लकर ये ठरई। कुछ देर अपनेको सँभलकर फिर करने लगी—लेकिन मेरे बाप इन बरतोंकी ओर ध्यान ही नहीं देते थे। यौश-मरक पीते थे, वहीं तहाँ पड़े रहते थे—कमी कमी पास-पार पौध-पौध दिन तक पर ही नहीं आते थे।

मरा छेदा भाई छाममा एक सख्खे बीमार था। ठीक इतना न हो अपनेके कारन किसी तरह आयम नहीं हो पा रहा था। धान पट्टा है अब तक वह बीछा भी न होया।—

इस समय सुरेन्द्रनाथकी औँलोमें मी औँसू भर आये।

इसके बाद मास्यीने कृष्णा महाराजिनका बिक्र किया, तदानन्दका हास करा, और अन्तही छत्रनामपौकी सर्पा पधरई। मास्यीने कहा—छत्रनाथी प्याहक लयक अ त्वा हो गई, किन्तु यरीव होनेके कारण किबोने उससे प्याह करना न पारा। हम ब्राह्मणोंके यहाँ ल्यानी सड़कीका प्याह न होनेसे आदमी बाति-भुन कर दिया जाता है। हमारे वहाँ मी बाति-भुन होनेकी नौकल आ गई। मरी मास्यी बिन्ताके मारे नींद हराम हो गई। प्लाने उपर दृष्टिपल मी नहीं किया। केसस तदानन्दका मरोठा रह गया। लेकिन वह भी देखते न थे—अन्नी दुमाको लेकर कापी गये प।

प्लिाकी नौकरी बानेके बाद बीरे-भरि इसी तरह छ. महिने कर गये। लेकिन पल-यरीव छोले-मोहतेके लोग और वहाँ तक सहाय्य करते। तदानन्द दाग कापी बान समय पबास रूपये दे गये थे, वे मी चुक गये। इस समयका हास मुहसे आगे कहा नहीं जाता।

मास्यी फिर घने लगे। सुरेन्द्रनाथ भी रोये। कुछ देर बाद औँलें पौठकर बन्द—एन आब रहने दो—और दिन करना।

मास्यीने औँले पोटार कहा—आब ही कह ई।—लोग मुसे सुन्दर करते प। मैं लोयती थी, कलकसे बास्र घन कमाऊँगी। एक दिन सख्ख ठठकर लंगके किनारे आई। लाबा, किनारे-किनारे बलक कलकसे पानी बाऊँगी। तब मुा काँई देग न पाकेन। किउने गह मी न पूछनी पड़ेगी। पागस आकर देग, थोड़ी दूर पर एक बालु बड़ी मार पाकके लशारे धीरे धीरे मयार मलिन बनी जा रही है। मैं पैना जानती थी। मार बलक मनये लोया, सुरबार् वैठकर नाचा 'हास' पकड़ देगी और इसी तरह अन्त तक बलक

पहुँच जाऊँगी। मैंने सुना था कि कच्छका हमारे गाँवसे अधिक दूर नहीं है—  
 मगर ठीक ठीक न जानती थी कि किनारी दूर है। सोचा, एक बीतल-बीतल  
 नाव निश्चय कच्छसे पहुँच जायगी, तब मैं भी किनारे पर उतर जाऊँगी।  
 पानीमें डूबरी, तैरकर कुछ दूर गई। इसी समय पोती मेरे हाथ-पैरमें—सारे  
 शरीरमें लिपट गई, मैं भी प्रायः डूबनेका हुई। किन्तु अन्तमें बड़ी मुश्किलसे  
 थोड़ीका पैर खोस पाई। पर पोती मेरे हाथसे लिपटकर निकल गई। इसी  
 समय वह नाव मेरे पास आ पहुँची। मेरे हाथ-पैर भी बच नहीं दे रहे थे।  
 सोचा, अब औरतर न था लूँगी, इसीसे नावका 'हाक' कच्छकर पकड़ लिया।  
 नाव बचने लगी, मैं भी साहस करके उसे छोड़ नहीं सकी। डर लगा कि छोड़त  
 ही डूब जाऊँगी। इसी तरह नावके सहारे बहुत दूर चली आई। तब फिर और  
 जानेका भी उपाय न था। अन्तमें वह ठीक किना कि प्रायः गण-ज्ञान  
 करनेके सिद्ध अनेक झिर्नी बना करती होगी। और उनके पास पहननेकी  
 थोटी भी रहती है। उनसे एक छोटी भील मौंग लूँगी—नंगी देखकर किसी  
 कीभ रपा आ ही जायगी। इसके अलावा एक हाक तुमको मास्म है।

सुरेन्द्रनाथ बड़ी देखक चुप बैठे रहे। इसके बाद धीरे धीरे मास्मीको  
 अपने पास लींच लकर उन्होंने कहा—कितने सिद्ध इतना किना, इतने दिनोंमें  
 उसका कुछ उपाय किना है क्या ?

मास्मीने फिर शिखर कर कहा—ना।

“वह जानता हूँ। और इसीसे खेबता हूँ कि वो फिर खोकर एक बात  
 नहीं कह सकता उसने कि साहसे इतना कर डाल्य !”

मास्मी चुप होकर हुनन लगी।

“हर महीने कितना रुपये होना तुम लोगोंका काम चस जायगा ?”

“बीस रुपये। यही रिवाजो मिस्तता था।”

“अच्छा हर महीने वही पचास रुपये भेज दिया करो।”

“तुम लोग ?”

सुरेन्द्रनाथ हँसकर बोले—हाँ, हूँगा। और बादा तो और भी हूँगा।

मास्मीन मन ही मन कहा—इतने दिनोंमें मेरा क्या खपक हुआ।

“इतने किना और एक काम करो। मुझसे ब्याह कर लो, क्योंकि मगधम  
 नेपर भी—इतने लम्बे दरबमें मैं कच्छकी जन नहीं लगने हूँगा।

मास्कीने सुराश्री छप्पीमें फिर दिखकर कहा—ना।

“यह ‘नहीं’ क्यों ? तुम सोचती हो कि इससे मेरी बाति बालमी लेकिन मैं यहाँना बमीदार हूँ—मेरे पास बहुत धन है। किन्तु पास दौखत है उसकी बाति बस्ती नहीं जाती।”

“यह सब तो मधेगी ?”

“मधेगी लेकिन यह भी बधिक दिन नहीं दिखेगी।”

‘बंग, कुम, मान, प्रदिवा ?’

“मास्की। एक दिनके सिध मी इत सक्क मूकने हो। बगरमे बाकर मैंने बहुत धन पावा है, किन्तु मुक्त कमी नहीं पावा। एक दिनके सिध ही रही, मुसे बमार्य मुली होने हो।”

सुरेन्द्रनाथकी बल मुनकर मास्कीका इरम मीउरसे कौप उठा, लेकिन उसे उकने दश दिया। और धीरे बोली—मैं तुम्हारे पास हमेशा रहूँगी।

‘इतर बने, यही हो। तुम हमेशा रहोगी; लेकिन मैं क्या रह सकूँगा ? तुम्हने मुनिया नहीं देली लेकिन मैंने देली है। मैं जानता हूँ कि मुसे अपनेपर रिष्काल नहीं है। किंतु प्रेम्में तुम अपना साथ चीकन मधेमे किया होगी, उस घावर मैं किसी दिन रिष्क-मिष्क करके माय बाऊँगा। मास्की, उमब रहत तुम कौब हो।’

मास्कीने अपनी तरह सब मुना, बहुत दिनोंके बाद और एक बार फिर होकर गाब किया। उसके बाद दइ स्वमें बोली—बोध दिया है, हो लक ता एत कफन्ती लोहा। इतके ऊपर और कफन्ती बकरत नहीं है।

“तुम्हें नहीं है, किन्तु मुसे है।”

“हाने दी, मगर ब्याह नहीं हो सक्या।”

‘क्यों, क्या बिषयमे ब्याह न करना चाहिय ?’

‘बिषयमे ब्याह करना चाहिय, मगर बरतान नहीं।’

सुरेन्द्रनाथ माय घरीर कौप उठा। बोल - तुम क्या बेरवा है ?

“नहीं तो क्या हूँ ? भाव ही सोचकर दण्डे मय।”

“जीन्ही ! यह बात बचनर न थामी। मैं तुम्हें किन्ना प्यार करता हूँ !”

“इतकिन ए बचनर बर्य। नहीं तो घावर ब्याह करनेके राई हो जाती।”



“ मासुकी । ”

“ क्या ? ”

“ सब कुछसा करो । ”

“ क्यूँगी । तुम्हारे सिवा मेरी बेहज्जे पहले कमी किसी पुरुषने स्पष्ट नहीं किया । किन्तु मैंने मन-ही-मन एक आदमीको अपना मन-हूबन सब कुछ अर्पण कर दिया था । ”

“ उसके बाद ? ”

“ बाँटि जानेके भयसे उसने मुझसे प्यार नहीं किया ? ”

“ वह अपना मन और हृदय तुमने औप कैसे किया ? ”

“ जैसे उसने औप किया । ”

“ यह तुमसे हो सच ? ”

मासुकीने बराब चुप रहकर कहा—पहले ही यह चुप ही कि मैं बेस्वा हूँ—बेस्वा सब कर सकती है ।

“ वह आदमी क्या छद्मनाम है ? ”

“ नहीं, और एक आदमी है । ”

“ तो तुम आदमीको पहचान नहीं पाते । उससे तुमने कहा क्यों नहीं ? वह तुमको प्यार करता था । ”

सहता मासुकीके लारे घरीरमें विचरिका प्रवाह-सा बौड़ गया । वह पागल मुल । मासुकीको वह बराब दिन रात आ गया । वह सप्ताके समय धाँसे बस लेने गई थी । राहमें पानी बरसने लगा । मौसमसे बुझार आ जानेके भयसे उसने तखानहके बरमें आश्रय ग्रहण किया । बाद आया, वही पहल-पहल उससे बपये-बैतर्क तहाफता पाना, उसके बाद नित्य हाथमें बपय घमा देना । वह उठक आती जानेका दिन । वह लकियेके नीचे ठेरसे बपये रन जाना । और न जाने क्या-क्या । कुलके समय वह तहानुभूति निलाना राह आया । फर धरमें उलकी फरक औसुभोते माटी हो गई । किन्तु औसु बरनेके पहल मासुकीने उन्हें पोंठ डाल्य । किन्तु नुरेननाम उन औसुभोते नहीं देन पाये । वह बीबके हसपर छुके हुए औसु पोंठकर और अनेक बातें लख रहे थे । बोले—रुन बाद क्या हुआ ?

“ कनहसे आ रही थी । ”

" फिर ? "

" तुमने क्या करके अपने घरोंमें स्थान दिया । "

पूर्वोक्त मम उन्हीने अस्वमन्तक होकर किया था । उधर सुनकर उन्हें अपनी मन्दी कमल पड़ी । उठकर बैठते हुए बोले—माखी, हम जन हो । उनके कुर्यातमें पानेर भी उसे गर्भमें पानना होता है ।

" किसने कहा ? किस जनको एक आदमी गलेमें पहना है, उसे दूसरे धारद पैरोंमें बांध देनेमें भी पूषाअ अनुभव करते हैं । हम मुझे घरोंमें स्थान देना— मैं अगर गल हूँ तो उधीको अपना फल घौमाम्म मारूँगी । "

सुरेन्द्रनाथ बरा हैंसे । बोले—माखी, मैं तोलता था कि हम मोंदू हो, लेकिन वह हम मही हो ।

माखी भी बरा हैंसी । हुम्न और बरसे मात्र वह पहले-बरा उतक होठोंमें हीरीक शकट दिखाई दी ।

इसी समय बाहरसे दानोंने कहा—बाबूजी, बनोर बाबूजी याही अफर बार लड़ी हैं ।

सुरेन्द्रनाथको किम्बत हुआ । बनोर बाबू ? लेकिन इस घरके मन्धनोंमें क्यों ?

" उनमें करण मेका है कि मिलनेकी बड़ी बस्यत है । "

सुरेन्द्रनाथ बरप उठकर बोले—अपण तो अब बजा हूँ माखी ।

" अण । लेकिन वह बनोर बाबू कौन हैं ? "

" फिर क्याऊँय । "

" बनोर बाबूने पूछना, उनका आर करी हुआ है ? "

सुरेन्द्रनाथ हैंत पड़े । बीउ उनमें कोई परिचय है क्या ?

" बान पला है, कुठ-कुठ है । "

येदा हनेर मना हात है आगाउमें पपर केंचनेसे उठ फरग्य भूमिस गिरना हाता है; लूत कनेने कीसी पर कदना हाता है; पीठी कनेसे जेक बना पला है । केन ही पपर कनेने येना मी इशा है—अन्वान निष्पोंकी गद वह मी बगुवा एक निपम है । किन्तु वह निबम किन्ने बस्यता, यह हम नहीं बानते । ईरागरी इपणने स्वतः प्रवृत्त हातर अँहोसे पनी अाप ही

निरास पढ़ता है अथवा मनुष्य शोकास रोगा है, या ऐसा निराशास्ते प्रसिद्ध  
 आत्मार होनेके कारण रोगा पढ़ता है, यह वे ही श्लेष विरहित करते पढ़ा सकते  
 हैं, किन्तुने पहले प्यार किया है और फिर ठठक बाद रोष है। हम अन्त  
 हैं, इसका रोग कभी नहीं पढ़ा नहीं तो इच्छा थी कि प्यार करते एक बार  
 लुभ रो लेंगे—यह परीक्षा करके देखेंगे कि प्यारका रोगा मीठा रोगा है या  
 कड़वा। फिर इसमें एक बड़ी आशंकाकी बात भी है। तुमने हैं, इसका उन्नी  
 पढ़नेकी भी नीका था जाती है। येमे ही लिखकर इसले लो हाथ पीछे इच्छा  
 लगे होते हैं, मनमें लोचते हैं, इस संसारमें उच्छा नहीं पढ़ेंगे। माय अन्त  
 नहीं है; क्या जाने, कहीं परीक्षा करेमें अन्तके उन्नी पढ़नाका ही पर न  
 सीटना पड़। इस इच्छाके मने कहींपर इच्छा से दिया है। मगर अन्तके  
 कीर्तन बना हुआ है। कहीं कहीं प्यार करके रोता है, वहाँ में लोच-लोच करके  
 रोग करता है; निरर्थक, शक्ति मुक्तके इतने इतने अवेसा करके बैठा रहता  
 है—आपका था इसका कलेजा पट बावग्य और मैं देख पाऊँगा। लेकिन पर  
 यह अन्तके अन्तके अन्त प्यारका अन्त अन्त मापके उठ बैठा है, तब  
 मैं सुनिता होकर बैठ जाता हूँ। पर ऐसी इच्छा नहीं करता कि इन प्यार  
 करनेवालेकी छाती पट बाव। किन्तु न जाने कहां, देखनेकी इच्छा भी इस  
 नाश्वरक मनमें दूर नहीं कर जाता। आज भी यही देखनेके लिए मासकीक  
 पहा जाता हूँ। लो दया है, वह भाव करता हूँ; किन्तु लो सीता है, वह  
 वह है—मनुष्य प्यार करके दूसरके सामने लुभ होना है; मासकीके बैठ वे  
 प्यारके अन्त बहकर मासकीके प्यारमें अन्तके अन्तकी तरह लिन उठते हैं।  
 अन्तके अन्त, लोच अन्तकी विचरना न करके, प्यार करकेमें मासकीक-म  
 अन्त-सिखातम केस ममकाभी ही मापना की जाती है—मनुष्य इसका  
 जीस्युक हा जाता है। श्लेष देखकर आपका प्यार करके है और मने भी ता  
 पहलें किना करा है—किन्तु तब मैं यह मही लुभ पद्य था कि इन लुभक  
 मने-प्यारक तापारकक संसारमें नहीं मिले। येन प्यारका लोच भी पर  
 लुभके इस अन्तकी लुभ लुभ तापका होती है।

गुरुनाथके लुभ जानेपर किगड़े कर करके मासकी परलीकर लोच गई।  
 वह किना लोच, वह नहीं लुभकेगा। अन्त करता है, वह लोचकर किनी थी  
 कि अन्तके लुभ प्यार और इस प्यारमें किना अन्त है। मासकीने गुरुनाथ

सुमन पर किन्ना है, उस पारमें गहरी हठल्ला मी आ मिमी है। लक है मने सुलकी हण्डा। उस बान पद्म, बह सुरेन्द्रनाथके स्थिर हैं सत-सतते अपने प्राय मी दे लकरी है।

माय्ती आत ही आप करने लयी— तुम मुसे प्रायेसि मी अधिक प्रिय हो— तुम्हाय एक लक मी बौद्ध होने देखकर ठठके स्थिर मैं मर लकरी हूँ। तुम मेरे स्थिर करेक मोक खेगे ? केसक मेरे काम तुम्हाय पौच बने दय तरकी बने बौगे— तुम्हाय बहोवे, तुम पर लहोगे ? मैं अकल-कुल-पीथ हूँ— बौद्ध मुसे बानध-परपान्ता नहीं, मुस बौद्ध लक्या नहीं है। किन्तु तुम महत् हो— तुम्हाय बकक, तुम्हाय लक्याकी बत लारे लकालमें बैठ बावयी। खेग बहोवे कि तुम्हने एक बेत्वासे प्यार किन्ना है; लक्यामें तुम हीन होभागे, तुम्हाय सिग नीन्त होला, तुम मर्ममेदी पीडाका अनुभव करोगे। मैं बह नहीं होमे हूंगी। तिर दिखकर माय्तीने कहा— बह न होय। मैं बह बिवाह किन्ती तर नहीं हाने हूंगी।

माय्ती फिर होकर ठठ बैठी। औत् पीछर, दोनो हाथ जोड़कर बंधी— माय्ता मैंने दय बानधमें बिन्ना पार किन्ना है, किन्तु अनुभव किन्ने हैं, लक तुम बानध हो किन्तु उत दिन न मून्ता। लक्यामें मेरे स्थिर और बगद नहीं है। लेकिन अगर कभी बह दिन हो, कभी लक्याका स्नेह मैकला पके, लो उत दिन तुम कुल ठठा लना— पलिया होनपर मी मने बानधमें खान देना।

उत लक्या माय्ती उमी बगद पदी रही। कुछ दिन आवा, पर सुरेन्द्रनाथ नहीं आप। दिनकर माय्ती बैठी गर देखनी रही। बही लक मने सुरेन्द्रनाथ आप। उनके बहकर और दिनोधी अपधा इत लक्य अधिक बिन्ना और लक्याकी लार थी। पर देगकर माय्ती कुछ शक्ति हुई किन्तु बमामें प्रणय करत ही सुरेन्द्रनाथने हिनकर कहा— माय्ती, चापद दिन मा मी गर देगरी बैठी रही हा।

माय्तीका परत दुन्दुभी हो मना। बह कुछ लकी नहीं।

सुरेन्द्रनाथन कहा— तुम्हीं बानधमें, का बकें ? तुम्हमेम एक दिन मी कुठी नहीं मिगरी। तिके किन्ना है, लक उन्ता ही क्य मी है।

माय्तीन कहा— तुम्हमेमकी बत बयो हो ?

सुरेन्द्र हँसे। “क्यों करता हूँ, यह बाइको समझ लेना। पहले मेरी चायों—सारी चायबाइको अपनी समझना सीखो, उसके बाद क्या समझ होगी कि मुझमें क्यों सफ़ा हूँ।”

मास्की चुप होकर तरह तरहकी बातें सोचने लगी।

सुरेन्द्रने कहा—मास्की, उठ बाइके बारेमें हमने कुछ सोचा या ?

“कौन-सी बात ?”

“कौन-सी बात ? कौनकी बात ज्यादा ही भूल गई ?”

“भूल ही नहीं, बाद है।”

“बाद तो रहेगी ही। लेकिन उसके बारेमें सोचकर देखा या क्या ?”

“हाँ, ज्यादा किसी तरह नहीं हो सका।”

“नहीं हो सका ? यह क्या करती हो ?”

“कह तो मैं पहल ही कह चुकी हूँ।”

“क्या है मेरा फिर ? ज्यादा मैं बहर ही करूँगा।”

“मैं नहीं होने दूँगी। मुझे वहाँ भावे एक महीनेसे ऊपर हुआ। अब यही हमारे मनमें था, तो पहले ज्यादा क्या नहीं कर लिया ? अब लगी जा गये हैं कि हम मुझ बचावकीके खानपर बलबलेश और एक भीतर के भावे हो।”

सुरेन्द्रनाथ कुछ अस्वमनस्क हुए। बोले—मैं भी तो खेब-बिबारेमें था तो होना—मैं—

“न मानोग तो मैं फिर लो दूँगी।”

सुरेन्द्रनाथने बच हँसकर कहा—यह फिर बाइको समझ सिवा बायमा विपहास तात दिनक भीतर ही लभ ठेवाती कर दूँगा।

“तो तात दिनके भीतर ही फिर मुझे दल न पाओम।”

सुरेन्द्र बिस्मयक भावम कुछ दर मामलीके मुँहकी ओर लड़कत रहे। पि  
क-3—क्यों चायोंगी ?

“वहाँ तो बादेगा।”

“बात दे दोगी ?”

“मर्सी नहीं, क्योंकि मैं मर न सकूँगी। लेकिन फिर पहले बहती भ  
सी, वही पहले फिर कर दूँगी।”

“ले मी कचन नहीं खीकर करोमी ?”

“नहीं।”

ऐस हइ लखके मुलकर सुरेन्द्रनाथने अन्धी तरह लमक सिवा कि माख्ती बूढ नहीं करती। कुछ बेर लोचनेक बाद कली हँसी हँसकर बोले—तुम क्या करा—बह तो तुम लोगीय लखम है। मख्ती कत है, नहीं कही।

अन्धी माख्तीने कोई ठकर नहीं दिया। मौन मुलकर वह ठिगलर तरह ठिवा। बड़ी बर तक दोनोंमें कोई कल नहीं हुई। फिर सुरेन्द्रनाथने पूछ—परक बपर मेक बे क्या ?

माख्ती हल लमक रो रही थी। फिर हिंकर ठकने कनावा कि नहीं मेजे।

“क्यो नहीं मेजे ?”

माख्ती चुन हा रही। अन्धी सुरेन्द्रनाथके माख्ती हुआ कि माख्ती रो रही है। कल—हाथमें बपये नहीं बे ?

“मा।”

“कुछ मी न प ?”

“ना।”

“हउने दिन भाये हुए, कुछ मी नहीं कय किया ?”

माख्ती रोने लगी—कुछ केली मही। सुरेन्द्रनाथने बह प्रभ कय ही किया था। काल, बर गुर ही लल कनवे ब कि उमके पल कुछ मी नहीं है। कुछ बेर बाद हाक पडकर माख्तीके पल ककर विठानके बाद उन्होंने लोहसे भारे स्तनमें पीरे-पीरे कहा—साप कक हल तरह मुकलिक कनकर रहा तो मैं क्या कर लडता हूँ—गुपी कनामा ? एक ककल कपडा नहीं पहनयी, एक गहना मही बहनयी क्या गुनै फलद है, क्या ककल ककल है, यह मुँद कडकर मही कहोगी। तब मैं क्या करूँ ? इसक बाद पायेले एक मायेकी गद्दी निगलकर कहा—हउने भरने पल लय बे। इनमेंने किले बाहा ठकने कपर कब देना। कपी बा रँडे उन्हे आवादीके साप लख करो। कन कनमें कुछ मी कना कत। फिर बर हँकर कहा—बपर कन कनना कलक।

माख्ती चुनबाव मुनकी रही।

“भूयना नहीं—आब कपर कब देना।”

“ कैसे मेरी ? ”

“ रबिसू करके बिड़ियाँ मेवना । ”

“ मुझसे यह न हो सकेगा । तुम और किसीके नामसे मेव हो । ”

“ क्यों ? खेरीके बान बानेच्छे डरती हो । ”

“ हौं । ”

“ तो अपने बकीस अपोर बाबूमे कह हूँ । यह कककेसेमें रहते हैं — बरसि मेव हेंगे । ”

“ यही ठीक है । लेकिन अमर कोई उनके पस मेव पता अमानेके सिद्ध थावे—ठा ? ”

“ वह बैसा हमसेमे बैसा बनाव हेंगे । ”

“ नहीं । उनसे मना कर देना कि वह किसी तरह दुम्हात नाम न बाहिर करें । ”

“ अच्छा, ऐसा ही होगा । ”

## १२

बवास्ती मर गई, लेकिन उसकी मा बिन्या है । नागपत्रपुरसे कुछ उत्तर ओर बागपुर मौजमें बवास्तीपर घर था, वही बवा और उसकी मा रहती थी । उनका गुजर-बसर कैठ होना था, वह बे ही जानती थी । और सुनत है कि गौरन हो-वार बरपकन अग मी यह जानते हैं, लेकिन हम खेरीके यह रहस्य जाननेसे कोई खम नहीं है । इस बरपके छोड़ो । इती तरह कुछ दिन बीत । हमके बाद म माभूम किठ उपासते बवास्ती नागपत्रपुरके बमीशर बाबूके निजी भवनके एकछामे बगह पा गर थी । बैम वह पहुँची उती तरह उसकी मा भी आ गई । और दानोंने भरनी पररपी बमा सी । किन्तु बवाभूम माका माभ्य अमण न था, हरीम पौस-छ मदीने बीउने-न-बीतत मा-भेईमें बरप होने लगी । कुछ दिन बाद ऐसा ह । गवा कि मुह-खाम दोनो बरप चित्त-चित्तकर दोनो एक बूलनेकी मंगन अमना और शीम ही मर-अवनते छुत्कारा पानकी विधेय मार्यना किये किना बय मरन न करती थी । इस तरह मी टिन बीतने खे—और मी छ मदीन बीन । एक बाद बवाकी मा महममें रहनेकी अमणा छरकर अपने पुगले परिलक मन्तके बची गई । बान पदना है, उने वहाँ बानके सिद्ध सिद्ध

खचार कर दिया गया था, क्योंकि चाते समय वह किस तरह निमग्न भावसे अपनी पीठ पीठ और कन्याके वस्त्रावली मिथ्य भगवान्मे मींगते मींगते गई थी, उसे देखकर वह किसी तरह नहीं जान पड़ता कि वह बुद्धिवा इच्छासे सुनसूक्त वह घर छोड़कर जा रही है। तभीसे सुरन्द्रनाथकी मनाही थी कि वह इयनबाही किसी तरह इस घरकी उपोद्दिमें न सुन्न पावे। किन्तु बैसा होता न था। वह अन्वगिनी फिर आती, फिर प्रवेश करती, किन्तु कुछ कुछ न होता था, बहुत तरहके गांधी-सम्बेद, कोनाकाई, अनुप्रास, चोर चोरसे छती पीटना, मित्रके हाथ नाचना और अन्तमें नौकरके हाथअ अथचन्द्र (गर्दनिया) इत्यादि उपद्रवोंके साथ बयाही माफी धनपुत्रमें फिर वास करनेके स्थिर बौध बाना पड़ता। हर महीने या वृषरे-सीसरे महीने यह सगड़-समेध निभय ही हुआ करता था। जान पड़ता है, हममें भीतर ही भीतर उलझ कुछ खम था नहीं तो केवल इही तब कामोंके स्थिर वह इतना परिभम करके इतनी बुर बार बार न भाया करती। वह बैस परिशक्ती औरत थी, उससे ये तब आनन्द इस कम क्लेशमें वह उद्यवन कर सकती थी। खैर छोड़िए इन बातोंका। ऐला भी हो सकता है कि वह अपने अनमोल रान कन्याओ बहुत बारीकी थी, इसीस्थिर कुम्भार्ग्यमिनी जाने पर भी वह उसकी ममताओ सुन्न नहीं सकती थी और समय-समय पर उसे देखने आ जाती थी। इसी तरह हुआ करता था। इसके बाद जब उसने सुना कि बयाही संगमें हुए गई, तब पीतवारके धरते रातपुरकी आबी आशदीओ उठने अपने परके समने बसा कर लिया।

धनपुत्रमें अधिवांश छंदी बातिक स्वेय ही रहत व। इसीस अविश्रंश ही गनिहस-विज्ञानाः परकी बुद्धि, अवेद, बचन उमायाई भीलोसि बनाके परका द्वार इयन-ही-वेग्यत भर गया। तब तमीने किमपसे भीलें घाड़कर उसाइ होधर वह कहानी बयाही माके सुहम सुनी कि बयाहीका बहाव, जो एक घोर शिन्ना बड़ा था, मावः पीय ली इस-बाधितो छहित कलकठनें हुग्यी नरीके भाव बयमें हुए दया।

फिर बयाही माने कहा—वे स्वेय बात हैं कि इतना बड़ा बहाव कलकठा घरमें हुआ मही है।

एक बुद्धियाने हमे लीकामने हुए कहा—तो तो नहीं ही है।

एक अथइ औरत दिवित्त हाकर पूछ बैठी—उम्के



बवाक्षी माने कहा — भा बन्वी, रामोका क्या कोई खेला-खेला है ! वह भीख चुप रह गई ।

बवाक्षी माने कहा — बुर क्या साहब तक देखने आये थे ।

सुखियों का मन लड़े करके उठकर बैठ गई ।

बवाक्षी मा—बुर का साहब तक रो पड़े । मेरी बन्वीको सभी प्यार करते थे न !

यहाँ पर बवाक्षी माने औरके कोनेमें औरक रगड़ किया । और मुने पासियोंके छत्रमेंसे अनेकने मन-ही-मन भगवान्से वह प्रार्थना की कि किन्तु पुण्यकर्मोंसे धूलसे बन्ममें बवाक्षीके रूपमें वे उत्पन्न हों ।

बवाक्षीकी मा बोली—बवाक्षीके रूपकी क्या कोई इच्छा थी ! चाकर सुखियोंकी प्रथिमा थी ।—आहा कैसी नाक थी, कैसी आँखें थी, कैसी गदन थी ! किसी अंगमें क्या कहीं एक तिप भी दोष था !

सुखियों चुप रही, किन्तु बुद्धिया, प्रौढ़ा बहोतक कि दो-तीन अनेकोंने भी वह स्वीकार किया कि इतमें कोई कन्वेह नहीं है—स्वयं सिद्ध है ।

“ और बाबू क्या कम चाहते थे ! उतने वह जो मँगवा, वही पाया । इतने बड़े राजकुमर अष्टमीकी नजरमें पड़ना क्या कोई लापरवाह बात है ! ”

इस बातको मन-ही-मन प्रायः सभी मुनेपासियोंने स्वीकार किया ।

“ मैं भी अब ज़ारा दिन नहीं बिरुंगी—वह छोड़ क्या कहा बावग्न ! ”

इतमें किसी किसीको शायद कन्वेह भी था; किन्तु महागुप्ति प्रकट करनेमें कोई नहीं चूम ।

एकने पूछा बर्मादार बाबूका क्या हुआ !

“ वह अच्छी तरह है । अस्मय धूलसे बहाव पर धे न, इतीसे बच गये । ”

एकने पूछा—तो क्या दोनों बने अस्मय अस्मय बहावमें थे !

“ और नहीं तो क्या—दोनों बनोकर सिर्फ एक बहाव कापी कर था ! लापमें आरमी क्या कम थे ! ”

दुनरीने पूछा—उन सपना क्या हुआ !

“ आह ! सभी बूढ़ गये । ”

बद बेसब इसी तरह कटी। इसके बाद संप्या हो गई, 'यन्मा तत्र काम कान्तयो वया है—बाती है' या 'कब क्या करोगी? बिंदगी-भौतमें किसीका का (का) नहीं' अथवा 'बीच घरो—अच्छा तो अब बाकी' इत्यादि बदकर तनी एक-एक करके निकल गईं। बयाली मा मी कत्तीत किनाड़े बन्द करने से कुछ या बही पकाकर प्य-पीकर का रही और अब तक नींद नहीं आर तब तक रिक्त निराकर परोकिनोकी नींद हयम करती हुई उनके दरममें यौव बेने बड़े बहाब और तब लहबके रोनेकी याद बगाती रही।

दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही बयाली मा नायकबपुरली ओर चल दी। बाँ-बीरे वह नायकबपुरमें पहुँची। वही राह, वही धाद, वही बसोंकी पौर, वही लव—तभी परिचित था। बयाली माको बाद आता कि इसी राहसे वह पन्नी थी और इसी राहमें उसी पीटवी हुई छोट बाती थी। अब वह नहीं है। कैसा सगड़ा अब कभी न होगा, उठ तरह उसी पीरनेको भी न मिलेगा। तैशुनी वेदनासे उच्छा हृदय आकुल हो उठा। हवाएने बरिधरसे उठ बेदनाकी धाम करती हुए बयाली मा आगे बढ़ी। बिकके परके सामने होकर वह बाती थी, उलछा ली काम छाड़कर भी कामसे कम एक कर हस्ताके या गिराईके एक आकर अत्यय गगन होना बजता था। बमछा तुनेन्द्रबाबूका घर था गया। वही था है सामने। बयाली किन्नी ही स्मृतिवौ उलसे सुझी हुई है। बयाली मान आकुल मानने रोनेका बार हवाएने बढ़ा दिया। वहल वह लमनके धरनेने मीर मुझे नहीं जाती थी। करण, बाबूने मना कर रखा था। किन्तु आब यह इस तरह अपिनकी तरह रौफते-रौफते मुल पड़ी कि दरवानोका बापा बेनेका लहस किन्नी तरह नहीं हुआ। तभी त्याग्य हव हय पीठ हो गये।

तुनेन्द्र बाबू उल लमर भोबनेके बाद विमान कनेका प्रयास कर रहे थे। बीरबाबू लमने वह लमया गव कि बयाली मा है। बाँकीही तरह वह तुनेन्द्रनाथके बल बहूनी और बयालीको सफल पानके किर अन्धकारसे एक आंगरन करके ही उनसे कुछ ही धकनेर बैठ गई। इसके बल और एक आंगरन, फिर एक आंगरन—एक बल पूरा होने-न-हाने कि-किर लेकनों-हवाय आंगरन, निष्ठा-पाना, बेचिण लवब करना इत्यादि तरह बरदव करके बल बुढ़ियाने तुनेन्द्रनाथको एकदम बिहन किन्तु-का

इतके बाद माया पकना, और औरसे छली पीटना, जैसे बगाना और बाल नोचना आदि जो कुछ हुआ, उसका पूरा-पूरा विचारसे वर्णन करना हमारे बूतके बाहरकी बात है।

उसके अन्तमें यह कहकर उठने अपना बचस्य समाप्त किया कि अब उठते पल लाने-पीनेके लिए एक पैसा भी नहीं है। अगर बाबू दवा न करेंगे तो वह भूलों मर जायगी, और नहीं तो यही गलमें रलीय कपड़ा बाजार उतरी ब्यापारी बहों गई है, बहों बची जायगी।

सुरेन्द्रबाबूने कहा—अच्छ अब कितना मिस्त्रोसे सुमारा कम बच जायगा। ब्यापारी माने, भौंसे पंठकर कहा—मेरा, मेरा कम तो बहुत थोड़ेमें ही बच जायगा—मैं विधवा हूँ, मेरा खोद नहीं है—मेरे लाने-पहननेमें कितना लगेगा।

“तो भी कितने बचने चाहती हो ?”

“फिर कपड़ हर महीने पामेसे मेरा सुबर हा जायगा।”

“अच्छ बही मिश्रगा। अब एक विधोगी, महीने-महीने कचहरीसे ये कपड़ ले जाना।

तब ब्यापारी माने बाबूको बहुत-बहुत अलीसा, अनेक प्रश्न करनेवाली बातें कहीं—इतके बाद बच ही। बाते कम बच फिर उठ तरह खेत-येने नहीं गई, इन्दि और भी अनेक बातें मनमें लोबती हुई गई। ब्यापारी मर गई है, मा होनेक कारण उसने हृदयमें अत्यन्त कष्टसा अनुभव किया है, किन्तु कुछ सुविधा भी हुई है—बाल कम ब्यापारी मा यह लोचना नहीं भूली।

सुरेन्द्रने विदा होकर ब्यापारी मा सीधी नहीं चली गई। बिल स्थानपर धरके नौकर-बाकर रहते थे, वहाँ आकर उपरिषा हुई। वहाँ उनके परिचित अनेक बाल-वाली थे, उनमेंमें अनेकने ही ब्यापारी माके दुःखमें तहातुभूति दिखाई, दुःख प्रकट किया। दो-एक बनी रो भी दिव।

ब्यापारी माने बहुत-सी बातें कहीं, सुरेन्द्रबाबूने ब्यापारी भी पचा की, किन्तु कमया बातों ही बर्णने अब उसने मुना कि उगरी ब्यापारीके स्थानपर और एक ली आ गई है और बाबूने उसे पड़े बाहर-व्यारसे बागके धरमें स्थान दिया है, तब ब्यापारी माने और ही रूप प्रकट किया। उगरी भौंसे आया बालने लगी। स्थान-कमया गया न करके उठने वही बागके धरमें रहनेवालीके

बिड़ बहुत तरफ़ से बोन-बानस करना और गांधी-गण्डोब करना शुरू कर दिया।  
 उन्हेही आकाश कमरा: कैसी होने लगी—अदम्य उलझावसे फिर नये विरेसे  
 बसि एक नोकना और छाली पीटना शुरू हो गया। बाउ-बाती सब डरे, शान्त  
 होनेके ठिठ बहुत समझाया अन्तमे बाबूका डर भी टिखाया, वह भी कहा  
 कि नाश होकर बाबू रूप बेना बन्द कर देंगे, किन्तु बवाली माने बहुत देर  
 तक इस पर ध्यान ही नहीं दिया। अन्तमे उन्होंने बाबू होकर और उपाय  
 खेब निहाला, और सब बनी मुद्रिकउठे बवाली माके हायस उन्होंने  
 पुत्रमग पाया।

रातमें अचानक बवाली मा बागके परकी खोर पड़ी। अन्तमे शोक उलझ  
 बौधुना उमड़ पाया है—इपकी आत्मे उनकी हठी-पठठिबोमें आग लगी दी  
 है। उमे ध्यान पढ़न लगी कि इन बीने ही उनकी कन्याको हुनी दिया है, और  
 माय बनपूर्वक उतके स्थानपर आ डडी है। गलबले-गलबले बवाली मौने बागके  
 परमे प्रवेश दिया। वो वाली सामने पड़ी, उतकी अर अचसे मरी अन्त लक  
 अँटोमें गडडर बोली—वह बहन करी है।

वह वाली बवाली नई नई आई थी। उन्हे डरते डरते पीठ हलकर कहा—  
 रा करी है।

बुद्धिबाने बेना प्रान किवा का बेना ही उतर पाया। वह भी उतरना अर्थ  
 समझ नहीं लगी। और एक बार टानीकी खोर देखकर बुद्धिबाने पूछ—  
 करी है।

वह उगली उठाकर बोडी एक तरफ़ दिखाकर सिन्क गई। बवाली मौ  
 भीड़िपेमें ऊपर पढ़ गई। वहीं हर एक कमरे और कोठरीमें भूमने लगी—  
 किरीम भी नहीं हुई—किन्तु यह कैसी छोमा है। किटना अठघाट, किनी  
 लकास है। बुद्धिबा पहले मुनेद्रबाबूके इन परमें बहुत दिन रह गई है। वहीं  
 उन्हे बहुत-ही बीने और लज्जान देना है, किन्तु ऐसी लज्जार से कभी नहीं  
 रमी। बिना देखी थी उनका ही पुत्रकासी बाती थी कुच नामिनकी तरफ।  
 उमे ध्यान बाने लग्य कि यह सब बवालीका होना। और बोन जानता है कि  
 किनी समय हायस उतरा ही हो जाना।

हली तरफ़ मनमे एक-दिकके करते-करते उन्हे एक कसमें एक बीने  
 पाया। “तुम्हारी मातृदेन करी है।” अन्तमानिड ककना

“सुन लो रही हूँ।”

“मैं आज ठक्या कुछ किस्मना - येना-येल्का करना सब निफास हूँगी।”

“निफास देना। वह औसत बेसी है, येना ही करके सुझ कर जाना।”

“तो करके बाँकी। अपना वह मन्त-उन्तर में कुछ जानती है।”

“मन्त-उन्तर ? सुनती हूँ, ‘कामरू कमप्या’ से हीस आरि है। मनुष्यको मेड़ा बनाकर रख लुफती है। बेते इन बाबूझ बना रख है—ठठमचो करत है तो ठठते है, बैठमको कहती है तो बैठते है।”

बपाकी माझ सुन कुछ विदर्भ हो गया - पीस पड़ गया। सुने हुए मुग्ध बोली—ता मन्त-उन्तर में भी जानती हूँ।

“जानागी कबो नहीं ? बेर, आज हो पहरके बच बच आयेगी बह, तब तुम्हें मैं रिखा हूँगी।

“बान (मूठ) मारना जानती है ?”

“जानती कबो नहीं ?”

“कब भावगी ?”

“कहा तो, हो पहरको।”

बपाकी माने साँझपर पिड़कीने बाहरकी ओर देगा। बान पजा, बैम होपहर होनेमें अधिक वर नहीं है। कुछ-एकर उपर करके शर्की - लेकिन आज सुन बहुत-सा काम करना है—आज जाती हूँ, कम आऊँगी।

बपाकी मा ठठकर लड़ी हो गई।

“मा, नम, आज यहाँ ल्या-रीकर बाहर।”

“बड़ी देर हा भावगी।”

“कुछ भी देर न होगी।”

“तो फिर कभीसे हापर दे दे बेटी।—तुम्हारा नाम क्या है बेटी ?”

“मठ नाम मास्ती है।”

“आरा, बहुत अप्प नाम है।”

इनके बाद बपाकी माने जीब आकर बदनर कुछ ग्यनी किया। मास्ती पान ही बेटी थी। उमन देखा कि बपाकी माझ एतना बैना सुमीनच नहीं था। बदिबान उदकर बहा—अज जाती हूँ बटी।

“मैं, एक बाल बन्धी बान्धते कहनेकी बन्धी है। क्या दीदीसि मैंने इस बन्धे ठहर निद दे। वह तो खी नहीं अत आप अगर दवा करके मुझ इस बन्धते उरिद कर दें छे बड़ी कृपा करेगी।”

बराही माफी लमसमें बाल कुछ बन्धी ठहर नहीं बार्द। बन्धी—क्या करे।

“वह बाल बन्धे आप ल मे।”

“मुझे तुम बोगी।”

“हो।”

माफ्तीने अल्पन दल बपय लमकर बुद्धिबाके हाथमें गन्ध दिय।

बराही मा बहुत देर तर माफ्तीका मुँह ताकती रही। इसके बाद धीरे धीरे दली—बटी, तुम निश्चय ही मने पायी बराही हो।

माफ्तीने मुनकगक कहा—इम दुन्नी बग है।

बराही मीठी भौक्तोके बानोमें बस भर आवा। बोधी—छे रहा। छ मी नू मय पायी बराही न हाती—वह देख न छे—मैं लन बाल ही बहूगी—मरी बराके हाथमें हवन दपय मे; लेकिन अन्न मा लमहाकर बाल बन्धे रुकने बन्धी इस तरह हाथ टठाकर मुझे नहीं दिये।

बराही मने हाथन बन्धी भौक्ति पोली।

माफ्ती—इम दुन्नी यतीव बराही है, लेकिन बम छ है।

बुद्धिबा—है, लेकिन क्या लमी समय पर लपलक रखने है ?

“छ न लें। हो, तो बम आभोगी न।”

“हो—आउंगे क्यो नहीं।”

“ही फिर मैं आब क्या बन्धी मात्यकिनय आकर विद कर लें।”

“हो—छ—नहीं—इसके बन्धी छोड़ बरक नही।”

बामसने सौखी हुने बराही विदाकर पनाल बराही मक मनमें पभारट पैरा कर रया छ, यह छ माफ्ती लमहा छे छी।

बराही माहा मुँह लर दपय छ। अन्ने बरा—आज छे बम बन्धी है—दल धीनमें छे लन आवा बनेगे।

“अपन बाओ।”

## १३

बयाली माके आनेका बर हुतास्य हुनकर सुरेन्द्रनाथ लुट हँते । बोले—  
तुमसे उठका लुट छगल हो गया ?

मास्तीने कहा झगडा क्यों होगा, बरिड लुट मेठ ही गया ।

“ तो तुमन उठसे मेठ कर किया ?

“ हाँ, कर किया है । ”

“ लेकिन आन्नी सड़कीसे उठकी क्यों नहीं पयी थी । हमेशा मनचन  
खी—सगल होता था । ”

“ तो कुन सुयी हूँ । ”

“ किन तरह ? ”

“ अपने भाप ही मनके हुनसे पुत्रसे कुछ कुछ कर बला । ”

लेकिन मनके हुतास्य बरब मास्तीने कोकर नहीं कहा ।

‘ परत ही परसे सुठकर चापर अपने हुनसे लुट गासिनी ही थी । ’

मास्तीने हँकर कहा—तुसे नहीं ही । किड बारनको तुम कककेसे  
से भाके हो, उठीको ही थी ।

“ बर बारन तो तुही ही । ”

“ मैं क्यों होमे क्यों ? मैं तो कककेसे भाई नहीं । ”

“ इससे क्या, हो तो तुही । ”

“ तुसे बर पचान ही नहीं पाई । एक दासी कमत लिया था । ”

सुरेन्द्रने कुछ दुःखित मारसे कहा—इसके सिवा और लोग क्या कमत  
छात्रे हैं ?

मास्ती—मैं भी इलीनिय बर गई नहीं जान पया है, क्यूना न  
रानी तुस ।

“ मार दास्ती क्या ? ”

“ जान तो वेगा ही पया है । ”

“ उगल बर क्या हुआ ? ”

“मैंने कहा कि वह भाष्यजिन नहीं हैं। इस पर बोली—उसे धाने दो, भाते ही खा डारूँगी।”

सुमेन्द्रनाथ हँसने लगे।

मास्त्री—फिर पूछ कि उसने तुम्हें कुछ सिखा तो नहीं दिया। मैंने कहा, ज्ञान तो पढ़ता है कि कुछ सिखा दिया है, नहीं तो उसके करनेसे उठते-बैठते क्यों हैं।

“मैं क्या नहीं करता हूँ।”

“करत नहीं।”

“अच्छा वह देखो।—फिर उसके बाद।”

मास्त्री—उसके बाद उसने पूछ कि वह मस्त-मस्त कुछ बान्ती है कि नहीं। मैंने कहा—तुम बान्ती है। सुनती हैं, बाम्बससे सीख भाँरे है। तब बोली—मैं भी बान्ती हूँ। लेकिन मैं समझ गई कि बुद्धिवा मन ही मन कर गई है। फिर उसने पूछ कि क्या वह ज्ञान (मूठ) मार सकती है। मैंने कहा—हाँ, मार सकती है।

अपनी सुमेन्द्र का पूरा लाल बोरसे हँस पड़े।

“तब शाबर मना गई।”

“हाँ।”

“और कभी नहीं आयेगी।”

“आयेगी क्या नहीं; लेकिन तुम्हारी उस डारनेके फल नहीं आयेगी—माना हाथ तो मर फल आयेगी।”

“किन्तु वह ठकवा भी बाद आये, लेकिन तुम मर फल आओ।”

मास्त्रीके ज्ञान भावसे उसके दोनों हाथ पट्टाकर सुमेन्द्रने कहा—मास्त्री, मर और जिन जिन इस तरह किन्तुभीनी। तुम्हारा ऐसा मर भौतिकसे भव देना नहीं जाय।

मास्त्रीन होठोंने हरी हँसी हँसकर कहा—महने पहननेसे क्या कम पढ़ जाय।

“तुम्हारे कधी सोना नहीं है। किन्तु सोना नहीं, उसे बढ़ाना नहीं जा जाय। लेकिन जन्म जन्म मरी तृतीय सिद्ध हो—



“ पहने पहनने होमे ? ”

“ हाँ । ”

मास्त्री—मैं पहन सकती हूँ, लेकिन पहले वह बताओ कि मुझे पहने पहनानेकी तुम्हें इतनी बिराद क्यों है ?

सुरेन्द्र०—अगर बता दूँ तो मनमें दुखी तो न हो बाधोगी ?

मास्त्री—बिलकुल नहीं ।

सुरेन्द्र—अच्छा तो बताओ हूँ, मुनो; तुम्हारी यह नियामक मूर्ति बड़ी ज्योतिर्मयी है—उस रस्य करत जी कभी-कभी जैसे एक सख्त मनमें का बाता है—इसने ही बाल पड़ता है जैसे मरे पाप टोक तुम्हारी ही तरह नगरम-रस्य हाथ फूट पड़ते हैं । तुमसे क्या कहूँ, तुमारे पाप बेटा रहता हूँ, किन्तु कोई एक अनजाना मक मुझ किनी तरह नहीं छुट्टा—ऐसा क्या है । मैं कैसा मुन नहीं पाता, जैसे तुमसे हित-हित नहीं करता । जहाँस पहने पहनाकर तुम्हें कुछ मज्ज कर लेगा ।

मास्त्रीने सुनवाप अपने वष अंगोरर दृष्टि टासी—बहन बड़े रूपमें पूर प्रतिबिम्ब देना पड़ रहा था, वह भी देखा । उसे लगा, जैसे दर बघायमें ही बड़ी उग्रता है—बड़ी ज्योतिर्मयी है । उसे लगा, जैसे पुण्यकी अर्पित मूर्ति का भी हाथ उगनी देहको छुट्टा कर गईं नहीं; पवित्रताकी छाया अब भी उन देहपर कुछ कुछ मौजूद है । उग्रता, रहना निरुत्तर कममें मास्त्रीको कुछ मज्ज उठता हुआ । उसने देखा, सामने रूपमें एक अर्ध-कित्तु बनीमूर्ति है और उगरी कासमें जीवनके आग्रह्य सुरम्यनायकी निरुत्तर देहमूर्ति है ।

निमय और आनन्दस मास्त्रीने अँल्ले मूर ही ।

दूसरे दिन ठीक सप्याक बार सुरेन्द्रनाथ मोहन नयन-वेगमें मास्त्रीके कमरेमें दिगर्ग दिव । यन्में पूर्यके रबरे—मूरी, बला, बकुल, कामिनी अदरि पूभीकी देहकी उर मास्त्रीने गन्धे उगरी तक पड़ी है । एक हाथमें गुण्डला और दूसरे हाथमें मन्त्रमन्त्रे मन्त्र एक सुन्दर सुगन्धित छीप-ला एक गहनेका बला है । देहपर गेष्ठी बन्ध और रछमी पोती है, पैरोंमें बरीके मूले । हितने सुकने एवदम मास्त्रीके सामने आकर एते ही गये । उनक पोषक-रहनाकेसे बगनर मास्त्री हैतर बोली—आज वह क्या है ?

सुरेन्द्र०—बताओ मज्ज क्या है ?

“ तो तो मैं नहीं जानती ।

मुरेन्द्रनाथ प्लाबडी गम्भीरता से सफ़र खबर बोले—तुम पूछा करती हो ?

“ करती हूँ । ”

“ हा तुम्हारे घरमें पन्दन है ? पन्दन खरर मुझे बता दो—आज मेरा प्यार है ? ”

“ किसके साथ ? ”

“ पहले लडाओ, उसके बाद मुन देना ।

माझी नीपन पन्दन फिर खरर और मुरेन्द्रनाथको अर्घी तरह सबखर देती—आज बग़ाब ।

“ वह क्या आज भी नहीं समझ पाए ? ”

इसके बाद गलेमें कुम्भेरी माथपर निष्कामकर एकके बाद एक माझीको पहनाए मलमली कपड़े सन-बड़े आनूय निष्कामकर सपारधान कम्म पहनाये । माझीने कम्ममें कमी बैसी सीने नहीं देखी थी । वह निश्चिन्त होकर उन्हें देखने लगी । लव कम्म करके मुन-मुन करके मुरेन्द्रनाथ को धरने करा—तुम्हारे प्यार कर लिये । रहने दिनोंमें आज तुम मेरी सी हुरे । अब तुम करी माय नहीं लखोगी । वो माय आज मैंने पहनाई है उनके कम्मको कम्म-कम्म-कम्ममें भी तुम लगे नहीं लखोगी ।

दोनों-दोनों ओर भा गये, दोनों ही कुछ देर तक रोख नहीं गये, एक-दूसरे माझीके ओर से मुरेन्द्रनाथने कहा—आज बर बड़े, बानी पहली बार समझ ली—माझीके देखे हैं, इस लीनमें लया हुआ था ।

माझी मुरेन्द्रनाथ प्रथम करके फिर उनके साथ बैठी । आज उसकी ओरमें ओरमें लकी लकी का गई है । लकीका बार लकी, लकीका बार ओर मर भाये । ओर लकी तरह पन्त ही न ब । मुरेन्द्रनाथ कम्म दव । कम्मकर बोले—माझी, आज सिया-माझीका बाद आ रही है ।

माझीने फिर सियाकर कहा—हाँ ।

मुरेन्द्रने कहा—इसके ली, कम्ममें तुम्हारे आज ही लका लकी । लीका र कि आज इस तरह नहीं रहूँगा । अब तुम्हारे साथ है वह लीकर लीकर लीकर लीकर

कहेंगे और फिर एक बार यह सब कहेंगे। हमारे मंत्रा पित्रा यही कहेंगे।  
 खोग वाह जो तब करें, मैं तो सुखी होऊँगा। (सम्मी लौट खोजकर) वह  
 आश्रम अब एक बुढ़ा है।

माध्याह्ने सुरेन्द्रने फिर पूछा—अब पर पछेयी ?

माध्याह्ने कहा - नहीं।

“वहाँ तुम्हारा घर है—वहाँ मैं रहता हूँ।”

“वह क्या मेरा घर नहीं है ?”

“तो क्या वहाँ न जाओगी ?”

“ना।”

“मैंने यी शिक यही लोना था।”

## १४

शुभराके दिन बेरसे बीतते हैं, यह सब है लेकिन बीत जान है। बने नहीं  
 रहत। माध्याह्ने मृत्युके बाद पुनराक दिन भी उसी तरह बीतते लगे और  
 बहुत दिन बीत गये। उन समय काँकाहू थी। आश्रममें बहुत ठावे  
 व यह-भारते बीचहूत दिनभन थी। अब उनके बहते मन्त्राक आका  
 है। न वे बादत हैं, न वह बीचहूतों सिलभन है। यह-पार लुभ है। कभी  
 कभी दो-एक बारके दुःखे उदरेपहीन-से आश्रममें कहीं लगे जाने देत  
 पात है। उन समय प्रकृतिअ सुन लता म्मान रहता था, अँगोमें नित्य अँगू  
 रहते व, नित्य उल्ला सुन मलिन रहता था। अब यह बल नहीं है। कभी  
 कभी प्रकृतिअ वह सुन कुछ मलिन हो जाता है, दो-एक बूद घनी भी अँगोमें  
 टपक जाता है, किन्तु वह बल मारके स्थिर। प्रकृति तुलत अँगू पौधर फिर  
 हँनने लगती है। अनीनभी अँगोमें मिक हुए कुण्डी आभिरा दपारकी तरह  
 आश्रमके चिन्नी अगा अनिहैरय कोनेने प्रकृति गङ्गा कके कभी कभी  
 आरप से उठती है किन्तु उन्में दरगार नहीं है। एक ही तरहका जीवन  
 अन्त नहीं लगता, इन बलाओ केने प्रकृतिदेवीने भी अब कुछ कुछ समत  
 रिषा है। परिमंनके बिना संसार नहीं चलता, यह बल लयी लगतावे है,  
 लनसाय नहीं है केवल पुनराक उन्मय करनेकाय सचिकन। बरने वह पैदा  
 हूर लकन अन्तक। पुनरा इन बलाओ मनमें रिषार कर दन्ती है—और

देखा है उदात्त परवर्ती। मोहलेके पार उदात्त देखते हैं—छमरा पाठके नराकर का रही है, पानी-मरी कठसो कमपर रखे और गम्भीर गतिसे पथी का रही है परके कम-काय कर्ता है किन्तु नित्य धीम, नित्य विपादमयी। रूढ़िनी कर्ता है—छोटी अथ कथेनी नहीं—आह !

हमकोकिना कर्ता है—ऐसी तफ़ीर काजुची मी न हो—आह !

पीछे 'आह आह' समी करते हैं; किन्तु सामने बर करनेमें उन्हें काग्रा मारुम होती है। समी केने बर उदात्त हैं कि यह 'आह' छमराके सम्कर्मों कीक नहीं क्या। और एक कार्य छमर—वा कागर्म नहीं है, त्रिषदा उदात्त किजाने प्रयोग नहीं किना वेना एक छमर अमर हिंदि मिले, तो बर करनेके ब्यक्त कुछ होमा। इसीसे थोरें कुछ नहीं करता। छमराके आनेपर पुप हो बात है। खान करते छमप रंगाके पापर छमके-कडुकी पानी उदात्तते हैं, एही छमर अमर उदात्त करने हैं। किन्तु छमरा सब पुपकाय पाठके सबसे अन्तिम छमर कमयी रत्ताकर निहायत अत्युत्स पीच पाठिनी कीकी तरह संश्लेषके साथ पानीमें उतरती है, तब वे समक-वाकिम मी समझ जाते हैं कि अब उदात्त और छोर-गुन न करना चाहिए, पानी नहीं उदात्तना चाहिए, अब पुप हाथ छान्त-छि होकर अमयी माके पा और किसी अमने आदमीके अन्विच्छये पडाकर उसे रहना चाहिए। छमरा नहा-काछर बर छमर पथी कायी है, छमिन तब भी बन्धोम बर परलेका नाव कशी नहीं और पात्र।

छमरा ईजना केन मूक ही गई है, पुप कना भी मूक गई है। येनेसे उसे शिथिल हो गई है। वह तब पुगनी काशीर विचार वा उनकी आस्थेवना बनने लगी है। पर आबकन कापुन रूपम सुता हो गया है। छमना अमयी म्नुगल कयी गई है। एज्यनि प्राया दिनमर बर नहीं जाती। और हासन कुपरी। ले बर आबकन 'अपठे लडके' बन गये हैं। नित्य होनों बर पर आत हैं, रो आने पार आने परथरीथी तरह छमराके बरें करकर दीय ले बात हैं, छि पने बात हैं। छमरा काठि होकर रदोरंकाके छमर कोरंका अन्विच्छ विजय पनी पटी है। छमरा होनेपर छि उठयी है, पापर कायी है, रोरक कथयी है, रदोरं कायी है—बन करके एक पथीमें अब

परोसकर स्वामीके लिए रत्न देती है, सबानन्दको म्मेवन कराती है। फिर लबेरा होना है, फिर दोपहर तीसरा पहर होता है, फिर रात आती है।

नित्य बेस होता है। बेसे ही भाव भी शुभदा दोपहरके बाद खोईपरमे सेयी हुई थी। बाहर मरानी अन्धकारमें किन्तीने पुकारा—माजी।

शुभदाने मुना बरु, किन्तिन सेयी नहीं। खेना, शयन और किन्तीन कोई पुकार था है।

उठ आरमीन फिर पुकारा — अजी अये माजी।—कोई परमे है।

शुभदा अन्धरी ठठकर बाहर आई। बोसी—बोन है।

उठ आरमीने कहा—मैं डाकिया हूँ। चिड़ी है।

शुभदाको बड़ा रिजब हुआ। चिड़ी बोन किन्तीना। पाठ बाहर सेयी—अओ।

डाकियेने कहा—इत तरह नहीं मिलेगी माजी। यह रबिस्त्री चिड़ी है—शुभदा बेबीक नाम। उनको हस्तगत करने होंगे।

शुभदा रबिस्त्रीका अर्थ अन्धी तरह समझ नहीं पाई। बोसी—अओ, भय ही नाम शुभदा है।

डाकियेने चिड़ी मिजासी, अन्ध रबीरका कागज निकालकर दिया और कहा—इतदर रही कर हीरिए।

शुभदा सिन्ना जानती थी। बोसी—अन्ध-शाल खओ।

डाकियेने शुभदाके मुन्ध्रि और देलकर कर हँकर कहा—अन्ध-दानाठ में कहीं पाऊँ म्म ? आपका घर है। परमे अन्ध-शाल नहीं है क्या ?

शुभदाने कहा—बेफ्फि हूँ।

ऊपर-नीच लकन खेनेना ठमे लन्नापी एक आबी दूर्य शाल मिन्नी। स्वारी खन ग्रं थी। पानी शलकर किन्ती तरह सिन्ने अन्ध स्वारी बना थी। किन्तु अन्ध कहीं है ?

एकएक शुभदाका मापरके कन्तेम लपल भावा। ऊपरके कोटेमें एक कोममें एक छोटी बीबीक ऊपर बैठकर मापर और लन्ना पदने सिन्नेअ अन्धक करत मे। लन्ना उन्दी पदानी थी। शुभदाने ऊपर आकर देना—एक कोनमें डमी बीबीक ऊपर बैने ही एक छोटेने स्वारीसे लने बन्ध-उन्धमें देना हुआ मापरम कला पड़ा है। शुभदा इधर बहुत रिनेसि आई म थी।

बहुत दिनोंसे इत खोर देख नहीं था, यह खन्नाची खोठरी थी। खन्नाके मनेके घर आब पहली बार शुभदा इत खोठरीमें आई। माबबचन बला हापमें लेकर खीरे खीरे शुभदाने उठझे खोख। उममें एक टूटी स्लेट, एक आबी रीट, अंकगणित, दो किताबकी कयम, एक टूटी संठकी कयम, छोटी छोटी दो स्लेट-वेन्डिले पुरान कनेइरोमें काटी गई चार-पाँच कन्वीरें थीं। शुभदाची आँसुमें एक बड़ी-सी आँसुकी सूँद्र स्लेटके ऊपर गिर पड़ी। एक कयम लेकर शुभदाने वह सब सामान मनसे सैमाककर बाँधकर रक दिवा। भरन, वह जानती थी कि इन तपक मापक बड़े बलस रक्ता था।

नीचे आकर शुभदाने थिड़ी से सी। कमरक भीतर जाकर खन्ना तो उठके भीतर एक पबान बपयेका नो निखता। निखप ही गली हुई है। डाकियेको पुकारनेके लिए वह हापकर बाहर आई; लेकिन वह तपक बल रक्ता था। गौरकी बटू ठहरि, निताकर पुकार नहीं लगी। इसीम नो खिब खैट आई। शुभदाने सोचा था, का देर यह डाकिया अपनी गली कमात पानकर आर ही मौखर आयेगा। लेकिन वह नहीं आया। तब शुभदाने यह बात तदानन्दने कही। तदानन्दने बेल तुनकर कहा—गली नहीं हुई। इन गौरमें आरक नामका खोर आई नहीं है। काक तिला है, हाउन तुनबाँके घरमें। तब तो यह आरहीची है। लेकिन कयकसेमें आपका कौन है ?

शुभदाने कहा—कयकसेमें मंग खोई नहीं है।

दुगरे दिन तदानन्दन डाकपर जाकर पत्र ख्याता तो मायम हुआ—अपोरनाय बनु कयकसे बलकसेस से कयसे मेव है।

शुभदाने विरिमत हाकर कहा—इत नामके किसी आरमीके मैं ता नहीं पहचानती।

“ फिर ? ”

“ तुम खोई उपाय करो। ”

तदानन्दने हुनकर कहा—उपाय और क्या कयकसे ? कयसे अगर न एता बाद तो खैय दीखिए।

शुभदाने कहा—भैया, बर बान-बन्तोके साथ खानखे नहीं हुआ था, तब भी हापर व कपर मैं नहीं लेती। अब मुझे कौन हुआ है, क से कपर हूँ ? वे मरे कपर नहीं है। तुम बास कर दो।

खेद-विचारकर सदान्धने कहा—मैं कबकसे बाहर पड़ा आया हूँगा। वे रूपराम भी अपने पास एक हीलिए। अगर लीय देनेको हुआ तो लीय दूँगा।

सुमराने कहा—तुम रूपराम साथ लेते आओ—इतमें मन-भ्रम कुछ नहीं है—एकद्वारगी लीय ही आओ। सम्भव है, उन्होंने और किसीके बरसे गलतीसे मुझे भेष दिये हों।

“लेर, जो कुछ होगा, वहाँ बाहर ठीक करूँगा।”

“यही करो।”

## १५

अपने बड़े-से दरवारमें बर्षास अधोरनाथ बाबू बैठे हैं। और सामने टेबलके दूसरी ओर माणिकपुरक कमीन्डार सुरेन्द्रनाथ बाबू हैं। टेबलके ऊपर सुन्दरमके प्रायबोध ठेर है। स्पष्ट भाषसे रोमों बने उन्हींमें था है।

कुछ देर बाद फिर ठठकर सुरेन्द्र बाबूने कहा—अधोर बाबू, बान पड़ा है, पर सुन्दरमा मैं नहीं उन्नत करूँगा।

“अभी कुछ मी नहीं कहा था लफटा।”

“अप्ये तरह कहा था लफटा है। मैंने ठीक लमसा है, सुन्दरमा हाजरा ही होगी।”

“लेकिन हार्डपोर्टके ऊपर मी तो है ?”

“है, लेकिन वहाँ एक बानेकी इप्या नहीं है।”

“तो क्या मालपुरधि बापशर छोड़ दीरिपगा ?”

“न छोड़नेवा और उषय क्या है ?”

“आपकी आम्बरनी बहुत पर बापगी।”

“हाँ, लमसा आधी रद बापगी।”

अधोर बाबू चुप हो रहे। मन-ही-मन बहुत विरक्त हो गये थे। क्योंकि उन्होंने मी लमसा लिया था कि सुरेन्द्रनाथका अनुमान ही लमसपर लय होगा। इही लमस एक नौकरन बाहर कहा—बाहर एक आरमी लड़े हैं, आपने लिम्बा बाहते हैं।

अधोर बाबूने उनकी ओर लफकर दूला—कौन है ?

“ नहीं जानता । देखनेसे जान पाया है कि कोई ब्राह्मण पण्डित है । ”

“ तो बाहर कर दे, इस समय मुझे फुर्तन नहीं है । ”

कुछ देर बाद नौकरने फिर बाहर कहा—बाद जाना नहीं चाहते करते हैं क्या करती काम है ।

अधोर बाबू और अरिष्ठ लीस उठे । किन्तु मुख्य बाबूकी धार देखकर बोले—क्या नहीं हुआ है ?

“ हर्ष क्या है ? ”

अधोर बाबूने नौकरका ऐसी ही भाषा दी । कुछ देर बाद एक लम्बे डीछके गोरे रंगके ब्राह्मण बाहर ठपठिपन हुए । गन्धमें बनेछ, लोपड़ीपर टिप्पा, केकिन माथपर सिक्का, बिनी आदि कुछ भी नहीं । अपरमैत्री चादर ब्योढ़े और बिना चिन्ताहीन मोटी चर्नी पहने । पैरमें जूता नहीं । सुन्दरतक भूम पड़ी हुई । मुख्य और अधोर बाबू दानोंन उनका देखा । अधोर बाबूने कहा—बैठिए ।

ब्राह्मण बाल ही एक कुर्सीपर बैठकर बोले—बईसक बाबू अधीरनाथ बगुन—

“ भय ही नाम अपारनाथ है । कहिए ? ”

“ तो फिर भारतीयने काम है । जो करना है कर क्या नहीं कर सकता है ? ”

“ बेसन्धे कहिए । ”

तब ब्राह्मणने चाररने लूग्ने एक चागब लीसकर कहा—यह मीठ क्या शुभदा देखीछे भारत ही भेबा था ?

अधोर बाबूने नोटछे उम्ह-पण्डित देगन्धक बाद कहा—हाँ, मैंने ही भेबा था ।

ब्राह्मणने विस्मित हासर कहा—इसदुपुक्त हासनसुरवीके चरमें शुभदा देखीछी ?

“ जी हाँ, निम्बुल छीक । ”

“ य इतर क्या भेज य ? ”

“ मानिकछी भाग थी । ”

“ मानिक कौन है ? ”

अधोर बाबूने मुख्य बाबूकी ओर अन्विदास का देखा, फिर कहा—बाद जानेकी मन्दाही है ।



“तो ये बपू पर हीरिए। किन्तु आपने भेजे थे, वे नहीं लेंगे, आपको वे नहीं जानती और सम्भवतः आपके मामिको भी वह नहीं जानती-पहचानती। उन्होंने मुझे वहाँ फा आकर बपू सेय देनेके लिए भेजा है। हम स्वयंने लम्हा या कि आपन हापर गर्तीसे एक बनेके नामकी बगह बूठरे बनेका नाम पत्रमे लिख दिया है।”

अधोर बाबू हंसि। बोले—येही गस्ती बकीक सेग नहीं कर सकते।  
 “न लही, लेकिन हम अब आप पाक ले सीरिए।”

“यह भी नहीं कर लया—मामिकी आहाके फिना कुछ भी नहीं करैगा।”

तो फिर उनसे पूछकर बाबर हीरिएगा, मैं और दिन आकर दे बाऊँगा।  
 बाबर उठ रह थे, किन्तु सुरेन्द्र आपसीसे पूछ बैठे—महाशय्य नाम।

“मेरा नाम तरानन्द बरूपती है।”  
 शान्दनाय चौक पड़े। कुछ सेकेंड तक तरानन्दकी ओर टाकते रहकर ल—आप यहाँ कहीं ठहरे हैं।

“कहीं ठहरैगा, वह कुछ अभी तप नहीं किया। यही बस्य आवा या और जगना आर ही सीर बाऊँगा।”

सुरेन्द्रनाथने अधोर बाबूसे कहा—अभी बल्ला हूँ, रात्रो फिर बाऊँगा।  
 उनके उपरान्त तरानन्दकी ओर देखकर बोले—आपसे मुझे कुछ करना है।  
 “कहिए।”

“यही नहीं। मय देय पल ही है। आपको अयर कुछ आरति न हो तो पसिए, यही पछे—यही तप कहूँगा।”  
 तरानन्दकी हलमें आरति नहीं थी। तप बानो बने आकर गाड़ीपर बैठे। बैठनेक बाद तरानन्दने कहा—हमके पहले आपको कमी देला हो, ऐसा नहीं जान पया—लेकिन, आपने क्या कमी कहीं मुझे देला या।

“नहीं, नहीं देला। लेकिन आपको जानना हूँ।”  
 “कैसे।”

“देनेपर पसिए—यही कहूँगा।”  
 वेही ही देखें गाड़ी बेरेस पहुँच गई। सुरेन्द्र बाबूने कहा—मैं भी ब्राह्मण हूँ, बस्य भी अधिक हो गई है—आप वहाँ मोहन करें ता हानि है क्या।

“ कुछ नहीं । ”

इसके बाद लाना-पाना समाप्त करके दोनों बने बैठे । तब सुरेन्द्र बाबूने पूछा—घूमरा देवी गरीब नहीं हैं क्या ?

“ गरीब बकर हैं । लेकिन इलीसिए क्या—”

“ समझ गया । इलीसे दान क्यों लेगी ? यही न ? ”

“ हाँ, कुछ कुछ यही बात है । सातकर दण्डाभ नाम कर मास्स न हो सके—”

“ लेकिन इलीसे दानि क्या है ? किन्ने िया है, यह कह रहा है कि इलीसे मूक वा अन्धव्यथानी कुछ नहीं है । अन्ध आदमीघे ही दिया गया है । ”

“ किन्ने दान किन्ना है ? ”

“ मान लीसिए, अपार बाबून ही—”

“ अपार बाबूको क्या अधिकार है ? ”

सुरेन्द्र बाबूने कुछ अप्रतिम होकर कहा—लेकिन दान करनेवा ली समीक्षा अधिकार होता है ।

“ हो लक्ष्य है; लेकिन उल दानघे क्या समी प्रवेश करते हैं ? ”

“ नहीं करते । लेकिन विच्छा नहीं पक्ष्य है यह ? ”

मदानन्द कुछ स्तब्ध ठठा । बोला—घूमरा देवीका ऐसी मिच्छा न लेनमे भी पक्ष लक्ष्य है ।

“ यावद आरक्ष्य बस रहा है लेकिन कुछ दिन पहले पक्ष्य या क्या ? ”

“ इस दानमे मान्य क्या है ? और आनन्द इतना जाना सिंग लक्ष्य ? ”

“ मैं बहुत-सी बातें जानता हूँ । दण्डन बाबू कुछ क्या-कमाने नहीं । उन पर लक्ष-लक्ष्य होन भी है । वो आनन्द ली-पुत्र-पतिवन्ध्या पक्ष्य नहीं कमाना, उनकी पक्षरकी क्या इतरकी लक्ष्यकाके पिना पक्ष लक्ष्यी है ।

मदानन्द कुछ गम्भीर बन गया । इस समय लक्ष्यका कोई उच्छ म र पाया ।

सुरेन्द्र बाबूने फिर पूछा—दण्डन बाबू आरक्ष्य क्या करन है ?

“ कुछ नहीं । ”

“ समझा । वो फिर आन्धी लक्ष्यकाके धन उनकी लक्ष्यकाके बस लक्ष्य है । ”

“ मान्य लक्ष्यका करत है । मैं ली लक्ष्य पक्ष्य हूँ । ”

“ छत्ताका पक्ष्य हो गया ? ”

“ हो गया । ”

“ क्यों ? किसके साथ ? ”

“ हमारे गाँवके ही बड़के—शाखान्तरण उसके साथ । ”

“ मायाव क्या कैसा है ? ”

“ बह नहीं क्या; उसके मरे भला हुआ ।

“ आह !—अपना उनकी बड़ी बड़की क्या करी है ? ”

खान्तरणने विगिप्त होकर कहा—“क्योंके क्या माने ! बह भी तो नहीं बची । ”

“ बची नहीं ? कैसे मर गई ? ”

“ गंग्रमें डूबकर आत्महत्या कर ली । ”

“ बह कैसे जाना ? क्या उसके साथ पारं गई थी ? ”

“ उसके साथ पानीके ऊपर नहीं आई; लेकिन उसके पहननेकी चोटी गंग्रके किनारे मिली थी—इसीसे मालूम हुआ कि उसने अपनी जान दे दी है । ”

“ एत कारेमें क्या किसीको कन्हेह नहीं है ? ”

“ नहीं । ”

कुछ देर दोनों ही बने चुप रहे । उसके बाद सुरेन्द्रनाथ बोले—“अच्छ मान लीबिए, वे बपू अगर उसीने मरे हों । ”

“ किसने, लखाने ? ”

“ लखना कौन ? उसके नाम क्या लखना था ? ”

“ हाँ । ”

“ मैं भूल गया था । ठीक है, लखना ही था । लखना और लखना दो पहने थी—क्यों न ? ”

“ हाँ । ”

“ अगर मान लीबिए, अगर उसीने ब बपू मरे हों । ”

“ हाँ मर गई है, उम्मे ! ”

“ हाँ, उसीने । गंग्रके किनारे उसकी चोटी मिलनेस ही उसके मरनेका निश्चय महीं । अब अगर उसीने बपू मरे हों तो । ”

खान्तरण बहुत विह्वल हो उठा । कुछ देर फिर सामने लेबला रहा । फिर बपू बह चीलिन नहीं है । जँटी होती तो पंच लिखनी ।

“ पर मिलनेमें अगर उसे क्या माहूम हो ? ”

“ मैं सख्तानाको जानता हूँ। सख्ताना काम वह कभी न करेगी—धीकित रहकर कभी अपनेको नहीं छिपावेगी। ”

“ वह मरी नहीं थीकित है। उसीने रूप मेरे हैं, और हर मरिने मेजेगी। ”

सख्तानाने अपना कपार दोनों हाथोंसे बचाकर कहा—आपका नाम ?

“ सुरेन्द्रनाथ राय ”

“ निवास ? ”

“ नारायणपुर। ”

“ आपने इरातन बाबू और उनके परिवारकी इतनी चर्चे किम तरह बानी ? ”

“ सख्ताने बताई हैं। ”

“ सख्ताने नहीं बताईं। वह मर चुकी है। ”

“ मरी मरी, मुण्डरूक है। ”

“ वह स्वर्गको गई। ”

सुरेन्द्रनाथ उसे बाया देख सिताकर बोले—सख्तानन्द बाबू, और बाया ठहरिए—

“ मैं बाया हूँ—”

“ और हो बाते—”

“ अगर कभी मैं हो तो कहिएगा—सख्ताने उसे अनेक आशीर्वाद दिये हैं। ”

“ उसकी माताम कहना—”

“ कि स्वयको गई है। ”

सख्तानन्द पीरे पीरे खस गया। फिर नहीं छीय—फिर मही बेठा।

उसके अपने बान पर सुरेन्द्रनाथ बहुत बेतक मीन मिलन्य बैठे रहे। कुछ दिन पहले होय तो सख्तानन्दके यो पत्र देनेर हंसते; किन्तु आज उनकी धौल्यके अनेमें धौल्य सख्तानन्द आये। इसी समय बाहर नौकरने पुकारकर कहा, “ बाबूजी गद्दी तैयार करें ? ”

## १६

बहुत उठ हो गई है, तथापि मासखी अपना कमरमें बैठी 'सीता बनवास' पढ़ रही है। बहुत रोई है, बहुत अस्व पोछे हैं, तो भी पढ़ रही है। आहा ! पुस्तक बहुत अच्छी लगती है—छोड़नेको किसी तरह जोड़ी नहीं चाहता।

इसी समय चारको दरवाजेके पास जाके होकर लूच भेरे गलेसे किसीने पुकारा—लक्ष्मणा !

मासखी मुनकर तिहर उठी। सीता-बनवास पुस्तक हाथसे झूटकर गिर पड़ी।  
“ लक्ष्मणा ! ”

मासखीका दुख मीठरसे खीन उठ्य। खीन कण्ठसे बोली—कीन है !

अबकी ईसरो-ईसरो तुरेन्द्रनाथन मीठर प्रवेश करके फिर पुकारा—लक्ष्मणा !

“ तुम हो ! ”

“ हाँ मैं हूँ। लेकिन अब तुम पकड़ी गई। मामला बाबू मत्स्य बंधे किया था तुमने ! ”

“ क्यों ! ”

“ फिर बही बहू ! ” उसके लूच होटोमें चुपचाप अंकित करके हुए नाम,  
“ मैं अभी सब मुन आया हूँ। लक्ष्मणा भी यहाँ मासखी बन बैठी हा। ”

“ क्यों मुना ! ”

“ कण्ठसेमें ! ”

“ कण्ठसेमें मुसे कीन जानता है ! ”

“ यहाँ बंधक तुम्हें कोई नहीं जानता; वा जानता है, वह हस्तरपुरसे आया था। ”

“ कीन आया था ! ”

“ तुम्हारे सदानन्द बाबा वह नीर खीन देनेके लिए अंधार बाबूके पास आये थे। ”

“ मीठर फेर देमैको ! ”

“ हाँ ! ”

“ लक्ष्मणा ! ”

“ हाँ, नहीं । ”

मासूमि चुन होकर बैठी रही ।

कुछ देर बाद सुरेन्द्रनाथने कहा—सुन क्यों हो ? कासठी क्यों नहीं ?

“ तबदा दादा कैसे है ? ”

“ अच्छे हैं । तुम्हारी मा अन्धरी तरह हैं । उनकी आर्थिक दशा अब बुरी नहीं है, तुम्हारा बान नहीं लेगी । कदाबन्द काबूने उनके दिन पर दिये हैं ? ”

“ मेरा नाम लम्बा है, यह तुमने कैसे जाना ? ”

“ कदाबन्दने ही कहा । वे सब लोग जानते हैं कि तुमने गंगामें डूबकर प्राण दे दिये हैं । ”

मासूमिने चौंल छापी ।

“ लेकिन मैंने कह दिया कि तुम जीवित हो और सुखमें हो । ”

“ यह क्यों कहा ? ”

“ तो क्या बूढ़ क्यों ? तुम जीवित भी हो, और मुझे बान पान्य है, सुखी भी हो—सुखी नहीं हो क्या ? ”

“ हूँ, लेकिन यह क्या मरदानन्दन पूछी थी ? ”

“ नहीं । मैंने आप ही कहा है, और तुम्हारी मास भी वह बात कह उनके लिए कह दिया है । ”

“ यह भी क्या कह दिया कि मैंने बपर भेजे य ? ”

“ हाँ, कह दिया है । ”

‘ तुम मय मरदानाथ करके भाव हो । वह पान्य है । मैंने भूममें बान्य कियेगा । अगर उनके लिए मैं मर ही गइ थी तो फिर क्यों तुमने इममें बापा दाबकर उठे जा दिया कि मैं जीवित हूँ ? ’

सुरेन्द्रनाथ दुःखिया मारम बाग हैंध, फिर बान—बिने तुम पान्य लम्बागी थी वह लनिक भी पान्य नहीं है । दाब कभी वह पान्य गहा लोग बिन्दु उनके ब दिन अब नहीं रहे । उनके हाग तुम हदरपुममें कभी जीवित न होभेदी । तुमने वह अन्नेका पिय रण्य है, तब वह कभी प्रष्ट नहीं बगन ।

“ यह तुमने कैसे जाना ? ”

“ मैंने जाना है । वह मैंने तुम्हारे जीवित करनेकी बातका तुम्हारी मासै कहनेके लिए कहा, तब उम्ने कहा—क्या लम्बाका बान कभी नहीं

सुमदामा मन्त्र हज्जार्की वृक्षानकी पीठठपर पीठ दिग्घब ठमास् पी रहे ब । पैरेमें घूममरे खानन्दको देखकर बोले — ओरे खानन्द, पाठ-पौन दिन इपर तुमको देखा नहीं—कहाँ ब ?

खानन्दने लीटे बिना ही पीछेछि ओर उँगली ठठाकर कहा—वहाँ ।

“कहाँ ? कमुनपाड़ामें ?”

“हूँ ।”

“इतने दिनतक ?”

“हूँ ।”

खानन्द तेजीसे पैर रकटा हुआ चलने लगा ।

सुमदाबाने लीसकर कहा—अबू तरेकी ! क्या करता है, कुछ समाप्त ही नहीं पाया ।

खानन्दने यह जना नहीं, का जून ही नहीं पया । यह सीपा सुमदाके पास आकर ठहरिमत हुआ । नोट सुमदाके पाठ रककर बोला—कुछ पत्र नहीं बच्य ।

सुमदाने कहा—तो बेकार ही कर पाया ।

खानन्द चुन रहा ।

सुमदाने फिर कहा—तो फिर ये रूप लेकर क्या करेगी ?

“आन्धी का रूप है । आन्धी रूप है, रूप लौं दे, न ही रस है । अगर कमी पत्र बच तो लीय दीखिपगा ।”

सबहार होकर सुमदाने नोट ठठाकर बस्त्रमें रख दिया ।

खानन्दबन पूछ हायनबाध कहाँ हैं ?

सुमदाबन पान्धी छोठगी दिग्घकर कहा—तो रहे हैं ।

“कहाँ गय नहीं ?”

“रुप दे, अभी लौकर आप हैं ।”

उठ दिन लुप्पाके समय बौली-पानीक आगार मबर आम सग । सुमदाने बन्दी-बन्दी योमन बना सिवा । हायन बाबू ला-पीकर बसे—कुछ पत्रे देना ।

“आब अब नहीं न जाना । देखो, आकाशमें बरस दिने हुए हैं । पान्धी अगर बोला पानी बरसे तो !”

“बरसेगा तो क्या होगा ?”

“ लौटनेमें क्या होगा । ”

“ कुछ न होगा । मुझे जाना ही होगा । काम है । ”

काम जो था, उस सुमरा कुछ जानती थी । तयारी करने कहा—आव एकादशी है । उसपर नन्दबीबी तक्षिण स्नान है—बेहोष पड़ी है ।

हाथाने कुछ नहीं सुना । देखे ऐसे लोन्कर हाता मिरपर ल्याकर, पैन्ड बग दीनीं सूते हाथमें लेकर, छोटी लमेटर कोंकर पानी और कौचरुमें ही परने निकल पड़े । सुमराने समी लौत छोड़कर कहा—स्नान नसी बना ।

उसने ठीक ही अनुमान किया था । पहलकर रात बीतते ही फिर बोरख पानी बरसने लगा । आठइस राब रातख सुमराका थोड़ा-थोड़ा बुन्गार हो आता था, किन्तु यह बन किसीम बहना तो बूद, बर एक तरहेसे अपनेसे मी ठियानी थी । रातके बर बाड़ा स्नान बुन्गार आता था तमी ठठे उसका खपाव आता था ।

पानी बरसनेके माप ही माप उसे बाड़ा बनने लगा । हाथके पल उसने छो पाया, बही लौन्कर भरन ऊपर बाउ लिया । बहूा या गय सुमराकी अन्नि सरहने लयी । पानी तब भी बरस रहा था, लेकिन उनका बोर कम हो गया था । थके हुए मुल शरीरमें तन्नाबी सुमारीमें सुमराको जान पड़ा, जैसे कोई बरखानेके थिराहोमें जो थोड़ी-सी गरिब है, उनमें हाथ हाथकर मीनता लौइस ताल बामनेकी बोरिण कर रहा है । इसठ बाद ही तबले किनाइ गुल गव । परने भौकर बीरक बन रहा था । सुमराने अन्नि लोन्कर तमी प्रफाथमें देण, एक आदमी कोठरिमें गुल रहा है । उनके हाथमें एक बौनकी मीठी लाठी है । गर शरीरमें स्वाही पुती है और उसके ऊपर लपर गुनेकी थिरकिरी है ।

सुमरा निहालर निहा ठठी—अरे—यह कौन है ।

उस आदमीने पमडानेक मारमें कहा—सुर ।

उस बज्र-गामीर लरम रहलर सुनदान अन्नि देर ली ।

उस आदमीने दो बार ठक-ठक बमीनार लठी पणकर सुमराकी हाथ्याके पान आरग कहा—अरने दलकी पामी है ।

एव मीय और मारी था । पणकर सुननम लला था, बर आदमी बान ब्राकर पडा बरने ऐनी मीठी आदाममें बन रहा है ।



शुभदा कुछ नहीं बोली ।

उठ आदमीने फिर बैस ही स्वयं और एक बार फर्शपर म्हाठी ठोककर कहा—यामी बे बे, नहीं तो यत्न पोछकर मार डालूँगा ।

अच्छी शुभदा उठकर बैस गई । ठकियेके नीचेसे चामिबोका गुप्ता निकलकर उठ आदमीके सामने फेंक दिया और धीरे धीरे शान्त भावसे कहा—देखो, मेरे बड़े बन्तमें बाहिनी दरबन्दी दरबन्दी एक पचाल रूपयेका नोट रखा है, वही ले लो । बाई तरफ विस्वनाथबीर प्रवार रखा है, उसमें हाथ न लगाओ ।

बैस शान्त भावसे शुभदाने यह बात कही, उससे वह नहीं जान पड़ता था कि अब उसके मनमें रची भर भी कोई भय है ।

बूना-स्वामी सम्राजे हुए वह आदमी चामी लेकर बड़े बस्तके पास गया और उस लोभ डाल्य । बाई तरफ उसने विस्कुल हाथ नहीं डाला । बाहिनी औरकी दरबन्दी पचास रूपयेका वह नोट लेकर उसने टैयें लीया । शुभदाके कहनेके अनुसार उसने बैसे आदमीसे उस बस्तको लोभ और बाहिनी औरकी दरबन्दी बना लगा लिया, उससे जान पड़ता है, बैसे यह सब उमर अच्छी तरह जाना-पहचाना था ।

यह सब जाने लग्य, तब शुभदाने एक लम्बी छील लेकर धीरे धीरे कहा—नोटमें शाब्द नाम लिख्य है, नम्बर पढ़े हैं । यह शाब्दनाम सुनाना ।

०३२००३  
 { स मा स }  
 ०३२००३

# सुलभ साहित्यमाला

सन्ने सुम्हार, सली और उत्कृष्ट प्रथमप्रख्य ।

[ पू० प्रयेक भागका १॥ ) और प्रयेककी पू० स० १६० के ल्यमग ]

## शरत् साहित्य

इस प्रथमप्रख्यमें भारतके सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-कहानी-लेखक स्वर्गीय शरत्चन्द्र चट्टोपाध्यायके सम्पूर्ण साहित्यमें अतिशय सुन्दर और प्रामाणिक अनुवाद प्रकाशित किये गये हैं । इनमें मूलकी शैली और भावोंसे सब तरहसे अनुपम रक्ता गया है और इनमें पाठकोंको मूल प्रयोगके बिलकुल आनन्द आता है ।

पहला भाग—सुमति ( रामर सुमति ), पञ्चनिर्देश और अनुपमाका प्रेम कहानियाँ । बालीनाथ, सयु उपन्यास ।

दूसरा भाग—भयङ्करमें आलोक, कहानी । स्वामी और वैकुण्ठका दान-पत्र, दो छोटे उपन्यास ।

तीसरा भाग—तसवीर ( छवि ) और दृष-शृणु, कहानिया । स्वप्ननाथ उपन्यास ।

चौथा भाग—धीराम्त प्रथम पत्र ।

पाँचवाँ भाग—बामदनकी घेटी, महोदय उपन्यास । प्रकाश और छाया बिलामी, एकादशी बैशाखी और वाक्यस्मृति, कहानियाँ ।

छठा भाग—भीषान्त द्वितीय पत्र ।

सातवाँ भाग—भीषान्त तृतीय पत्र ।

आठवाँ भाग—बिम्बोजा शक्य, बोझा, मन्दिर मुक्तमेकादशीका, हरिहरण हरिहरमो और अमागिनीका स्वर्ग, ये लल कहानियाँ हैं ।

नववाँ भाग—पाइती नाटक और निष्कृति ( पुत्रगत ) कहानी ।

दसवाँ भाग—देवदास और बड़ी पहिल ( बड़ दीठ ) नामके दो महाने उपन्यास ।

ग्यारहवाँ भाग—पञ्चदशती ( पञ्चन मेघप ) और मगुली पहिल ( मेघ दीठ ), उपन्यास ।

बारावाँ भाग—रमा नाटक और परिणीता छेय उपन्यास ।

तेरहवाँ-चौदवाँ भाग—पचके दाबेशार ( अविधर ), अन्तिकारी उपन्यास ।

पन्द्रहवों भाग—अनुराधा, महेन्द्र और पारस, कहानियों और नारीका मूल्य, ८८ दृष्टान्त विस्तृत निरूपण ।

सोछह सत्रहवों भाग—शरणा कर्मका विषय-संग्रह, गृहदाह, उपन्यास ।

अठारहवों भाग—दत्ता सामाजिक उपन्यास ।

उन्नीसवों भाग—प्राचीण समाज 'पत्नी समाज' नामक श्रेष्ठ उपन्यास ।

बीसवों इक्कीसवों भाग—शेष प्रश्न । शरणा कर्मका अन्तिम और श्रेष्ठ उपन्यास ।

बाईसवों भाग—श्रीकृष्णका कथुपर्व ।

तेईस-बोबीसवों भाग—विमलदास उपन्यास, तापमे 'सती' उच्च कवित्री कहानी और तदन्तर्गत विद्रोह ( निरूपण ) ।

पच्चीसवों भाग—शरणा-पञ्चावली । शरणा कर्मके सिद्धे लीले अनेक पत्रिका संग्रह ।

छत्तीसवों भाग—आगरा, भागामी काम, भला पुरा, आनेकी आशाम और रसप्रकाश, अर्पण रचनाएँ । तीन उपन्यासोंके और दो कहानिका संग्रह जान पड़त है ।

सत्ताईस अट्ठाईस उन्नीसवों भाग—परिचरहीन श्रेष्ठ उपन्यासोंमेंसे अन्ततम ।

तीसवों भाग—विराज कर्तु और कथपत्रकी कहानियाँ । अनेक कर्तु एक ग्राहस्य उपन्यास है । कथपत्रकी कहानियों बड़ी ही रोचक और उली मानवीय कथाके अन्तर्गत ही शरणा प्रसिद्ध है ।

इकनासवों भाग——दारु-निबन्धपाठनी । साहित्य और स्वदेश सम्बन्धी सुने हुए ११ निरूपण संग्रह ।

बत्तास तेतीसवों भाग—देव-गायना और नया विधान उपन्यास ।

बीतीस पैंतीसवों भाग—शेष परिचय छान कर्तुका अन्तिम उपन्यास, किन भीनी पचावती देवीने अनेक पूर्ण किया ।

छत्तीसवों भाग—शुभदा । शरणा कर्मका यह है तो कर्तु पाठ सिद्धा शुभा उपन्यास, पल्लु प्रकाशित शुभा है उनही मूल्यके उपरान्त । वे इसे मद्रासके परिचरहीन करना चाहते थे, पर नहीं कर सके ।

